



Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

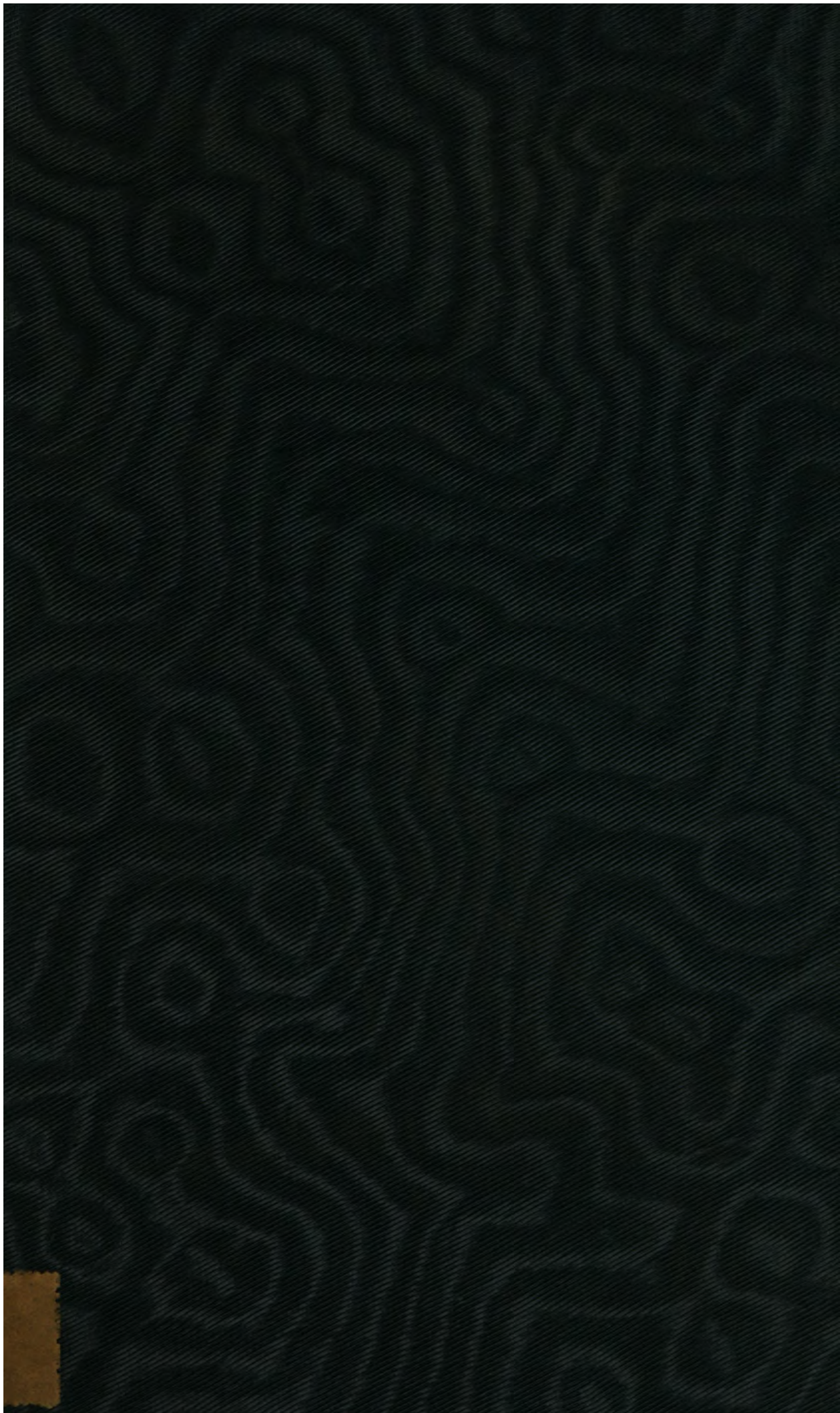
This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

<http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks>



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



4.5.3. Viṣṇu 6

5.2. 4821

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Ndwul Kishore.

4021

मिथिलामाहात्म्यसटीक

जिस की यात्रा और परिक्रमा करने से वह फल होता है जो काशी प्रयाग नेमिषारण्य कुरुक्षेत्र अयोध्या हरद्वार ब्रह्मावर्त गयाजी बड़ीनारायण में रहने और सब पृथ्वी की परिक्रमा करने और लसगो और मैकड़ों गाव और रत्नों के खान और सुवर्ण के पहाड़ दान करने और सवत रह की यज्ञ करने और सदा वेद पढ़ने और कच्छ और चान्दायणादि कठिन कठिन व्रत करने और केवल पत्तियां चबाकर या केवल जल पीकर या कुछ न भोजन करके रहने और पंचाग्नि और जलशयन करने और बरसात में सैदान में रहने और ऊर्ध्वबाहू रखने और अशय्या पृथ्वी पर रहने और बिना वस्त्र के रहने से फल होता है

उसको

राजकुमार बाबू देवनन्दन सिंह मालिक राज शिवहर जिला ति. तने परोप-

कारकी दृष्टि से भाषा में उल्था किया

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया

संवत् २६४१ वि०

मिथलामाहात्म्य

यिने जंग पुर का हात्म

सं. १३३३

जसकी जात्रा और परिक्रमा और बुदबास अखिर करने से वह फल होता है जो काशी प्रयाग नेमिषारण्य कुरुक्षेत्र अयोध्या हरद्वार ब्रह्मावर्त गयाजी बड़ीनारायण में रहने और सब पृथ्वी की परिक्रमा करने और लसगो और मैकड़ों गाव और रत्नों के खान और सुवर्ण के पहाड़ दान करने और सवत रह की यज्ञ करने और सदा वेद पढ़ने और कच्छ और चान्दायणादि कठिन कठिन व्रत करने और केवल पत्तियां चबाकर या केवल जल पीकर या कुछ न भोजन करके रहने और पंचाग्नि और जलशयन करने और बरसात में सैदान में रहने और ऊर्ध्वबाहू रखने और अशय्या पृथ्वी पर रहने और बिना वस्त्र के रहने से फल होता है

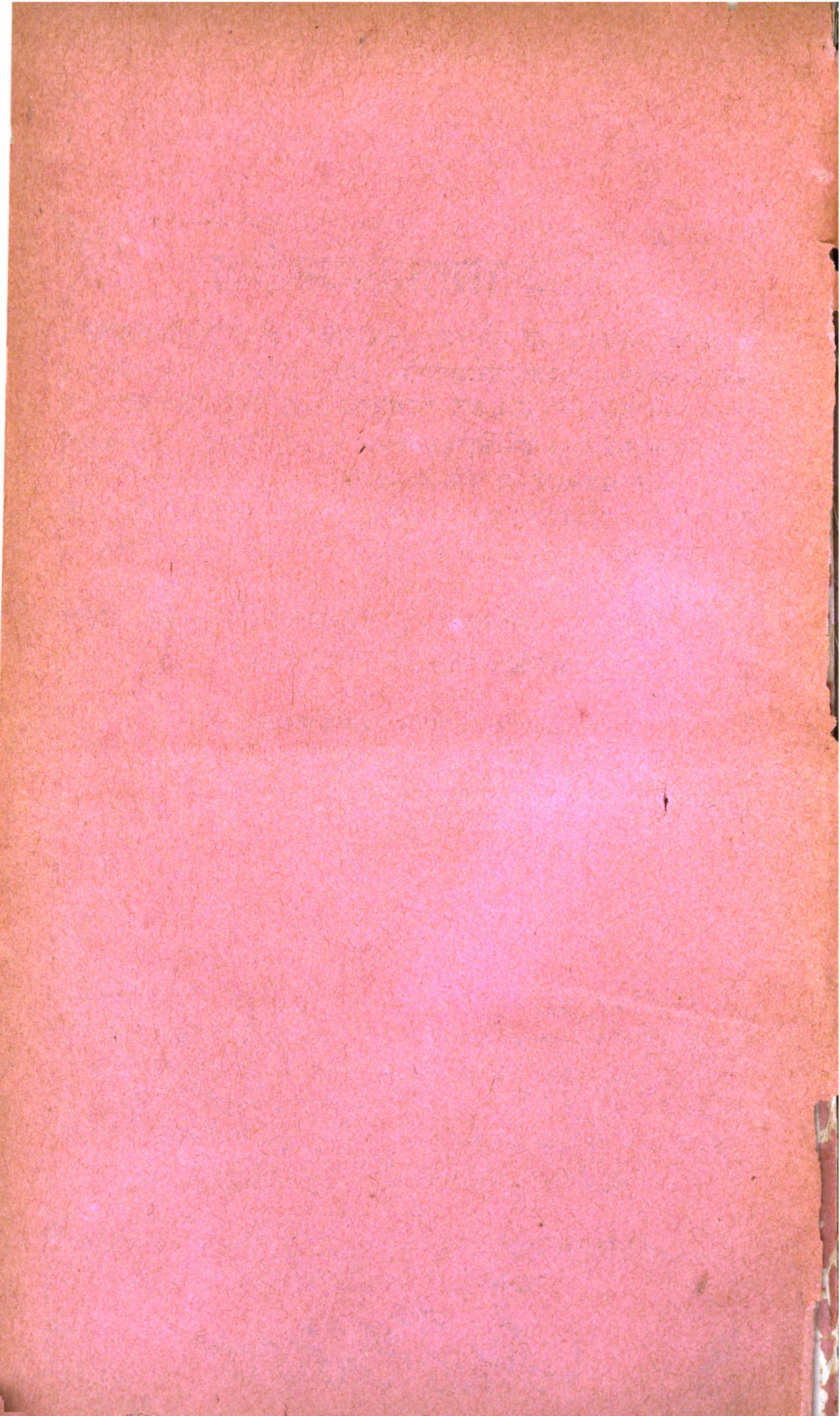
राजकार बाबू देवनन्दन सिंह मालिक राज शिवहर जिला ति. तने परोप-

कारकी दृष्टि से भाषा में उल्था किया

मिथलामाहात्म्य

यिने जंग पुर का हात्म

सं. १३३३



ओं

श्रीगणेशायनमः

अथ भूमिका

मूल- नाद्यापीदं मिथिलामाहात्म्यं भुव्यंकितं के
नापि । तद्भाषातिलकाढ्यं कृत्वेच्छामि मुद्रितं
भाषि ॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥

शेहा- मिथिलामाहातमतिलककियोनमुद्रितकाहु
यातेमैभाषारच्योसतिलकमुद्रितचाहु । १।

टीका- अब तक किसीने इस मिथिला माहात्म्य का भाषा तिलक
जिस प्रकार अन्य अन्य तीर्थों का छपकर प्रचलित हुआ है
न किया। इस वास्ते भाषा तिलक सहित मूल छपवाने की
इच्छा करके ॥१॥

तस्मिन्

वाच्यं भवति

१- अब तक किसीने इस माहात्म्य को जो संस्कृत زبان میں تھا کھا
میں ترجمہ کر کے جس طرح اور اور تیر تھو نکا ماہنامہ چھپ کر مشہور ہوا ہے
نکلیا اس لیے اس کے مشہور ہونے کی خواہش سے

मू. शिवाम्बिकाधीशगणेशभानूनहनमस्कृत्य
परांमृतः नरोक्तिनः कर्तुमिदंमुदे-
स्तात्सतांसदीकंशिशुबोधनाय ॥ २ ॥

दो. शिवदुर्गाहरिगजवदनसूर्यहिकरिपरिनाम।
मिथिलामाहातमतिलकभाषास्वोसुकास।२।

टी. श्री महादेव और दुर्गा और गणेश और सूर्य और वि-
ष्णु इत्यादि पंच देवता को नमस्कार करके अल्प बुद्धि लो-
गों के प्रबोध के वास्ते मिथिला माहात्म्य का तिलक भा-
षा बार्त्तिक और दोहा में ॥२॥

۲۔ شری ماد یو اور ڈرگا اور گنیش اور سورج اور لیٹن وغیرہ پنج دیوتا کو
نمسکار کر کے ناواقفوں بلکہ خاص و عام کے واقف ہونیکے واسطے اس
اس متھلا ماہاتم کا ترجمہ دونا اور بجا شامین -

मू. श्रीमद्भ्राजाधिराजो नृपवरपटलैरुग्रसेनो
नुतोभूत् श्रीकृष्णस्तस्यभूपश्चिवहर
नगराधीश आसीत्कुलेषु तत्सूनुर्दुष्ट
सङ्घेद्यमिदलदमनोभूमिपस्तम्बभूव
तस्यौत्रोदेवनन्दस्तिलकमिदमलंभाष
याहं करोमि ॥ ३ ॥

दो. शिवहरनगराधीशनृपश्रीकृष्णजनृपराज।
दुष्टदमनसुतसुवनहौंभाषाकरौंसुकाज।३।

टी. श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराज उग्रसेन सिंह

बहादुर के बंश में श्रीमन्महाराज रुष्णासिंह बहादुर के सु-
त श्री महाराज दुष्ट दमन सिंह बहादुर को पौत्र में राजकु-
मार बाबू देव नन्दन सिंह मालिक शिवहर जिले नि-
रहुत का करना है ॥३॥

۳- مین راجہ مار بابو دیونندن سنگھ ولد راجہ مار بابو چند نندن سنگھ خلف راجہ ڈیوش سنگھ
بادر ساکن و مالک ریاست شیوہر ضلع ترمہت و خاندان سے مہاراجا و مہراج
اگر سین سنگھ بادر کے ہون کر تا ہوں -

मू. शिवहराभिधग्रामोमिथिलादेशमध्यगः।वा-
सोस्तितत्रमिथिलामाहात्म्येऽतोरुचिर्मम।४।
दो. मिथिलादेशसुमध्यमेशिवहरपुरसुरवराशि।ता-
सुवासमिथिलापुरीमहतकहौपरकाशि ॥४॥

श्री. क्योंकि यह राज्यधानी शिवहर मिथिला देश के मध्य
में है इसवास्ते इस मिथिला माहात्म्य को मैं विशेषप्र-
काशित करना चाहता हूँ ॥४॥

۴- کیونکہ یہ راجدھانی شیوہر متھلا دیش کے دریاں مین واقع ہے
! لیے اس گرنہ قدیم متھلا نہا تم کو مشتہر کرنا چاہتا ہوں -

मू. नमो छन्दो ज्ञानं च पद विशेषस्य घटना
नवा काव्येशक्तिर्नहिवहुसुशास्त्रस्य पठनं।
भवानीपादाब्जस्मरणरतिरेवास्ति सुगति
स्तदेषा क्षन्तव्या बुधजनवरैर्मै चप-
लता ॥५॥

श्रीगणेशाय नमः

अथ मिथिला माहात्म्यम्

میتھلا مہاتم

सू. ॥ मैत्रेय उवाच ॥ श्रुतं त्वन्नो मया सर्वं रहस्यं जानुकीपतेः । अयोध्यायाश्च माहात्म्यं तत्र यात्राफलं तथा ॥ १ ॥
रहस्यं सुनेतु वचनसे सीतापतिके सर्व । अवधमहात्म्यं पुनि गमनफलतामैः अनुपूर्व ॥ १ ॥

टी. श्री मैत्रेय मुनि कहते हैं कि हे सर्व रहस्यज्ञ मुनीश्वर पाराशरजी आप से श्री जानुकीपति श्री रामचन्द्रजीके संपूर्ण रहस्य और अयोध्यापुरी का माहात्म्य और उसी प्रकार अयोध्यापुरी में यात्रा करने का फल हम सुन चुके ॥ १ ॥

پہلے پڑھیں پیران کا تیسرا بیان ادھی

۱۔ شری میترے من کہتے ہیں کہ ہے سب دہشیہ کے جانتے والے میں شری پیران سے آپ سے شری جانکی جی کے پت شری رام چند جی کے سب دہشیہ اور اجو دھی پیری کا مہاتم اور وہاں جانیکا پھل تو مفصل میں سن چکا۔

सू. इदानीं श्रोतुमिच्छामि रामतत्त्वविवेचनं । जा-

नक्या तत्त्वसर्वस्वयथावेदेषु वर्णितं ॥ २ ॥
 दो. अब तु निवेकी रुचि हमें घुबरत त्वसंयुक्त ।
 सिया तत्त्वसर्वस्वपुनियथावेदके उक्त ॥ २ ॥
 टी. अब श्री रामचन्द्र और श्री जानुकी जी के तत्व का वि-
 चार जो वेद ने वर्णन किया है वह सुना चाहता हूँ ॥ २ ॥
 ४ - اب شری رام چندر اور شری جانکی جی کے تئو کا حال جس طرح بیہمین
 لکھا ہو آپ سے سنا چاہتا ہوں -

मू. पराशर उवाच ॥ सीतारामात्मकं सर्व्वं
 सर्व्वकारणकारणं । अन्यैरेकतातत्त्वं
 गुणतीरूपतोपि च ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 दो. सियाराममयतत्वजोसकलहेतुकेहेतु । युगु-
 लएकतातत्वसोगुणअरुरूपसमेतु ॥ ३ ॥
 टी. पराशर जी बोले कि हे मुनि श्री सीताराम मय जो हैं त-
 त्व वह सब कारणों का कारण है और रूप और गुण दोनों
 की जो ऐक्यता है उसी को तत्व कहते हैं ॥ ३ ॥
 ३ - پرآشرف جی کہتے ہیں کہ ہے من شری سیتارام میں جو تئو ہے وہ سب کارنون کا
 کارن ہی اور روپ اور گن سے جو دونوں ہو روپ میں کیتائی ہی اسیکو تئو کہتے ہیں -

मू. तत्पदं रामद्वत्युक्तं जानकीभावस्वरूपिणी । त-
 यैरेक्यं भवेत्तत्त्वं इति वेदविदो विदुः ॥ ४ ॥
 दो. तत्स्वरूपश्रीरामजूत्वकेभावसियरूप । या-
 विधिदुहुकीएक्यजोसोईतत्वअनूप ॥ ४ ॥

श्री. तत्व ऐसा इस पद में तत् पद से श्री रामजू समनजा और त्व पद का अर्थ है भाव उसको श्री जानुकीजी समनजा इसी प्रकार दोनों की ऐक्यता जो है उसीको वेद जाननेवाले लोग तत्व कहते हैं ॥ ४ ॥

۴۔ تھو جو لفظی ہیں تھ سے شری رامچندرا اور تھو کے معنی بھیاو ہیں اس سے شری جاکی جی سمجھنا چکا، اسی یکتائی کو دونوں کے بیچ والے تھو کہتے ہیں۔

मू. तत्वतोमंत्रतोवापिगुणतरूपतोपिवा। नष्ट-
यगभावनायस्यसन्नेयोभावकोत्तमः ॥ ५ ॥

श्री. तत्वमंत्रतेरूपतेऽथवागुणतेनाहि। भिन्न-
भावजहं जानियेभावक उत्तमताहि ॥ ५ ॥

श्री. और तत्व ते और मन्त्र ते और रूप ते अथवा गुण ते भी जिसकी भावना एथरु नहीं है उसी को उत्तमभावक कहते हैं ५

۵۔ اور تھو سے اور منتر سے اور رُوپ سے اور گُن سے جسکی بھانا الگ نہیں ہے اسیکو اُتھم بھاوک کہتے ہیں۔

मू. एवमेवमथाएष्टोवशिष्टोमांसमादिशत्। य-
थातंपन्नजः प्राह तत्समासेनमिश्रणु ॥ ६ ॥

श्री. इहमैत्रियवशिष्टप्रतिपूष्यो कहिमुनिमोहि।
उहर्हियथाव्रसाकह्योसकलसुनावौतोहि ॥ ६ ॥

श्री. इस प्रसंग को मैंने वशिष्ट मुनि से पूछा था और वशिष्टजी ने जिस प्रकार श्री ब्रह्माजी के मुख से सुनकर मुन से कहा था वह सब मैं कहता हूँ सुनिये ॥ ६ ॥

۶۔ اس بات کو میں نے بشیشٹھ من سے پوچھا تھا انھوں نے جطرح برہما جی سے شکر
مجھے کہا تھا وہی اس وقت میں تم سے کہتا ہوں سنو۔

مू. रामन्नमैथिलीभिन्नामैथिल्यानरघूत्तमः । द्वयो

रैक्यं विजानीयात्तत्त्वतो नैव रूपतः ॥ ७ ॥

दो. सीताभिन्नरामतेसियतेभिन्नराम। युगु

ल एक लखु तत्वतेभिन्नरूप अनुपाम ॥ ८ ॥

टी. श्री रामचन्द्रजू سے श्री जानकीजू और श्री जानकीजू से

श्री रामचन्द्रजू कदाचिद भिन्न नहीं हैं दोनों को तत्व क-

रि के एक ही जानौ केवल रूप देखने में दो हैं ॥ ७ ॥

۷۔ شری رامچندرجی سے شری جانکی جی۔ اور شری جانکی جی سے شری رامچندرجی

کسی طرح جدا نہیں ہیں تو کئی رو سے دونوں ایک ہی ہیں صرف ظاہر ا

رُوب دیکھنے میں دو ہیں۔

मू. द्वयोर्नित्यं द्विधा रूपं तत्त्वतो नित्यमेकता । रा

ममंत्रे स्थिता सीता सीतामंत्रे रघूत्तमः ॥ ८ ॥

दो. दौतन नित्यानन्द है युगुल तत्व इक साथ । रा

ममंत्र में सिय सदा सियामंत्र रघुनाथ ॥ ८ ॥

टी. दोनों स्वरूप नित्य अर्थात् अविनाशी हैं और देख-

ने में तो दो हैं परन्तु तत्व से दोनों एक ही हैं और राम म-

न्त्र में सीता और सीता मन्त्र में राम सदा निवास करते हैं ॥ ८ ॥

۸۔ پھر دونوں رُوب قدیم و لازوال ہیں اگرچہ دیکھنے میں دو ہیں لیکن تو کے

رُوب سے ایک ہیں رام منتر میں سیتا جی اور سیتا منتر میں رام جی ہمیشہ رہتے ہیں۔

م۔ یतोवर्णात्मकोरामसीतामात्रात्मिकाभवेत्
यदाशब्दात्मकोरामःसीताशब्दार्थरूपिणी६

मू. वर्णरूपयदिरामकहि सीता मात्रारूप। शब्दरा-
मयदिजानिये सीता अर्थ अनूप ॥ ६ ॥ ६ ॥

टी. जो वर्ण रूप रामचन्द्रजी हैं तो मात्रा रूप श्री जानकी
जी हैं और जो घटादि शब्द के समान श्री रामचन्द्रजी हैं
तो घटादि शब्द का जो अर्थ है उस अर्थ के समान श्री जा-
नकीजी को समझे ॥ ६ ॥

۹. اگر راجندر جی حرف ہیں تو جاگلی جی ان حرفوں کے اعراب ہیں اور اگر راجندر
جی لفظ ہیں تو جاگلی جی انکے معنی ہیں۔

मू. यद्वावर्णाभवेत्सीतारामःशब्दार्थरूपवान्। ए-
वमेवविधानेनयथासूर्यप्रभास्थिता ॥ १० ॥

टी. यदिवासीतावर्णमयशब्दअर्थभगवान्। ताको
यहदृष्टान्तहैसूर्यप्रकाशसमान् ॥ १० ॥

टी. और वर्ण रूप श्री जानकी जी हैं तो अर्थ रूप श्री रा-
म चन्द्र जी हैं जिस प्रकार सूर्य माडल में प्रभा रहती है

उसी प्रकार श्री रामचन्द्र जी में श्री जानकीजी रहती हैं ॥

۱۰. اور اگر شری جاگلی جی لفظ ہیں تو راجندر جی انکے معنی ہیں جس طرح آفتاب میں
روشنی رہتی ہے اسی طرح راجندر جی میں جاگلی جی رہتی ہیں۔

मू. रत्नेमूल्यंनृपेःकीर्त्तिलियारामेस्थितानुसा ।
जानक्यांराघवोप्येवमद्वैधेनसदास्थिता ॥ ११ ॥

دو۔ دامرتنمےنृपतिमें कीरति सियमधिराम । य-
था तथा सियरामको भेदरहित विश्राम ॥ ११ ॥

دو۔ جیسا کہ رتن میں مول اور راجا میں کیرتی رہتی ہے
وہی प्रकार रामचन्द्रजी में सीतानी रहती हैं और इसी प्रकार
रामचन्द्रजी अर्थात् दोनों शरीर में दोनों सदा विराजते हैं ॥ ११ ॥
۱۱۔ حضرت تن میں مول اور راجا میں کیرتی رہتی ہیں اور جیسا کہ
جنگلی جی میں رامچندرجی رہتے ہیں دونوں ایک دوسرے میں موجود رہتے ہیں۔

मू. एवमैक्यं बयोरेव वेदज्ञैः परिनिश्चितं । यथायो-
ध्यापुरी नित्या मिथिला पितया स्मृता ॥ १२ ॥

دو۔ याचिधिदुहुकी एक तावेदक है परमानु । अ-
वधयथाभुवि नित्य है तसपुनि मिथिला जानु १२

دو۔ इसी कारण वेद के जानने वाले लोग रामचन्द्रजी और
जानकी जी के स्वरूप को एक ही करके मानते हैं और जि-
स प्रकार अवधपुरी अविनाशी है उसी प्रकार मिथिला
पुरी को भी अविनाशी कहते हैं ॥ १२ ॥

۱۲۔ اسی سبب سے بید کے جاننے والے لوگ رام اور جانکی کے سروپ کو ایک
ہی سمجھتے ہیں اور جیسا کہ وجود ہیا پری قدیم اور لازوال ہے اسی طرح
میتھلا پری کو بھی قدیم و لازوال کہتے ہیں۔

मू. सर्वैश्वर्यगुणैर्वापि नायोध्यातः पथगमता ।
अयोध्यकायथानित्याः सर्वमंगलरूपिणाः ॥ १३ ॥

दो. धनधान्यादिकगुणजितेनित्यापरमअनूप ।

अवधपुरीवासीयथासबविधिमंगलरूप॥१३॥

टी. सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य और गुणों में किसी प्रकार अवधसे मिथिला पृथक् नहीं जानी जाती है और जिस प्रकार अवध बासी लोग नित्य और मंगल रूप हैं ॥१३॥

۱۳۔ پھر دولت اور صفوں میں کی طرح اجدھیا سے تھلہ جہ اور کم نہیں ہے اور جس طرح اجدھیا باسی لوگ آبناشی اور منگل رُوب ہیں۔

मू. तथैवमैथिलाःसर्वेसर्वमंगलविग्रहाः। नित्यभूतास्सदाशुदाःपुनरावृत्तिवर्जिताः१४।

टी. मिथिलापुरवासीसदा मंगलरूपप्रवीण। पावननित्यानन्दसवआवागमनविहीन॥१४॥

टी. उसी प्रकार मिथिला बासी लोग भी सम्पूर्ण मंगल रूप हैं और नित्य और पवित्र और जरा मरण से रहित हैं ॥१४॥

۱۴۔ اسی طرح تھلہ کے رہنے والے لوگ بھی منگل رُوب اور آبناشی اور پوٹر اور آواگون سے رہت ہیں۔

मू. नित्यानन्दरसास्वादरूपिणोरामपार्षदाः।

श्रीरामराधकानाञ्चनिवासार्थविशेषतः१५।

टी. नित्यानन्दरसास्वादिरामपार्षदवेष। राधकयतरघुनाथकेवासस्थानविशेष॥ १५ ॥

टी. और नित्यानन्द रूपजो रस है उसी को ये लोग पान करते हैं और ये लोग श्री रामचन्द्रजी के पार्श्व में रहने वाले हैं और श्री रामचन्द्रजी के आराधक लोगो के रहने

के वास्ते यह मिथिला देश निर्मित है ॥१५॥
 १५- और ये लोग हमेशा आँद कारस प्या करते हैं और रामचन्द्र रघु के पास
 के रहने वाले हैं और ये महाद्वेष अखिन लोगों के रहने के लिये
 बनाये जो रामचन्द्र रघु का आदहन करते हैं -

मू. मिथिला सर्वथा शस्ता यथा यो ध्यातथा हि सः निः-

कामानां सकामानामज्ञानां ज्ञानशालिनां ॥१६॥

दो. मिथिला सदा प्रशस्त है यथा अवध रजधानि निः-

कामना सकामन अज्ञानी गुणस्वानि ॥१६॥

टी. और यह मिथिला पुरी सर्वथा प्रशस्त और अवध के
 समान है और जिसको नाना प्रकार की कामना है अथवा
 जो कामना से रहित अर्थात् ज्ञानी हैं अथवा अज्ञानी हैं ॥१६॥
 १५- और ये महाद्वेषी हमेशा अफ़सल और आदह के बराबर हैं और अगर कौली किसी
 मक़द से या बला मक़द या जान कर या अजान -

मू. कथञ्चित्तत्र वेदास उद्धाराय भवेदलं । तत्र या-

त्रामहापुण्या सर्वकामसमृद्धिनी ॥१७॥

दो. कौनेहु विधिमिथिलावसै सहसा करै उधार । या-

त्रातितके पुण्यमयि सकल कामदातार ॥१७॥

टी. जो किसी प्रकार प्राणी मिथिला पुरी में निवास करे तो
 वह और लोगों का उद्धार करने में समर्थ होता है और मि-
 थिला पुरी की यात्रा महा पुण्य दायक है और सब कामना
 देने की सामर्थ्य रखती है ॥१७॥

۱۷۔ کی طرح متحلا تری میں رہنا اختیار کرے تو اسکو دوسروں کے اٹھا کرنے میں بھی قدرت حاصل ہو جاتی ہے اور متحلا تری کی جاترا کرنے والے کی سب ترادین حاصل ہوتی ہیں۔

سू. एवमहस्यं तत्त्वस्य वर्णयन्ति मनीषिणः । द्वयो-
र्नाम द्वयो र्धो म द्वयोस्तत्त्वं द्वयोर्ब्रतं ॥ १८ ॥

दो. तथानाम अरुधाम युग युगुल तत्व ब्रत एक । यु-
ग आराधन समगिनो देव सुवन सविवेक । १८ ।

टी. इस प्रकार रहस्य तत्व के परिचित लोग वर्णन करते हैं और श्री राम जानकी जी के नाम और स्थान और तत्व और ब्रत । १८ ।
۱۸۔ یہی بات رمیس تو کے جاننے والوں نے بھی کہی ہے اور شری رام اور شری جانکی جی کا نام اور استھان اور توتو اور برت ۔

सू. द्वयोराराधनञ्चैकं द्वयोः प्रीतिकरं समं । द्वितिये
षान्चेद्भावस्तेन राः पापभागिनः ॥ १९ ॥ १९ ॥

दो. युग आराधन एक अरु युगुल प्रीति दूकमानु ।
असमावनान जाहिके ते हि अघभागी जानु । १९ ।

टी. और दोनों रूप का आराधन एक है और वे दोनों प्रीतिकरने में तुल्य हैं यह ज्ञान जिनको नहीं है वही लोग पाप के भोग करने वाले हैं ॥ १९ ॥

۱۹۔ اور دونوں روپ کا آرا دھن اور پریت ایک ہی ہے اس بات کا حکو گیان نہیں ہے وہی پاپی ہے ۔

सू. संसारेषु निमज्जन्ते स्वकर्मपरिवञ्चिताः । विशिष्टे

नसमाख्यातं त्वत्प्रीत्या वर्णितं मया ॥ २० ॥
 दो. सो जगत्त्रितकर्मनिजविषयमग्नहैजात। मुनि
 वशिष्ठके वचनतव प्रीति सुनाये उतात ॥ २० ॥
 टी. और वही मनुष्य इस संसार में अपने कर्म से बन्धित
 होकर विषय में डूबा हुआ है इतना कहकर पराशरजीवो
 ले कि हे मुनि वशिष्ठजी ने जो मिथिला माहात्म्य मुझसे क-
 हा था उसको मैंने आपकी प्रीति से वर्णित किया है ॥ २० ॥
 २० - اور وہی اس سنسار میں اپنے کرم سے غمگین ہو کر زوال کے دریا میں
 ڈوبا رہتا ہے اتنا کہ کر پر اشرفی بولے کہ ہے میں مجھ سے بششہ جی نے جس طرح
 مٹھلا مہاتم کو کہا تھا وہ میں نے آپ کو کہ سنایا -

मू. सिद्धान्तवीजपरमं शृणुष्वैकमना मुने । सर्वा-
 धारं जगन्मूलं सर्वकारणकारणम् ॥ २१ ॥
 दो. सबसिद्धान्तको वीजयह सुनुय कचित्तमुनीश । स-
 र्वधारं जगमूलजो कारणकारणद्वेष ॥ २१ ॥ २१ ॥
 टी. हे मुनि अब मैं सिद्धान्त का परस्पर कारण कहता हूँ ए-
 क चित्त होकर सुनिये कि जो सबका आधार और जगत का
 कारण है उस कारण का भी यह कारण अर्थात् हेतु है ॥ २१ ॥
 २१ - ہے میں اب میں سیدھانت کا اصل اصول بیان کرتا ہوں جی لگا کر
 سنو یہ سب کے ادھار اور تمام جگت کے کارون کے کارن ہیں -
 मू. वेदवेदान्तसिद्धान्तयत्तत्र एव रूपकं । अना-
 दिमध्यनिधनं व्यपदेश्य गुणैः परं ॥ २२ ॥ २२ ॥

री. और सत्ता मात्र अर्थात् अंशवान् हैं और परब्रह्म और सत् असत् अर्थात् स्थूल और सूक्ष्म के परे हैं यह बात विद्यावान् महात्मालोग अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार ॥ २४ ॥
 ۲۴ - اورست اور است اور استھول اور سوکشم سے الگ اور برتر ہوں اور انش و ان ہین یہ بات بڑیاوان مہاتما لوگ اپنی اپنی ہڈی کے موافق -

सू. निरूपयन्ति यत्किञ्चित्स्वस्य ग्रन्थेषु तात्विकाः
 तस्याप्यस्य स्वरूपस्य निर्गुणस्य परात्मनः ॥ २५ ॥
 दो. तात्विकनिजनिजग्रन्थमें निश्चित करिकह जोइ ।
 निखिलरूपगुणतेरहितपरमात्मा जो सोइ ॥ २५ ॥

री. तत्व के जानने वालों ने अपने २ ग्रन्थों में जिस निर्गुण को निरूपणा किया है उस निखिल रूपी निर्गुण परमात्मा का ॥ २५ ॥
 ۲۵ - تو کے جاننے والے لوگوں نے اپنے اپنے ग्रन्थوں میں جس निर्गुण پر
 کو قائم کیا ہے اسی بزرگ پر مانتا ہے۔

सू. प्रभावात्कारणारामइति नारदसम्मतिः । तच्छक्तिर्ज्ञानकीरूपा तेनाभिन्ना महामुने ॥ २६ ॥
 दो. कारणारामप्रभावतेनारदमतियह जानु । तासु शक्तिसियरामते करि अभेद मुनिमानु ॥ २६ ॥

री. कारण प्रभाव करके श्री रामचन्द्र जी जो परम ईश्वर हैं उन की इच्छा रूपी जो शक्ति है सोई श्री जानकी जी हैं इसलिये श्री रामचन्द्र जी से श्री जानकी जी भिन्न नहीं हैं हे मुनि यह नारद जी की सम्मति है ॥ २६ ॥

۲۴۔ کارن پر بجاو کے رُو سے ستری رام چندر جی جو پر ہم ایشور ہیں انھیں کی
اچھا روپی شکست شری جانکی جی ہیں ایسے رام چندر جی سے جا کی جی علیحدہ
نہیں ہیں ہے من جی یہ نارو جی کا منت ہے۔

سू. सूक्ष्मांशं ज्ञानसर्वस्यमिति ज्ञात्वा विमुच्यते। ज्ञानस्यैषा पराकाष्ठा सर्वभावज्ञसम्मतिः ॥ २७ ॥

श्री. ब्रह्मज्ञानमति सर्वस्य पाशमुक्ति कह ज्ञान। सर्वभावविदसम्मती उत्तमदिशा वखान ॥ २७ ॥

श्री. ब्रह्मज्ञान के थोड़े कला को भी मनुष्य अच्छी प्रकार से जानकर संसार पाश से मुक्त हो जाते हैं और ज्ञान की उत्तम दशा यही है यह पदार्थ के जाननेवालों की सम्मति है २७
ॲॷ - برہم گیان کے تھوڑے کلا کو بھی اچھی طرح سے جان کر آدمی کٹ حاصل کر سکتا ہے اور گیان کی اتم دشایی ہے اور پدارتھ کے جاننے والوں کا بھی یہی منت ہے۔

सू. समाप्तिरग्रन्यानां वाच्यवाचकसम्पदाम्। एतावद्देद सर्वस्वमेषवै ब्रह्मसम्मतिः ॥ २८ ॥

श्री. वाचकवाच्यकग्रन्यवलइहांसमापतिसार। सर्वेदेद सर्वस्वइहविधिसम्मतिनिर्धार ॥ २८ ॥

श्री. वाच्य और वाचक की सम्पदा जो है ग्रन्थ उसका ऐश्वर्य यही जानना यह ब्रह्माजी की सम्मति है ॥ २८ ॥
ॲॷ - بات اور بات کر نیو اس کے کی دولت گرتتہ ہے اُس گرتتہ کا نتیجہ یہی ہے جو اوپر کہا گیا اور برہما جی کی منت بھی یہی ہے۔

मू. यदनेन प्रकारेण सीतारामौ हृदि न्यसेत् । सीता
रामौ स्वयं धर्मस्सीतारामौ स्वयं प्रभुः ॥ २८ ॥

दो. जो या विधि हिय में धरै सम करि सीताराम । धर्म
रूप इन इकलवै सब के प्रभु अभिराम ॥ २८ ॥

शी. इस प्रकार से जो सीताराम हैं उनको अपने हृदय में धार
ण करके दोनों स्वरूप को धर्म रूप और सब के प्रभु एक
समझना चाहिये ॥ २८ ॥

२९ - اسطرح شری سیتارام کو اپنے ہر ذرے میں دھارن کر کے دوڑن
کو دھرم روپ اور مالک سمجھنا چاہیے -

मू. सीतारामौ जगदीजं सीतारामौ स्वयं जगत् । सर्वे
षां साधकानाञ्च यदर्थवै परिश्रमः ॥ ३० ॥ ३० ॥

दो. सर्वजगत्को बीज अरु स्वयं जगतसियाराम । साध
क सब करि अमित श्रम जिन हित आदौ याम ॥ ३० ॥

शी. और वही सीताराम संसार स्वरूप और संसार के कारण हैं
जिनके वास्ते सब साधकों का बड़ा परिश्रम है ॥ ३० ॥

३० - اور یہی سیتارام سنسار روپ اور سنسار کے کارن ہیں جبکہ یہ
سارہک لوگوں کو بڑی محنت کرنا پڑتی ہے -

मू. लक्ष्मणैर्बहुभिर्लक्ष्यौ सीतारामौ गतिः सताम । ज्ञा
नस्यैषा पराकाष्ठा विज्ञानस्याश्रयः परः ॥ ३१ ॥

दो. सब लक्षणालक्षित अरु ज्ञान दिशा गति सन्त । पर
शाश्रय विज्ञान के समसिया श्रुति अन्त ॥ ३१ ॥

दी. और कितने चिन्हों से वह सीताराम चिन्हित हैं और सज्जन लोगों के गति हैं और ज्ञान की उत्तम दिशा और विज्ञान कहिये अनुभव के आश्रय हैं ॥ ३१ ॥

३१- और ये सीताराम कितने चिन्हों से बहरे हुये हैं और सज्जन ही लोग अनुभव कर सकते हैं और गीतान की अहम दिशा और गीतान के अस्तित्व हैं -

मू. विज्ञायैतत्प्रयत्नेन कृतकृत्यो भवेन्नरः ॥ ३२ ॥ ३२ ॥

दी. निश्चय करिहिये मंथरे कृत की रति नर होय। सिया-राम महिमा उपकथ किमि वरणी कविकोय ॥ ३२ ॥

दी. इसी प्रकार इस तत्व को जान कर वह मनुष्य कृतकृत्य होजाते हैं ॥ ३२ ॥

इति श्री बृहद्विष्णु पुराणे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

दी. बृहद्विष्णु पुराण के त्रयोदशोऽध्याय। देवसुवन दोहार को सब जन को सुखदाय ॥ १३ ॥ १३ ॥

३२- इस तरह से इस तत्व को जान कर आदमी कर्त करती होजाता है -

मू. मैत्रेय उवाच ॥ एतद्ब्रह्मस्य मतुलं विज्ञातं जानकी पतेः। पुनर्विस्तारतः किञ्चिच्छ्रोतुमिच्छामि तद्वद ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

दी. यह ब्रह्मस्य मतुलित सुन्यो सिय पतिके पुस सार। पुनिसुनिवेकी रुचि है कहिये सह विस्तार ॥ १ ॥

दी. फिर मैत्रेय जी ने कहा कि हे मुनि श्री सीतापतिके मतुल रहस्य मैत्रेय ने कृता परन्तु संक्षेप मात्र रूप से बयान कि-

یہ ہے اور منہ کو بکھلا کر سنانے کی خواہش ہے اس لیے
آپ بکھلا کر سنانے کی جیے ॥ ۱ ॥

برہنہ پرن ان کا چوہو ہوان اڈھیہ

۱۔ پھر میثیلا جی بولے کہ ہے من شری سیتا پت کے اہل برس کو مختصر آپ نے
سنان کیا اور مجھ کو مفصل سنانے کی خواہش ہے لہذا اب آپ مفصل کہنا چاہیے۔

س. स्वरूपं नाम च व्यक्तं चरितं वापि विश्रुतं । केषां-
चिदपि लोके स्मिन्केषु शं कान विद्यते ॥ १ ॥

دو. नाम रूप सब जग विदित अरु चरित्र विख्यात । लो-
क परस्पर जन सभ हि पुनि शं कान लखात ॥ १ ॥

دو. श्री राम जानकी जी के रूप का वर्णन और नाम और उन
दोनों स्वरूप के चरित्र जो लोक में विख्यात हैं उसकी भी
ने सुना पद्यपि इस लोक में कोई नरु के कोई स्थान में मु-
न को शका करना योग्य नहीं है ॥ २ ॥

۲۔ شری رامچند اور شری جانکی جی کے روپ کا برن اور ان کے نام اور ان
کے چرتر جو تمام دنیا میں مشہور ہیں میں نے سنا ہر چند اس میں کوئی شک
کرنے کا مقام نہیں ہے۔

س. परं त्वयो ध्याया तुल्या मिथिला वर्णिता त्वया । त-
स्या विस्तार व्यापाम स्वरूपाणि वदस्व मे ॥ ३ ॥

دو. तो फिर अब धरित पुरी मिथिला कहो वषान । अ-
वकितना विस्तार पुनि दीरघ कहु परमान ॥ ३ ॥

دی. तथापि अचध के बराबर मिथिला पुरी को आप ने वर्णन किया है अब उसका प्रमाण बतलाइये कि कितना दीर्घ और कितना विस्तार है ॥ ३ ॥

۳ - پر تو بھی جو آپ نے متھلا پُری کو اودھ کے برابر بیان کیا تو اب اسکا بستان اور پرمان بھی بیان کیجیے کہ یہ متھلا پُری عرض اور طول میں کھانے کہاں تک ہے -

मू. तस्यां यात्रा कथं कस्मिन्काले कार्यामुमुक्षुभिः।
के देवा तत्र वै सन्ति तेषां नामानि मे वद ॥ ४ ॥ ४ ॥

दी. कौन गम को देव तारहत नाम कहतौ न । नहं यात्रा केहि काल महं करहिं मुमुक्षुजौ न ॥ ४ ॥

दी. और वहाँ पर कौन कौन स्थान में कौन कौन देवता है और मुक्ति की इच्छा वाले लोग कौन कौन काल में वहाँ की यात्रा करते हैं सो वर्णन कीजिये ॥ ४ ॥

۴ - اور اس میں کس کس جگہ پر کون کون دیوتا ہیں اور مُکّت کے چاہنے والے لوگ کس کس وقت میں وہاں کی جا تر کرتے ہیں -

मू. पराशर उवाच ॥ गङ्गाहिमवतोर्मध्येन
दीपंचदशान्तरे । तैरभूत्किरिति ख्यातो दे-
शः परमपावनः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

दी. गङ्गाहिमगिरिबीचमें मिथिलापुरी अनूपान दीपंचदशजाहिमेंतिरहुतपावनरूप ॥ ५ ॥

दी. पराशरजी बोले कि हे मुनि गङ्गा और हिमवन्त

پہرنت کے وچ مں اور پندرہ نری کے اندر مں پر م پکی
 ت تہت دشا نالوک مں مسیڈ ہ ۥ ۶ ۥ

۵۔ پر انگریزوں کے کہنے سے سن شری گنگا جی اور ہونٹ پہاڑ کے بیچ میں پرم
 پوتر ترمیت دیش ہے جسکے اندر پنڈراہ ندیاں میں دینے والی ہستی ہیں۔

س۔ کوشیکی کملاتھیتا ویلوتھیتا متا۔ ی م
 نا تھیتا ویلوتھیتا متا ۥ ۶ ۥ

دو۔ کوشیکی انر کملان دی ویلوتھیتا تھیتا۔ ی م
 نا انر کھیتا متا ی م ۥ ۶ ۥ

دی۔ اب مں ان نریوں کے نام کھتا ہں۔ پھ م کوشی
 کی ۱ کملاتھیتا ۲ ویلوتھیتا ۳ ی م ۴ مہیتا ۵ گھیتا ۶
 ۷۔ اور ان نریوں کے نام یہ ہیں۔ کوشکی۔ کملاتھیتا۔ بیلوتھیتا۔ جہا۔ جھوتھیتا
 اور گھیتا۔

س۔ جلا دیکا دھیتا تھیتا ویلوتھیتا متا۔ وی
 جلا دیکا تھیتا تھیتا تھیتا ۥ ۷ ۥ

دو۔ جلا دیکا انر دھیتا تھیتا ویلوتھیتا تھیتا۔ وی
 جلا دیکا انر دھیتا تھیتا تھیتا ۥ ۷ ۥ

دی۔ جلا دیکا ۷ دھیتا ۸ ویلوتھیتا ۹ ویلوتھیتا ۱۰ ویلوتھیتا ۱۱
 مہیتا ۱۲ ۥ ۷ ۥ
 ۱۳۔ جلا دیکا۔ گھیتا۔ ویلوتھیتا۔ جہا۔ جھوتھیتا۔ اور
 جھوتھیتا۔

س۔ لکھنا تھیتا تھیتا تھیتا تھیتا

इतिपूर्वक्रमात्प्रीक्तंनदीनामानिदर्शनम् । ८ ।

श्री. बहुरिलक्ष्मणावाग्वतिगाण्डकिसहपरिणाम । य-
हदशपंचनदीकह्योपूर्वकरमतेनाम ॥ ८ ॥

श्री. लक्ष्मणादेयी १३ वागवती १४ गाण्डकी अर्थात् नारायणी
१५ यह सब पूर्व दिशा की नदियों के नाम क्रम से मैंने वर्-
णन किया है ॥ ८ ॥

۸۔ لکھن دیہی - باگ و تی - گندگی یعنی ناراینی - ان ندیوں کا نام
سلسلہ سے پورب کی طرف سے میں نے بیان کیا -

श्री. अकुच्छीवर्तिनीचैवजंघाजीवापिकातथा । इ-
त्याद्यावहवःसन्तिनद्योहिमवतोद्भवाः ॥ ९ ॥

श्री. अकुच्छीवर्तिनीजंघाजीवापिकासुहाय । इत्या-
दिकहिमतेनिशरिनदीमैथिलाज्जाय ॥ ९ ॥

श्री. सिनाय इन नदियों के अकुच्छी और वर्तिनी और जंघा
जीवापिका इत्यादि कितनी नदियाँ हिमवान् पर्वत से निक-
ल कर इस मिथिला देश में बहती हैं ॥ ९ ॥

۹۔ علاوہ انکے اچھی اور برتنی اور جنگھا جیو اچکا وغیرہ کتنی ندیاں ہموان پڑتے
سے نکل کر اس متھلا دیش میں بہتی ہن -

श्री. कौशिकीतुसमारभ्यगाण्डकीमधिगम्यवै। यो-
जनानिचतुर्विंश व्यायामपरिकीर्तितः ॥ १० ॥

श्री. कौशिकितेशारम्भकरिनारायणिसहमान । मि-
थिलापुरिव्यायामकहिकोशक्यानवेजाना ॥ १० ॥

श्री. कौशिकी से नारायणी तक मिथिला पुरी की लम्बाई पूर्व
वर्ष पश्चिम में दियानवे कोश है ॥ १० ॥

१०- یورپ پچھم گوشکی ندی سے ناراینی ندی تک طول اس متھلا دیش کا
چھیا نوٹکے کوں ہے -

मू. गङ्गाप्रवाहमारभ्ययानद्वैमवतंबनं । विस्ता-
रंषोडशप्रोक्तोदेशस्य कुलनन्दन ॥ ११ ॥

श्री. श्रीगङ्गाके धारते हिमवतवनलौमान । विस-
रमिथिलादेशको चौसठकोशप्रमाण ॥ ११ ॥

श्री. और हे कुलनन्दन श्री गङ्गाजी के प्रवाह से हिमवन्त
वन तक इस देश का प्रमाण चौसठ कोश का है ॥ ११ ॥

११- اور گنگا جی کے کنارہ سے ہنوٹت بن تک عرض اس پیش کا پچھم کوں ہے -

मू. मिथिलानामनगरीतत्रास्तेलोकविश्रुता । प-
ञ्चभिः कारणैः पुण्याया विख्याता जगत्रये १२

श्री. तासु मध्यमिथिलानगरलोकमाहिं विख्यात ।
पुण्याञ्चरुत्तमपुरीकारणापञ्चसुहात ॥ १२ ॥

श्री. और इस देश के मध्य में जो मिथिला नाम पुरी अति
प्रसिद्ध और अत्यन्त पुण्या है इसके पाँच कारण हैं ॥ १२ ॥

१२- اس دیش کے درجیاں میں جو متھلا مگر مشہور ہے اسکے پورے اور پشیا
ہونے کے پانچ سبب ہیں -

मू. निमिर्नाममहाराजं द्रुक्वाकोत्तनयो नृपः । तेन
तप्तं तपोधोरयेन ख्यातं तपोवनं ॥ १३ ॥

दो. नृपइक्ष्वाकुतनयजिनहिंनिमिराजजगनाम ।

सोकीन्होअतिघोरतपभयोतपोवननाम ॥ १३ ॥

टी. एक तो यह कि राजा इक्ष्वाकु के पुत्र राजा निमिने यहाँ पर
आकर अत्यन्त घोर तप किया इस वास्ते इसका नाम तपोव-
न विख्यात हुआ ॥ १३ ॥

۱۳ - ایک تو राजا اچھو اک کے بیٹے राजा निमिने यहाँ पर
जस सبब से इसका नाम तपोवन مشहूर ہوا۔

मू. सुवर्णखानिरुत्पन्नापूर्वमस्मिस्तपोवने । सुव-
र्णकाननं नाम तेन ख्यातिपथंगतम् ॥ १४ ॥

दो. स्वर्णखानिउत्पतिभईपूर्वतपोवनमाहिं । नाम
स्वर्णवनहेतुतिह ख्यातभयो जगताहिं ॥ १४ ॥

टी. फिर उसी तपोवन में पूर्वकाल में सोने की खानि उत्पन्न
हुई थी इस वास्ते उसका नाम स्वर्णकानन भी प्रसिद्ध हुआ ॥ १४ ॥

۱۴ - پھر اسی تپو بن میں پہلے پہل سوئے کی کھان نکلی تھی اس سے اسکا نام
سورن کاتن بھی مشہور ہوا۔

मू. पुनस्तथैवनगरीनिर्मितानिमिनामुने । तत्रया-
तोमिधिर्नामतेनसामिधिलाभवत् ॥ १५ ॥

दो. पुनिनिमिनगरच्योतहांमिधिजनमेजगत्राय ।
तातेमुनिवरसोपुरीमिधिलानामकहाय ॥ १५ ॥

टी. फिर उसी राजा निमि ने वहाँ पर एक नगर निर्माण कि-
या और वहाँ का मालिक अपने पुत्र मिधि नाम को बनाया

اس واسطے اس کا نام میثیلا پھیلا دیا ۱۱۲۵ ۱۱
 ۱۵۔ پھر اسی راجا نے وہاں پر ایک شہر آباد کیا اور اپنے بیٹے کے نام کو روکا
 ملک مقرر کیا اسی سبب سے اس کا نام مہینہ مشہور ہوا۔

س. देवराततपोभूमिःशिवतुष्टिकरीमता । यत्र प्रा-
 प्रंधनूरत्वंतेनसाशांभवीवभौ ॥ १६ ॥ १६ ॥
 दो. तपोभूमिदेवरातकेतुष्टिकरीशिवजैन । जहां
 प्राप्तहैधनुरतनभयोशाम्भवीतौन ॥ १६ ॥

تر. एक तो यह भूमि राजा निमि का तपस्थान है और शिव
 के संतुष्ट करने में समर्थ है और यहाँ पर धनुष रत्न प्राप्त है

اس لیے اس مکان کا نام شامبوی بھی پھیلا دیا ۱۱۲۶ ۱۱
 ۱۶۔ اول تو یہ زمین راجا نے کسی تپسیا کرنے کی جگہ ہے اور ماہی و جی کو سنتھ
 یعنی آسودہ کرنے والی ہے دوسرے بیان و حشش رتن موجود ہے کہ جس
 سبب سے شامبوی نام بھی اس استھان کا مشہور ہوا۔

س. पुनःशीरध्वजोराजास्वर्णलांगलपद्मतौ । प्राप्त-
 वांस्तनयांयत्रतेनसाधिकविश्रुता ॥ १७ ॥
 दो. बहुरिशीरध्वजभूपकरकंचनहललैतात । जो-
 त्योमहितनयालह्योतातेभवन्निरव्यात १७

تر. और यहाँ पर उसी वंश के राजा शीरध्वज ने सोने के ह-
 ल से पृथ्वी को जोता था और जानकी नाम कन्या पाया था
 इससे वह भूमि अधिक तीनों लोक में विख्यात हुई ॥ १७ ॥

۱۷۔ اور یہاں پر شیر و ہوج نام راجا نے سونے کا ہل چلا کر زمین کو جوڑا تھا

اور اُس مل جلانے میں جانکی جی کو پایا تھا کہ جس سبب سے اور بھی یہ مقام
تینوں لوگ میں مشہور ہوا -

س. धनुष्यञ्जकृतं पूर्वपुत्र्यर्थयत्स्य यम्बरे वित्रोडि-
तं धनुष्यत्र रामेणाद्भुतकर्मणा ॥ १८ ॥ १८ ॥

دو. धनुष्यञ्जरचिपुत्रिहितजाहिस्वयम्बरठाम ।
तोस्योधनुःशङ्कतकरमकियोप्रकरश्रीरामा १८ ।

دی. उसी कन्या के वास्ते उस राजा शीरध्वज ने धनुष यज्ञ कि
या था कि जिस स्वयम्बर में आश्चर्यित कर्म करने वाले श्री
रामचन्द्र जी ने धनुष को तोड़ा था ॥ १८ ॥

۱۸ - پھر اسی کنیا کے واسطے راجا شیردھوج نے دھنشن جگ کیا تھا کہ جس
میں شری رامچندر جی نے اُس دھنشن کو توڑا تھا -

س. एतदर्थं विशेषेण ब्रह्मरुद्रादिदेवताः । सम-
र्चयन्तियत्नेन निवसन्ति स्तुवन्ति च ॥ १९ ॥

دو. तहोँवाससबहींकरतविधिरुद्रादिकदेवान-
तिपूजायाहेतुकरिरहतविशेषः अभेव ॥ १९ ॥

دی. इसलिये ब्रह्माजी और महादेवजी आदि सम्पूर्ण देवता
मिथिला देश की पूजा करते हैं और यत्र पूर्वक वहाँ निवा-
स करते हैं और सदा मिथिला के गुणानुवाद गाते हैं ॥ १९ ॥

۱۹ - اس سبب سے برہما جی اور مہادیو جی وغیرہ سب دیوتا لوگ اس متحلاً
دیش کی پوجا کرتے ہیں اور بڑے احتیاط کے ساتھ وہاں پر نواہس
کرتے ہیں اور ہمیشہ وہاں کے گن گایا کرتے ہیں -

मू. मिथिलातैरभूक्तिश्चवैदेहीनिमिकाननं। यज्ञ
क्षेत्रं क्रियापीठं स्वर्णलांगलपद्धति ॥ २० ॥

सो. यज्ञक्षेत्रतिरभूक्ति क्रियापीठवैदेहिषुनि। नि-
मिबनमिथिलाउक्तिकंचनलांगलपद्धती ॥ २० ॥

टी. मिथिला और तिरभूक्ति और वैदेही और नैमिकानन और
यज्ञक्षेत्र और क्रिया पीठ और स्वर्ण लांगल पद्धति ॥ २० ॥

२०- اور اس ویش کو - مٹھلا اور تیر بھکت اور بیہی - اور نم گان اور
بکت چھتر اور کر یا پیٹھ - اور سورن لائل پڑھت -

मू. जानकीजन्मभूमिश्चनिरेपेक्षाविकल्मषा। रा-
मानन्दकरीविश्वभाविनीनित्यमङ्गला ॥ २१ ॥

सो. निरेपेक्षाअरुनित्यमङ्गलाजुसियजन्मभूमि। रा-
मानन्दकरित्यविश्वभाविनिविकल्मषा ॥ २१ ॥

टी. और श्री जानकी जन्मभूमि और निरेपेक्षा और विकल्म-
षा और रामानन्द करी और नित्य मंगला ॥ २१ ॥

२१- اور جانی ضم بوم اور تیر پیچھا اور بھکتیا اور रामानन्द करी اور नित्य मंगला -

मू. इतिद्वादशनामानियःपठेच्छृणुयादपि। समा-
युयाद्घुश्रेष्ठंभुक्तिंमुक्तिंचविन्दति ॥ २२ ॥

सो. जोइनद्वादशनामकोपदैसुनैरकोय। ताहि
प्राप्तरघुनाथहैभुक्तिमुक्तिलहसोय ॥ २२ ॥

टी. इन बारह नामों को जो मनुष्य पढ़े अथवा सुनै बहमी
श्री रघुनाथजी को प्राप्त होकर भुक्ति अर्थात् नाना प्रकारके

भोग और चारों प्रकार की मुक्ति पाता है ॥ २२ ॥

۲۲ - ان بارہ ناموں کے بڑھنے یا سستے سے آدمی شری رگھناتھ جی کے پاس پہنچ کر ہر طرح کے شکمہ بھوک کر چاروں طرح کی مکت (یعنی سائوک سامینٹ ساروپ ساجوج) حاصل کر سکتا ہے ۔

सू. प्रयागादीनितीर्थानिसन्तिलोकेबहूनिच।प
रन्तुरामप्राप्त्यर्थंतेषांशक्तिर्नविद्यते ॥ २३ ॥

दो. प्रयाग आदितीरथजितेलोकपुण्यदाज्ञाहि।प
ररघुवरपदप्राप्तहितऐसोशक्तिनताहि ॥ २३ ॥

टी. इसलोक में प्रयागादि जितने तीर्थ हैं वह सब पुण्यदा
हैं परन्तु उन सब तीर्थों में कोई तीर्थ ऐसा समर्थ नहीं है जो
श्री रामचन्द्रजी तक पहुँचा दे ॥ २३ ॥

۲۳ - اگرچہ پریاگ وغیرہ سب تیرتھ ہیں دینے والے ہیں مگر یہ طاقت سوائے
متھلا پوری کے اور کسی تیرتھ میں نہیں ہے کہ جو شری رام چندر جی تک پہنچا دے ۔

सू. द्यंसर्वप्रकारेणरामतुष्टिकरीध्रुवम्।यथा
साकेतनगरीजगतःकारणांस्फुरम् ॥ २४ ॥

दो. मिथिलासबविधिरामकोपरमतुष्टिकरिदेत।
निश्चितजिमिसाकेतपुरजगउत्पतिकेहेत।२४।

टी. यह जो मिथिला पुरी है सो श्री रामचन्द्रजी को सन्तुष्ट क
रने में समर्थ है निश्चय करके जिस तरह साकेत नगर सब
जगत का कारण है ॥ २४ ॥

۲۴ - یہ متھلا پوری شری رام چندر جی کو ترضیت کرنے والی اور ساکنیت لوک

کی طرح جگت کی کارن ہے اسین کچھ شک نہیں ہے۔

مू. तथैवानन्दसर्वस्वकाराणानगरीत्वियं। महर्ष
योमहाभागस्त्यक्त्वा सर्वपरिग्रहम् ॥ २५ ॥

दो. तेहिसमयेज्ञानन्दधनकारणमिथिलाजान। म
हाभागसबकाडिकेजेमहर्षमतिमान ॥ २५ ॥

टी. उसी प्रकार ज्ञानन्द रूप जो सर्वस्व है उसका कारण मि
थिला पुरी है और बड़े बड़े महर्षि और भाग्यवान लोग जो
हैं सो अपना सम्पूर्ण विषय छोड़ कर ॥ २५ ॥

२५ - اور سب طرح کی خوشی کی دولت کا سبب یہ متھلا پوری ہے اور بڑے
بڑے متبارکیم اور بھاگو ان لوگ اپنے اپنے گھر کا آرام چھوڑ کر۔

मू. निवसन्तिप्रयत्नेन रामाराधनहेतवे। विश्वा
मित्रस्तुपूर्वस्यां दिशि वासमकल्पयत् ॥ २६ ॥

दो. वासकरहिं प्रतियत्नयुतरामाराधनहेतु विश्वा
मित्रमुनीश्वरपूरुबदिशानिकेत ॥ २६ ॥

टी. श्री रामचन्द्र जी के आराधन के वास्ते निवास करते हैं
और इस के पूर्व दिशा में यत्न पूर्वक विश्वामित्र निवा
स करते हैं ॥ २६ ॥

२ॶ - شری رامچندرجی کے آرا دھن کے واسطے اس متھلا پوری میں تو اس
کیے ہوئے ہیں چنانچہ اس نگر کے پورب طرف بسوا متھرجی رہتے ہیں۔

मू. विभाण्डको महायोगीरक्षितो निवसत्यसौ। गौ
तमस्याश्रमं पुण्यं याम्यपश्चिमकोणके ॥ २७ ॥

دو۔ دक्षिणपश्चिमकोणपैमुनिगौतमअस्थान। पु-
निविभाण्डयोगीमहावासयाम्यदिशिजान २७।

टी۔ और विभाण्ड नाम महायोगी इसके दक्षिण दिशा में निवास करते हैं और गौतमजी का महा पुण्यद आश्रम इसके दक्षिण पश्चिम कोण पर है ॥ २७ ॥

۲۷۔ اور اس نگر کے دکن طرف میں بھانڈ نام جوگی رہتے ہیں اور دکن اور
پچم کے گوشے پر گوتم جی کا آشرم (قیاسگاہ) ہے۔

मू. निवसत्युजंकृत्वावाल्मिकिसत्रपश्चिमे। उ-
त्तरेयाग्यवल्क्यस्तुनिवासाभिरतःसदा॥ २८ ॥

दो. तर्हपश्चिमदिशिवाल्मिकिनिवसहिंकुटीबनाय
याग्यवल्क्यउत्तरदिशिहिंकरहिंनिवाससदाय २८।

टी. और इसके पश्चिम दिशा में पत्र कुटी बनाकर वाल्मी-
कि जी और उत्तर दिशा में याग्यवल्क्य जी निवास करते हैं २८।
۲۸۔ اور اس نگر کے پچم و شمالین پر کھڑی بنا کر بالیک جی رہتے ہیں اور
شمالین جاگہ و لکھ من رہتے ہیں۔

मू. एवमेवप्रकारेणवसत्यन्येमहर्षयः। सनदी
मा त्त्कोदेशोदुर्भिक्षादिविवर्जितः ॥ २९ ॥

दो. यहप्रकारआनन्दयुतअपरमहर्षिनिवास। दु-
र्भिक्षादिनव्यापहीदेशनदीसहवास ॥ २९ ॥

टी. इसी प्रकार और और भी कितने महर्षिलोग मिथिला पु-
री में निवास करते हैं और जोकि यह पुरी नदियों से संयुक्त

हे इसलिये यहाँ दुर्भिक्षादि नहीं पड़ता है ॥२६॥
 २९- इसी तरह और कितने माता माता लोग इस मतेला प्री मिन नो अस करते हैं
 और जो कि इस प्री मिन नदियान बत हैं इस ओज से बान पर फल सिने
 सुकहा कभी नैन प्रता है -

सू. धनधान्यसमायुक्तो वनारामसमन्वितः । प्रश-

स्तनरनारीकञ्चाधिव्याधिविवर्जितः ॥ ३० ॥

दो. धनधान्यादिविभवसहितवनारामअनेक। स-

वप्रशस्तनरनारि जतञ्चाधिव्याधिनहिंएक। ३०।

टी. और नाना प्रकार के धन धान्यादिक से युक्त और अनेक

प्रकार के वन बाटिका से शोभित है और सुंदर स्त्री और पुरुष स-

म्पूर्ण दुख से वर्जित इसमें निवास करते हैं ॥ ३० ॥

३०- और ये प्री प्री हरि हरि की دولت से बहर नो प्री हरि हरि के बन ओ

बाँका से सुकहा बान है और बान के सब मरद औरत रूठानी और हसानी

मारियन से मछुप रहे कर सुक से बास करते हैं -

सू. सदाभुवनसम्पन्नो नदीतीरेषु संस्थितिः । तीरे-

षु भुक्तियोगेन तैरभुक्तिरिति स्मृता ॥ ३१ ॥

दो. सदाभूमिसम्पन्नप्रतिनदीतीरपरग्राम । भुक्ति

योगजेहितीरपैतैरभुक्तिअसनाम ॥ ३१ ॥

टी. और यहाँ की भूमि सर्व काल सम्पन्न रहती है और सब

वस्ती नदियों के किनारे पर है और उन नदियों के तट पर त्त

ना प्रकार के भुक्ति अर्थात् भोग हैं इस वास्ते यह पुरी तैर

بھکتی نام سے ویربھات ہے ॥ ۳۱ ॥

۳۱ - اور بیان کی سرزمین ہمیشہ سرسبز و شاداب رہتی ہے اور چونکہ اس
دیش میں اکثر ندیوں کے کنارے کنارے پر سب گانوں اور نگر آباد ہیں
اور بیان کے رہنے والے طرح طرح کا سکھ بھوک کرتے ہیں اسوجہ سے
یہ دیش تر بھکت نام سے بھی مشہور ہے -

سू. हिमालयस्यचासन्नेमुनिभिःपरिरंजिताः। रा-
जानश्चमहाभागाज्ञानविज्ञानदर्शनाः॥३२॥

शे. हीमालयगिरिनिकटजोमुनिगणरंजितठाम। द
र्शिज्ञानविज्ञाननृपसकलभागकेधाम ॥३२॥

ش. यह मिथिला पुरी जो हिमालय पर्वत के समीप बड़े बड़े
महात्मा मुनि लोगों से शोभित है इसमें जो राजा लोग थे व
ह सब ज्ञान और विज्ञान के दर्शी और भाग्यवान् थे ॥ ३२ ॥

۳۲ - یہ متحلا پُری ہمالے پہاڑ کے نزدیک بڑے بڑے ساتا مائن لوگوں
سے شو بھایان ہے اور اس پُری میں جو راجا لوگ ہو گئے ہیں وہ سب گیان
اور گیان کے دیکھنے والے اور بڑے بھاکوان تھے -

सू. जीवन्मुक्ताविदेहश्चदेहवन्तो विकल्मषाः। अ-
नुष्ठितारोयज्ञानांब्राह्मणान्प्रतिपूजकाः॥३३॥

शे. जीवनमुक्तविदेहसबदेहवाननिष्ठाप। दिज-
पूजाअरुयज्ञबहुकरनसदाविनुताप ॥ ३३ ॥

श. और वे लोग जीवन मुक्त और निष्ठाप और विदेह अ-
र्थात् योगी और सदा यज्ञ करने वाले और ब्राह्मण पूजक थे ३३

۳۳ - اور وسے لوگ چوَن کُٹ اور نہ پاپ اور جوگی اور سدا جگت کرنے والے اور براہمنوں کے پوجنے والے تھے۔

سू. निमिबंश्याऋषिप्रायावसन्त्यत्रमहासुने। अ-
न्यत्किंयत्रसावित्रीगौरीश्रीदेवशक्तयः ॥ ३४ ॥

दो. निमिबंशीतहँयतवसतऋषिसमानयुतभक्ति।
औरकहाँश्रीगौरिजहँसावित्रीसुरशक्ति ॥ ३४ ॥

टी. यहाँ पर निमि बंशी राजा लोग ऋषि के समान निवास करते हैं और कहाँ तक कहें कि लक्ष्मी और गौरी और सा-
वित्री इत्यादि देव शक्तियों ॥ ३४ ॥

۳۴ - یہاں نہ بنشی راجا لوگ رِکھ کے سماں نو اس کرتے تھے اور کہوں تک کہوں کہ اس پری میں شری بھی جی اور شری گوری جی اور شری ساو شری جی وغیرہ دیوتیاں

सू. वसन्त्यत्रप्रयत्नेनसर्वसिद्धिप्रदायिकाः। यत्रसा-
क्षात्स्वयम्भूमौसीतासर्वेश्वरेश्वरी ॥ ३५ ॥

दो. करतवासप्रतियत्नयुतसर्वसिद्धिकोदात। स-
र्वेश्वरकीईश्वरीजौनभूमिसाक्षात् ॥ ३५ ॥

टी. यत्न पूर्वक सम्पूर्ण सिद्धियों की देने वाली निवास क-
रती हैं और सब ईश्वरों की ईश्वरी अर्थात् सब देवताओं
की पालन करने वाली श्री सीता जी जहाँ पर साक्षात् आ-
प ज्ञाकर ॥ ३५ ॥

۳۵ - سب ستر هیون کی دینے والی نو اس کرتی ہیں اور سب ایثورون کی ایثوری سب دیوتاؤن کی پالن کرنے والی شری جاکی جی ساکنات

अपि यान् अकुर -

सू. अविर्भूताविशेषेण श्रेष्ठाराधवबल्लभा । सर्व
देवमहाभागान् ऋषयो ब्रह्मलौकिकाः ॥ ३६ ॥

दो. श्रेष्ठारघुवरवल्लभाप्रकटभर्तृजेहिठाम । सक-
लदेवमुनिभागवतब्रह्मलौकिकनाम ॥ ६६ ॥

टी. श्री रघुनाथजी की श्रेष्ठा प्रिया प्रकट हुई हैं और देवता
और ऋषि और बड़े बड़े भाग्यवान् लोग वेद और लोक दो-
नों के जानने वाले जो हैं सो ॥ ३६ ॥

३५ - श्री रक्षातृषु की प्रेम प्रिया होती हैं कि वे दियोता और रक्षक और बड़े
बड़े बहागुान् लुक बंदि और लुक के जानने वाले -

सू. आराधयन्ति र्या यत्नात्स्वसेष्टार्थप्रकाम्यया । य
स्याः प्रसादतो न्यत्र कल्पकोटिशतैरपि ॥ ३७ ॥

दो. आराधनजे हि यत्न करि सिद्धि हेतु निजकामाज
सप्रसादशतकोटिः अपि कल्पवासपाठाम ॥ ३७ ॥

टी. जिन श्री जानकीजी का आराधन अपने अपने अर्थ
सिद्धि होने के वास्ते करते हैं और जिस प्रसाद के लिये
दूसरे स्थानों पर सौ कल्प वास करके ॥ ३७ ॥

३६ - अपने अपने अर्थ सिद्ध होने के वास्ते उनकी आराधना करने
हैं - दूसरे स्थानों में सौ कल्प वास करने -

सू. नप्रीणातिरघुश्रेष्ठस्तपोयोगसमाधिभिः । अ-
तस्तीर्थेषु सर्वेषु मिथिलापूज्यते सदा ॥ ३८ ॥

दो. तपश्चरुयोगसमाधिकरिद्वतनहींरघुराय।या
तेसवतीरथनपरमिथिलापूज्यसदाय ॥ ३८ ॥

श्री. और कोटि योग तपस्या करके भी श्री रामचन्द्रजी को तृ
प्त करके प्राप्त करै यह सामर्थ्य सिवाय मिथिला के और
किसी तीर्थ को नहीं है इस लिये यह मिथिला पुरी सब ती
र्थों पर सदा पूजनीय है ॥ ३८ ॥

३८ - اور کروڑوں طرح کے جوگ اور تپسیا کرنے پر بھی اس استھان کے
برابر شری رامچندرجی کو تریپت کر کے اپنی مراد حاصل نہیں کر سکتے اسوجہ سے
یہ مہتلا پُری سب تیرتھوں سے بڑھکر ہے۔

मू. मिथिलायेनमस्यन्तिदेशान्तरगताऽपि।तेषां
भुक्तिश्चमुक्तिश्चजायतेनात्रसंशयः ॥ ३९ ॥

दो. देशान्तरकहुँवसैयदिमिथिलहिकरैप्रणामानिः
संशयनरलहतसोभुक्तिमुक्तिअभिराम। ३९।

श्री. जो कोई देशान्तर में भी रहकर मिथिला पुरी को नमस्का
र करता है वह निस्सन्देह भुक्ति और मुक्ति पाता है ॥ ३९ ॥

३९ - جو کوئی دوسرے دیش میں بھی رہ کر اس مہتلا پُری کو نمنسکار کرتا ہو
وہ بلاشک و شبہ مکنت ہو جاتا ہے۔

मू. तस्मात्सर्वप्रयत्नेनरामस्याराधकोनरः।निव
सेन्मिथिलाम्प्रायांत्यक्तसर्वपरिग्रहः॥४०॥

दो. तानेसर्वसुयत्ननररामसुसेवकजौन।निवस
हिमिथिलापुण्यथलत्यागिपरिग्रहभौन।४०।

۴۰۔ اس واسطے رام راہک لوگوں کو چاہیے کہ اپنا سب پر
 گڑھ اسیاںت سنساری کارن تیاگ کر یکن پورک میثیلا پوری مں
 نیواس کرنا اڈکی کار کرے ॥ ۸۰ ॥

۴۰۔ اس واسطے رام کے ارادہن کرنیوالوں کو چاہیے کہ اپنا سب کاروبار دنیاوی
 تیک کر کے مہتملا پوری مین رہنا اختیار کریں -

इति श्री बृहद्विष्णु पुराणे मिथिला माहात्म्ये चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ २

मू० मैत्रेय उवाच ॥ यानि लिङ्गानि पुण्यानि यानि देवात्
 यानि चा तत्र सन्ति महाभाग तेषां नामानि मे वद ॥ १ ॥

दो० मयि त्रेय कह पुण्य मय जौ न लिङ्ग सुरधाम । अ-
 हैत हां वर्णन करहु महाभाग तसु नाम ॥ १ ॥

ॴ० मैत्रेय मुनि फिर प्रश्न करते भये कि हे महाभाग अब
 मिथिला में जो लिङ्ग और जहाँ पर जिस देवता का मन्दिर
 है उसके नाम मुरु से वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

برہدیشن پوران کا چند رموان اویہا
 ۱۔ پھر مہترے من نے کہا کہ ہے مہا بھاگ اب مہتملا پوری مین جو جو لنگ
 اور جہان جہان جس جس دیوتا کے مندر ہوں مفصل بیان کیجیے -

مू० पराशर उवाच ॥ शिलानाथाभिधं लिङ्गं

तथा वैकपिलेश्वरं । सर्वसिद्धिप्रदं नृणां
पूर्वद्वारे प्रतिष्ठितम् ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

शे. पाराशरजुकहतभये पूर्वद्वारके पास शि-
लानाथ असलिङ्ग हैं असकपिलेश्वरवास २
शे. पाराशरजी बोलें कि हे मुनि श्री निमिपुरी के पूर्व द्वार
पर शिलानाथ नाम करके महादेव और कपिलेश्वर नाम
लिङ्ग मनुष्यों को सिद्धि देने वाले हैं ॥ २ ॥

२- प्राश्नी कहे लगे कि हे मुनि मच्छापूरी के लोर्ब दरवाजे पर शिलानाथ
और कपिलेश्वर नाम मादो आदियों को सिद्धि देने वाले हैं -

मू. कूपेश्वरं तथाग्नेयलिङ्गं सर्वाघनाशनं । या-
म्येसिद्धिप्रदं लिङ्गं कल्याणेश्वरनामकं ॥ ३ ॥

शे. कूपेश्वर हैं अग्निदिशि दशतपापनशाय । क-
ल्याणेश्वरयाम्पदिशि देतसिद्धिसमुदाय ३

शे. और अग्नेय कोण पर कूपेश्वर नाम लिङ्ग सम्पूर्ण पाप
के नाशक और दक्षिण दिशा पर कल्याणेश्वर नाम लिङ्ग
सर्व सिद्धियों के देने वाले हैं ॥ ३ ॥

३- और अग्निकोण पर कूपेश्वर नाम मादो योसब पाप के नाश करने वाले
हैं और दक्षिण कोण पर कल्याणेश्वर नाम मादो योसब पाप के देने वाले हैं -

मू. सर्वसिद्धिकरं लिङ्गं वारुण्यञ्जलेश्वरं ।
सौम्यजलाधिनाथारयंतथाक्षीरेश्वरंतथा ४

शे. सकलकामनासिद्धिकर वारुण्यञ्जलेश्वरानाम

उत्तरजलाधिसुनामपुनिक्षीरेश्वरशुभधाम । ४ ।

टी. और वरुण दिशा में जलेश्वर नाम लिङ्ग सब सिद्धियोंके देने वाले हैं और उत्तर दिशा में जलाधिनाथ और क्षीरेश्वर नाम करके लिङ्ग हैं ॥ ४ ॥

۴ - اور برن و شامین جلیشور نام لنگ اور اتر طرف جلا دھ نام او
چھی ریشور نام مہادیو میں -

मू. ऐशान्यात्रिजगतव्यातनाम्नावैमिथिलेश्वरं ।

भैरवाख्यो महादेवो नैऋत्यां ग्रामरक्षकः ॥ ५ ॥

दो. ऐशाने त्रिजगत विदित मिथिलेश्वर अस नाम ।

भैरव नाम महादेव नैऋतिरक्षक ग्राम ॥ ५ ॥

टी. और ईशान कोण पर तीनों लोक में विख्यात मिथिलेश्वर महादेव हैं और नैऋत्य कोण पर ग्राम के रक्षा करने वाले भैरव नाम महादेव हैं ॥ ५ ॥

۵ - اور اسیان کوں پر تینوں لوک میں مشہور متعلقہ شہور اور نیرت کوں
پر نگر کی رچھا کر نیوالے بھیرون نام مہادیو میں -

मू. एवमादीनिलिङ्गानिनैकशः संस्थितानि च । यो-

गनिद्रामहामायातद्यानगरदेवता ॥ ६ ॥

दो. इत्यादिक बहुलिंगजो मिथिला पुर चहुँघाहिं ।

योगनिद्रामायामहानगरदेवता आहिं ॥ ६ ॥

टी. यह आदि करके पृथक् पृथक् कितने लिंग हैं और नगर देवता योगनिद्रा महामाया हैं ॥ ६ ॥

५ - اور سوا سے اسکے اور بھی کتنے لنگ پین اور جوگ تدر نام مہا مایا
 نگر کی دیوتا ہیں -

सू. गिरिजाद्यामहाभागाःख्याताःपरमशक्तयः।
 बहुनिपुण्यख्यातानितेषां नामानि मेशृणु ॥ ७ ॥

दो. गिरिजाद्यामहाभागापरमशक्तिषेख्यात। बहु-
 तपुण्यदाविदितजगतासु नामशृणुतात ॥ ७ ॥

ती. श्रीर गिरिजा आदि महाभागवती शक्तिर्यां तो सब मि-
 थिला पुरी में विदित ही हैं परन्तु अन्य अन्य सरोवर भी पु-
 ण्य दायक वहाँ वर्तमान हैं उनके नाम सुनिये ॥ ७ ॥

६ - اور گرجا وغیرہ مہا بھگوتی شکتیاں سب مہتلا پری میں تو مشہور
 ہی ہیں پر علاوہ اسکے جو وہاں پر تالاب پین کے دینے والے ہیں
 اسکے نام کتابوں میں -

सू. पुरन्दर सरःपुण्यंततोदाशरथसरः। भार्गवं
 माडनं चार्क्षविडालं रुक्मिणीसरः ॥ ८ ॥

दो. तालपुरन्दरपुण्यमयदशरथसरतवज्जानु। भा-
 र्गवसरमाडनरिक्षविडालरुक्मिणीमानु ॥ ८ ॥

ती. बड़ा पवित्र पुरन्दर सर और दशरथ सर और भार्गव सर
 र और माडना सर और रिष सर और विडाल सर और रु-
 क्मिणी सर अर्थात् तालाब हैं ॥ ८ ॥

७ - یعنی پرنڈر تالاب - دسر تھ تالاب - بھارگو تالاب - منڈن تالاب
 رچھ تالاب - پڑال تالاب - رکنی تالاب -

सू. जनकस्य सरःपुण्यं सुनेत्रायाः सरस्तथा । बल-
देवसरस्तद्वद्वोपालस्यसरोवरम् ॥ ६ ॥ ६ ॥

दो. जनकसरोवरपुण्यमयञ्चौरसुनेत्रानाम । पुनि
बलदेवसरोवरसरगोपालप्रभिराम ॥ ६ ॥

टी. और बड़ा पवित्र जनक सर और सुनेत्रा सर और बलदे-
वसर और गोपाल सरोवर हैं ॥ ६ ॥

4 - جنگ تالاب - منیتر تالاب - بلور تالاب - گویاں تالاب -

सू. धनुःक्षेत्रमितिख्यातं पादप्रक्षालनं सरः । वि-
चित्राधुतपावन्ती तथा चुञ्चवतीमता ॥ १० ॥

दो. धनुषसरोवरविदितजगपगुधोवनसरख्यात ।
वीचित्राधुतपावन्ती चुञ्चवतीसरतात ॥ १० ॥

टी. और धनुषक्षेत्र जिसको धनुषसरोवर कहते हैं और
पादप्रक्षालन और विचित्रा और धुतपावन्ती और चुञ्चव-
ती नाम सरोवर हैं ॥ १० ॥

10 - دهنش تالاب - پاو پرچمالن تالاب - پچتر تالاب - دھت
پاونتی تالاب - چنچوتی تالاب -

सू. पयस्विनीकुडवतीविरख्यातानिलदीर्घिका । ल-
ह्मणाख्यागुणवती तथा विल्ववतीमता ॥ ११ ॥

दो. कुडवतिः परपयस्विनीतिलदीर्घिकावरान ।
लह्मणारूपुनिगुणवतीविल्ववतीसजान ॥ ११ ॥

टी. और पयस्विनी और कुडवती और तिलदीर्घिका और

लक्ष्मणा और गुणवती और विल्ववतीनाम सरोवर हैं ॥ ११ ॥
 ॥ - पिसुनी तालाब - कूँवली तालाब - मल्लविरगका तालाब - लक्ष्मणा तालाब -
 गनूवती तालाब - बलुवती तालाब -

सू. दीर्घिका महती पुण्यादृष्टदा विषहारिणी । मत्स्यो
 दही व्याघ्रहरा स्थितिदा क्षत्रधारिणी ॥ १२ ॥

दी. महापुण्यादा दीर्घिकादृष्टदानिविषहारि । व्याघ्र
 हरान्मत्स्योदरी स्थितिदा क्षत्रधारि ॥ १२ ॥

टी. और दीर्घिका महा पुण्या और दृष्टदा और विषहारिणी और
 मत्स्योदरी और व्याघ्रहरा और स्थितिदा और क्षत्रधारि
 णी नाम सरोवर हैं ॥ १२ ॥

॥ - वीरगका तालाब - जायंत्या और अस्त रा और ब्रह्मरानी और शिवोदी
 और बाल्गम बरा और अस्मत्त दा और चिप्टरुवारी नाम तालाब -

सू. गोब्रजाचित्रधारख्याख्याता पूर्णाव्रता तथा ।
 दुर्गम्याचित्रधार्त्रिचतथा खण्डहरी सुधा ॥ १३ ॥

दी. गोब्रजाचित्रधारदि पूर्णाव्रतापुनिमानु । चित्र
 धार्त्रिदुर्गम्यपुनि सुधा खण्डहरिजानु ॥ १३ ॥

टी. और गोब्रजा और चित्रधार और पूर्णाव्रता और दुर्ग-
 म्या और चित्रधारी और खण्डहरी और सुधासर हैं ॥ १३ ॥
 ॥ - और गोब्रजा और चिप्टरुवारी और ब्रह्मरानी और शिवोदी
 और केशवहरी और सुधा नाम तालाब हैं -

सू. पुत्रपादादृष्टदा व्यातानथानगरदेविका । स-

नकादिसरःपुण्यंतारणंमन्मथंसरः ॥ १४ ॥

दो. पाकवतीअतिपुण्यमयबहुरिदेविकाग्राम। पु-
निपुण्यासनकादिसर तारणमन्मथनाम।१४।

टी. और बड़ा पवित्र पाकवती और नगरदेविका और सनका-
दिसर और मन्मथसर इत्यादि तारण अर्थात् संसार समुद्र
से तार देने में समर्थ हैं ॥ १४ ॥

۱۴- اور بہت پوتر پاکوتی اور نگر دیو کا اور سنکا و شر اور من ہتم شر
دیگر تالاب سنسار سمندر سے آدمی کو تارنے والے ہیں۔

मू. मंधानंकौशलंचक्रलोमशंरामसागरं। सप्तवे-
धाभिधंतीर्थंध्रुवंगारुडमेवच ॥ १५ ॥ १५ ॥

दो. मंधानंकौशलंचक्रलोमशसागरराम। सप्तवे-
धध्रुवगरुडसरपरमरम्यशुभधाम ॥ १५ ॥

टी. और मंधानल सर और कौशल सर और चक्र सर और
लोमश सर और राम सागर और सप्तवेध सर और ध्रुव
सर और गरुड सर हैं ॥ १५ ॥

۱۵- اور منہا نعل تالاب اور کوشل تالاب اور چکر تالاب اور لومس
تالاب اور رام ساگر تالاب اور سبت بیدہ تالاب اور دھرم تالاب ہیں۔

मू. केदारं वह्निकुण्डञ्चमध्यमंजानकीसरः। कु-
म्भोदकं वारणाञ्च तथा सारस्वतं सरः ॥ १६ ॥

दो. वह्निकेदारं नुमध्यमानकिसर अभिराम।
कुम्भोदकपुनिवरुणसस्वतसरनाम १६

धी. और केदार सर अग्नि कुण्ड और मध्यमा कुण्ड और
जानकी कुण्ड और कुम्भोदक और वरुण सर और सारस्वत सर १६
१५ - और कियार तालाब और राकन कुण्ड और मज्जा कुण्ड और जाम्बू कुण्ड और कियार
और ब्रजन तालाब और सारस्वत तालाब हैं -

मू. चतुर्दीर्घिका माख्यातं तथा कष्टहरं सरः । धा-
त्रीसरो विषहरं विख्यातं मुरली सरः ॥ १७ ॥

दो. चतुर्दीर्घिका कष्टहरा धात्री विषहरदेव । एते
सर शुभजानिये मुरली सरस विशेष ॥ १७ ॥

धी. और चतुर्दीर्घिका और कष्टहर और धात्री और विषहर
और मुरली सर सम्पूर्ण विख्यात हैं ॥ १७ ॥

१६ - और चित्रद्विर्गुणा और कृष्ण सर और दुहात्रयी और कियार सर और मुरली
नाम तालाब मशहूर हैं -

मू. गङ्गासागरमित्युक्तमङ्गलगाविधं सरः । गौत-
मस्य सरः पुण्यं वशिष्ठस्य सरस्तथा ॥ १८ ॥

दो. गङ्गासागरपुण्यमयमङ्गलगाविधरव्यात । अ-
रुगौतमसरशुभद अति सर वशिष्ठशुचिदान १८ ।

धी. और गङ्गासागर और अमंगलगासर और गौतम सर और
वशिष्ठ सर अति पवित्र हैं ॥ १८ ॥

१७ - और कल्याण सागर और कल्याण तालाब और कल्याण तालाब और कल्याण तालाब
और कल्याण तालाब मशहूर हैं -

मू. इत्युक्तं सरसां नाम कूपनामानि मेषु । पुण्यं
शैरध्वजं कूपं सतानन्दस्य कूपकं ॥ १९ ॥

دو. इत्यादिक सरनाम कहिकूपनाम सुनुतात । पु
ण्यशीरध्वजकूपपुनिसतानन्दकरख्यात । १६ ।

टी. यह तो सरोवरों के नाम कहे अब परम पुण्य कूपों के ना
म कहते हैं सुनो कि शीरध्वज कूप और सतानन्द कूप अति
पवित्र हैं ॥ १६ ॥

۱۹- یہ سب تو وہاں کے تالابوں کے نام ہیں اب وہاں کے پریم پویشتر کو پو
منی کنوون کے نام کہتا ہوں سنو۔ کہ شیر ذھوج کو پ اور ستانند کو پ۔

मू. अक्रूरकूपमित्युक्तकूपंसैमन्तकंतथा । विद्या
कूपंज्ञानकूपमितिलोकेषु विश्रुतम् ॥ २० ॥

दो. पुण्यकूपअक्रूरकोअरुसैमन्तककूप । विद्याकू
पअनूपजगज्ञानकूपसुखरूप ॥ २० ॥ २० ॥

टी. और अक्रूर कूप और सैमन्तकूप और विद्याकूप और ज्ञा
न कूप जो तीनों लोक में विदित हैं ॥ २० ॥

۲۰- اور اکرور کو پ اور سیماننگ کو پ اور پڑیا کو پ اور گیان کو پ جو تینوں لوک میں مشہور ہیں

मू. महाभागवतश्रेष्ठवर्णितायेजलाशयाः । ते
षांस्नानेनपानेनमहापुण्यफलंभवेत् ॥ २१ ॥

दो. महाभागवतश्रेष्ठएकहेउंजलाशयजेत । ता
सुपानअस्नानजलमहापुण्यफलेदेत ॥ २१ ॥

टी. ये सब जलाशय जिनके नाम मैंने वर्णित किये इन स
ब का स्नान और पान बहुत पुण्य दायक हैं ॥ २१ ॥

۲۱- یہ جو تالاب اور کنوون کے نام میں نے کہے سنایا ان سب میں نہان کرنا

लुआंका पानी पीने से बुरा पत होता है -

मू. पुण्यातिरेकतोलभ्यामिथिलाजायतेसताम् ।

तेषांयात्रामहाभागतत्कालेषुसूरभिः ॥२२॥

दो. सञ्जनजनञ्जतिपुण्यलहिमिथिलाजन्मतजाय

तहंकीयात्राकालजनतासुकालबुधपाय ॥ २२ ॥

टी. सञ्जन जन का जब बड़ा पुण्य उदय होता है तब मि-

थिलापुरी में जन्म होता है और मिथिला के यात्राकाल

जो विहित है उसमें परिडत लोग ॥२२॥

२२ - जब सञ्जन का बत पत आता है तब आकाञ्चमच्छलापुरी में

होता है और मच्छलापुरी की जात्राका जो वक्त मقرر है उसमें पंडित लोग -

मू. क्रियतेपरयाभक्त्यापुराणेषुविनिश्चितं । मुण्ड-

नञ्चोपवासश्चमिथिलायांप्रशस्यते ॥ २३ ॥

दो. परमभक्तियुतकरहितहंनिश्चययथापुराण । मु-

ण्डनञ्चउपवासयहमिथिलामांदिप्रधान २३

टी. बड़ी भक्ति करके यात्रा करते हैं यह पुराण में कहा है कि मि-

थिला में जाकर मुण्डन और उपवास करे यह मिथिला में प्रशस्त

अर्थात् अवश्य है ॥२३॥

२३ - बड़ी भक्ति के साथे वान की जात्रा करते हैं ये पुराण में लिखा

है और मच्छलापुरी में जाकर मुण्डन करना और अपास करना उत्तम है -

मू. येनकेनप्रकारेणगमनंसर्वसिद्धिदं । एका-

हंवाञ्चहंवासोमासिकंवार्षिकंतथा ॥२४॥

دو. کौनेहविधिमिथिलागमनसर्वसिद्धिप्रदवास

एकदिवसयुगतीनदिनमासवर्षसुरवरास।२४।

टी. किसी प्रकार से जो मिथिला में यात्रा करे तो सर्व सिद्धि को

पावे एक दिन अथवा दो दिन अथवा तीन दिन अथवा म-

हीने भर अथवा वर्ष दिन जो कौई मिथिलामें वास करे तो ॥२४॥

۲۴۔ جو کوئی کسی طرح سے میتھلا پُری کی جا تر کرتا ہے وہ سب سیدھیوں

کو پاتا ہے اگر کوئی شخص ایک دن یا دو دن یا تین دن یا مہینہ بھر یا

برس دن تک میتھلا پُری میں رہے تو۔

मू. जन्मावधिफलंपुण्यंसंसारोच्छित्तिकारकं ।

अटनंसर्वतीर्थेषुतत्तदुद्दिश्यदैवतम्॥२५॥

दो. जन्मावधिफलपुण्यलहिच्छूटिजातजगपाश।

अटनसर्वतीर्थकरैरवोजिखोजिसुरवास।२५।

टी. जन्म भर वास करने का फल और पुण्य पाकर संसार ब-

न्धन से छूट जाय ऐसा पुण्य होता है और जिस तीर्थ में जे-

देवता हैं तिनका उद्देश करके वहाँ गमन करे ॥ २५ ॥

۲۵۔ ضم بھر رہنے کا بھل اور پُری پا کر سنسار کے بندھن سے چھوٹ جاتا

ہے اور آدمی کو چاہیے کہ وہ ان جس استھان پر جو دیوتا ہیں ان استھانوں

میں جا کر انکا درشن بھی کرے۔

मू. स्नानंदानंजपोहोमस्तर्पणंश्राद्धमेवच।दि-

जानांभोजनञ्चैवतीर्थसम्पत्तिहेतवे॥२६॥

दो. स्नानदानजपहोमपुनितर्पणश्राद्धसमेत ।

करैविप्रभोजनसहिततीरथसम्पत्तिहेत ॥ २६ ॥

टी. और स्नान दान जप होम तर्पण आहु करै अर्थात् पितरों को पिण्ड दान देवै ब्राह्मण भोजन करावै यह सब तीर्थों की सम्पत्ति है अर्थात् तीर्थ यात्रा का फल है ॥ २६ ॥

५५ - और स्नान और दान और जप और होम और तर्पण और श्राद्ध मन्त्र पितरों को पिण्ड दान करै और ब्राह्मणों को भोजन करावै यह सब तीर्थों की सम्पत्ति है अर्थात् तीर्थ यात्रा का फल है -

सू. परिक्रमापित्रिविधावहती मध्यमालघुः। मार्ग
शीर्षेथवाचैत्रेवैशाखेफाल्गुनेपिवा ॥ २७ ॥

दो. उत्तममध्यम और लघु परिक्रमाविधितीन। अगहन
फाल्गुनचैत्रपुनिमाधवमासप्रवीन ॥ २७ ॥

टी. इस मिथिला पुरी की परिक्रमा तीन प्रकार की है वह ती और मध्यमा और लघु और परिक्रमा करने के महीने यह हैं अगहन फाल्गुन चैत्र वैशाख ॥ २७ ॥

५६ - इस मच्छा पुरी की परिक्रमा तीन प्रकार की है एक ब्रह्मचर्य की दूसरी नदी कौशिकी तीर्थ की तीसरी लक्ष्मी तीर्थ की -

सू. परिक्रमापिकर्त्तव्या नदीमारभ्यकौशिकीम् ।
ब्रह्मचर्यविधाने नहविष्याशीजितेन्द्रियः ॥ २८ ॥

दो. नदी कौशिकी ते चलै जो परिक्रमा जात। ब्रह्म-
चर्यविधि अशनहविरहै जितेन्द्रिय गात ॥ २८ ॥

टी. और परिक्रमा करने वाले को चाहिये कि पहले कौशिकी नदी से आरम्भ करै और ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करै

۲۸۔ اور پھر گراما کر نیوالے کو چاہیے کہ پہلے کوشکی ندی سے پھر گراما شروع کرے

اور پھر پتھر چرخ بہت کو دھارن کرے اور پوٹر آن یعنی ہمیشہ بھون کرے اور چٹنڈری ہو کر رہے۔

۲۹۔ اور پوٹر پوٹر رکھے اور وہاں پر بھکتوں کے ساتھ رہے اور شری

سنگھیشور مہادیو کو پرتام کر کے شری راجندر کو یاد کرے۔

۳۰۔ پھر سنگھ کر کے پھر گراما شروع کرے یعنی جان پر کوشکی ندی کا سنگم ہے وہاں پر انسان کر کے اس جگہ سے چلے اور گنگا ندی پر پہنچ کر بدھ

۳۱۔ اور پھر پرتام کر کے اور پوٹر آن یعنی ہمیشہ بھون کرے اور چٹنڈری ہو کر رہے۔

۳۲۔ اور پھر پرتام کر کے اور پوٹر آن یعنی ہمیشہ بھون کرے اور چٹنڈری ہو کر رہے۔

۳۳۔ اور پھر پرتام کر کے اور پوٹر آن یعنی ہمیشہ بھون کرے اور چٹنڈری ہو کر رہے۔

۳۴۔ اور پھر پرتام کر کے اور پوٹر آن یعنی ہمیشہ بھون کرے اور چٹنڈری ہو کر رہے۔

के موافق आसन करे -

सू. शालग्रामीलभेद्यावत्तावद्वैपश्चिमामुखः। पुन-
हिमवतः प्राप्नोति पुनस्तत्कौशिकी तटं ॥ ३१ ॥

दो. शालग्रामिलहैजवैपश्चिममुखको जाय। तहेंते
हिमिगिरिप्राप्त करि पुनिकौशिकितटप्राय ॥ ३१ ॥

टी. फिर जब तक शालग्रामी मिलै तब तक पश्चिम ओर चलै
फिर शालग्रामी नाम नदी में स्नान करके हिमिगिरि को जा-
य वहाँ से फिर कौशिकी के तट पर पहुँचै ॥ ३१ ॥

३३ - और दान से पंचम रूख को रोवाने मो असुं नाम तक जान असुं सागरा
दी से चौर सागरा मी नदी में आसन करके बाजल प्रीत के पास जा
और दान से चौर कुशुकी नदी के کنار से प्रीत -

सू. नत्वा कामेश्वरं लिङ्गं पुनः सिंहेश्वरं व्रजेत्। समा-
प्यनियमं तत्र पुनरायात्स्वमालयम् ॥ ३२ ॥

दो. कामेश्वरशिवप्रणतिकरिलहि सिंहेश्वरनाम। त-
हें निजनियम समाप्त करितव आवै निजधाम ॥ ३२ ॥

टी. तब कामेश्वर नाम महादेव को प्रणाम करै फिर सिंहे-
श्वर स्थान को आवै वहाँ पर अपना नियम समाप्त कर
के अपने घर को आवै ॥ ३२ ॥

३४ - तब कामेश्वर मादिको प्रणाम करके चौर सागरा सिंहा मी जा
दान पर अपने निम को पुरा करके अपने गृह को जा -

सू. मनोवाक्कायजनितं पातकं चोपपातकं। सर्वं

नश्येत्प्रयत्नेनसर्वकामानवाप्नुयात् ॥३३॥

दो. कायिकवाचिकमानसिकअरु उपपातकजेत । स-
कलनाशकरियत्प्रयुतसर्वकामनालेत ॥ ३३ ॥

टी. हे मुनि उस मनुष्य को कायिक और वाचिक और मा-
नसिक और उपपातक अर्थात् जो दैविक होजाते हैं यह स-
मूर्ण पाप नाश होजाते हैं और उसकीसब कामना पूरी
जाती हैं ॥ ३३ ॥

३३ - हे मुनि इसी प्रकार करने वाले का पाप ख़ाह वह पाप करने से
या कर्ने से या जीमिन रकने से ख़ाह दुप्रीमिनी ख़िबी ख़ोसब ज़ोठ जाता है
और अस्की सब कामना पूरी होती है -

मू. प्रीयन्तेपितरस्तस्यप्रीयन्तेतस्यदेवताः । प्रीय-
तेराघवीरामःस्वशक्त्यासीतयासह ॥ ३४ ॥

दो. तृप्तहोतताकेषितरतृप्ततासुसबदेव । तृप्तहो-
तरघुनाथसहसीताशक्तिअभिव ॥ ३४ ॥

टी. और उसके ऊपर उसके पितर और देवता और सीता
सहित रघुनाथ तृप्त होजाते हैं ॥ ३४ ॥

३४ - और असेर दोता और असेर और सीता राम जी सब दोता परसून ख़ोते हैं -

मू. एवंहिवृहतीयात्रावर्णिताब्रह्मवादिभिः । तत्रा-
शक्तोजनःकश्चित्युरीमात्रंपरिभ्रमेत् ॥ ३५ ॥

दो. यहवृहतीयात्राकहतब्रह्मवादिगुणधाम । ते-
हितेजीवेशक्तिजनपुरीमात्रविश्राम ॥ ३५ ॥

टी. यह तो वृहती यात्रा ब्रह्मवादी अर्थात् ब्रह्मके जाननेवा-
लों ने कहा है और जो लोग असमर्थ हों वह पुरी मात्र की परि-
क्रमा करते ॥ ३५ ॥

३५- इस जात्रा को ब्रह्मके जानने वाले लोग ब्रह्मवादी अर्थात् ब्रह्मके जाननेवालों
जात्रा की शक्ति ताकत नवोदय के लिए ब्रह्मवादी अर्थात् ब्रह्मके जाननेवालों
जात्रा की शक्ति ताकत नवोदय के लिए ब्रह्मवादी अर्थात् ब्रह्मके जाननेवालों

सू. कल्याणेश्वरमारभ्यनिवसेद्गिरिजालये । पुनर्ज-
लेश्वरंगत्वापुनःक्षीरेश्वरं व्रजेत् ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

दो. कल्याणेश्वरतेचलैनिवसेगिरिजाधाम । बहुरि-
जलेश्वरजायपुनिक्षीरेश्वरविश्राम ॥ ३६ ॥

टी. कल्याणेश्वर से आरम्भ करके गिरिजा स्थान पर रहें व
हाँ से चल कर जलेश्वर पर रहें फिर वहाँ से चल कर क्षीरेश्व-
र में दर्शन करके रहें ॥ ३६ ॥

३६- इस प्रकार प्रकृत्या निश्चय से चले और रात को गिरिजास्थान पर रहे पुरुष
जलेश्वर में आकर रहे और वहाँ से चिपिरी निश्चय में दर्शन करके रहे ॥ ३६ ॥

सू. विश्रम्यधनुषस्थानेपुनःकल्याणपीठके । एवंपं-
चान्हिकीप्रोक्तामिथिलायाःपरिक्रमा ॥ ३७ ॥

दो. धनुषक्षेत्रविश्रामकरिकल्याणेश्वरजाय । पंचा-
न्हिकतिरभूक्तिकेपरिकरामुनिराय ॥ ३७ ॥

टी. वहाँ से चल कर धनुष क्षेत्र पर विश्राम करके फिर क-
ल्याणेश्वर क्षेत्र पर जाय यह पञ्चाह्निक परिक्रमा मैंने व-
र्णन किया ॥ ३७ ॥

۳۷۔ اور وہاں سے دھنشن استھان میں آکر رہے اور وہاں سے چکر پھر
اسی کا یا نیشور استھان میں آوے اسکو پتیا ہنک پر گراما کہتے ہیں۔

س. प्रलापम्बविलापम्बामिथ्याभाषणमेववा । अस-
द्वार्त्तादिकं सर्व्ववर्जयेत्साधकी नमः ॥ ३८ ॥

دو. मिथ्यावचनविलापतजिःप्रुप्रलापतजिमौन ।
असद्वार्त्ताच्छाडिसवउत्तमसाधकतौन ॥ ३८ ॥

دی. और प्रलाप अर्थात् बात का बढ़ावा और विलाप और
मिथ्या भाषण और असद्वार्त्ता अर्थात् निन्दित वार्त्ता छो
ड देवै यह उत्तम साधक है ॥ ३८ ॥

۳۸۔ اور پُرگرمین فضول گوئی اور پلاپ اور جھوٹ اور غیبت وغیرہ سے
پرہیز کرے وہ عمدہ سا دھک ہے۔

स. पूर्व्वोक्तविधिनासम्यक्ब्रह्मचर्य्यव्रतस्थितः। वा-
नेनिष्ठीवनोद्गारमलमूत्रादिचोत्सृजेत् ॥ ३९ ॥

دی. पूर्व्वोक्तविधिके सहितब्रह्मचर्य्यव्रतदीख। नि-
ष्ठीवनउद्गारपुनिवामेमूत्रपुरीख ॥ ३९ ॥

دی. और जो विधि प्रथम कह आये हैं उसको सम्यक् प्र-
कार करके ब्रह्मचर्य्यव्रत रखै और निष्ठीवन अर्थात्

थूक खरार और मल मूत्रादि वायें तरफ करै ॥ ३९ ॥

۳۹۔ اور پہلی پُرگرمائی بدھ کے موافق اس پُرگرمین بھی برہم چرچ برت
رکھے اور شہوک گھٹا کر غلیظ پیشاب وغیرہ بائیں طرف کرے۔

स. अयथनिच रन्मौख्यानः प्राप्नोति किल्बिषम्

प्रयातिचाधर्मां ल्लोकान् रामद्वेषी भवेत्सुः ४०

शे. कौञ्जन्यथाच्छाडिबिधिसो नयावत पाप । लहै
अधमगतिलोकपुनिरामद्वेह अरुताप ॥ ४० ॥

शे. जो कोई मूर्खता से आचार छोड़कर अनाचार करता
है उसको पाप होता है और वह श्रीरामचन्द्रजी से शत्रुता
को पाकर अधर्मलोक अर्थात् नरक में जाता है ॥ ४० ॥

५०. جو کوئی جنابالت سے آچار بجا چھوڑ کر آناچار کرتا ہے اسکو پاپ ہوتا
ہے اور رام چندر جی کا دشمن ہو کر نرک میں جاتا ہے۔

मू. तस्माच्छुद्धतनुःशान्तोभजनराममनन्यधीः । फ
रिक्वान्तेलभेत्मुक्तिलोके मुक्ति तथापरे ॥ ४१ ॥

शे. तातेभजैमनन्यधीरामशुद्धतनुशान्त । लोकमु
क्तिपरमुक्तिलहकरतमात्रपरिकान्त ॥ ४१ ॥

शे. इसरास्ते शुद्ध शरीर और शान्त और अनन्य अर्थात्
सर्वत्र व्यापक बुद्धि करके श्रीरामचन्द्र की सेवा कर इस प्र
कार परिक्रमा करने से मनुष्य लोक में नाना प्रकार के भोग
और परलोक में परम मुक्ति पाता है ॥ ४१ ॥

५१. پس آدمی کو چاہیے کہ اپنا سبھاوشائنت اور شریکوشدہ رکھراؤ
را چندر جی کو مرتب بیانی سمجھکر انکی سیوا کرے اس طرح کی پرکراما کرنے سے
سنارین ہر طرح کے نیک بھوک کرانت کو مکت پاتا ہے۔

मू. मध्यमासाभवेद्यात्रा सर्वाधी घनिवारिणी । त
चाप्यशक्तश्चेत्कश्चित्परिकान्तोऽन्तरंगुहम् ४२

श्री. सोमध्यमयात्राभयो सर्वपापविनिवारि। तेहि
अशक्तपरिक्रमा अन्तरगृहनिरधारि ॥ ४२ ॥

श्री. यह परिक्रमा जो मैंने बर्णन किया सो मध्यमा है इ-
सके करने से सम्पूर्ण पाप नाश होजाते हैं जो मनुष्य इस
परिक्रमा के करने में भी असर्थ हो तो अन्तर्गृही परिक्रमा करे ॥ ४२ ॥
५५- ये प्रेरक राजा जो ओपिरी गयीं तब ही कसती है। ये प्रेरक मास या पुनकी नास करनी
है। इस किसी से ये प्रेरक मास भी नोसके। वह मरि अन्तर्गृही की प्रेरक मास करे।

श्री. गङ्गासागरमा रभ्यस्नानयात्रां समाभित। ध-
नुःक्षेत्रं पुनः स्नात्वा पुरन्दरसरोव्रजेत् ॥ ४३ ॥

श्री. गङ्गासागरते चलै नियमधरैः स्नान। धनुष
क्षेत्रमहन्हायके पुरन्दरसरन्धान ॥ ४३ ॥

श्री. गङ्गासागर से प्रारम्भ करे स्नान यात्रा नियम करके धनु-
षक्षेत्र में स्नान करे तब पुरन्दर नाम सरोवर को जाय ॥ ४३ ॥
५५- मिन गङ्गासागर मिन स्नान करके जात्रा शुरू करे। पुरन्दर सरोवर
मिन स्नान करे। पुरन्दर नाम सरोवर मिन स्नान करे।

श्री. कौशलेन्द्रसरोगत्वास्नात्वा वैजानकी हृदे। व-
ह्निकुण्डं समागत्य मध्यमं कुण्डमाव्रजेत् ॥ ४४ ॥

श्री. कौशलेन्द्रसरन्हायके हृदजानकी नहाय। वह्नि
कुण्डं स्नानकरि कुण्डमध्यमा जाय ॥ ४४ ॥

श्री. दशरथ सरोवर में स्नान करके तब जानकी कुण्ड तब
अग्नि कुण्ड तब मध्यमा कुण्ड में स्नान करे ॥ ४४ ॥

۴۴۔ پھر دس مرتبہ تالاب میں اسنان کر کے جانکی گنڈ میں اسنان کرے
وہاں سے اگن گنڈ میں پھر مڑھا گنڈ میں اسنان کرے۔

مू. रत्नसागरमागत्य कौडिन्यसरोव्रजेत् । अ-
ङ्गरागभिधंतीर्यं गत्वा वैसाधकोत्तमः ॥ ४५ ॥

दो. रत्नसागरहिन्हायके कौडिनसरश्चस्नान । अ-
ङ्गरागतीर्यगयेसाधकउत्तमजान ॥ ४५ ॥

टी. और रत्न सागर में जाकर स्नान करे तब कौडिन्य सरो-
वर को जाय वहाँ से अङ्गराग नाम सरोवर को जाय जो ऐ-
सा करे वह उत्तम साधक है ॥ ४५ ॥

ॴॵ - पुरुवान से रत्न सागर में जाकर اسنان کرے پھر گنڈن تالاب
میں پھر اگن گنڈ تالاب میں اسنان کرے ایسا کرنا والا اچھ سا دھک کھاتا ہے

मू. पुनर्लक्ष्मणकुण्डे तु गत्वा गङ्गासरः पुनः । स्ना-
नादिकं विधायेत्यं लोकपूज्यो भवेन्नरः ॥ ४६ ॥

दो. लक्ष्मणकुण्डे न हाय पुनि गङ्गासागर जाय ।
या विधिजोकर इतर नर लोक पूज्यता पाय ४६

टी. फिर लक्ष्मण कुण्ड में स्नान करे तब गङ्गासागर में स्नान
करे इस रीति से स्नान करने से पापी मनुष्य भी लोक में पू-
ज्य होजाता है ॥ ४६ ॥

ॴॶ - بعد اسکے لچھن گنڈ میں اسنان کر کے پھر اسی گنگا ساگر میں اسنان کرے
اس طرح اسنان کرنے سے پاپی آدمی بھی لوگ پوج ہو جاتا ہے۔

मू. सर्वसिद्धिमवाप्नोति जनः प्रक्षीणकल्मषः ।

तत्रस्थाने महाभाग प्रयश्चित्तमिदं परम् ॥ ४७ ॥
 दो. सर्वसिद्धिकोलहतजनहोतसकलग्रहहान ।
 महाभागवदधामसहिप्रायश्चित्तसुजान ॥ ४७ ॥
 टी. और वह मनुष्य सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त होता है और
 उसके सम्पूर्ण पाप छूट जाते हैं हे महा भाग मिडिलापुरी
 की यात्रा सम्पूर्ण पापों का परम प्रायश्चित्त है अर्थात् कि
 शेष शोधन है ॥ ४७ ॥

۴۷ - اور وہ سب سیدھیوں کو حاصل کرتا ہے اور اسکے بپا پناش
 ہو جاتے ہیں ہے مہا بھاگ سہیل پری کی جا ترا سب پا پون کے چھوٹ
 جانیکے واسطے پریشیت یعنی کفارہ اعظم ہے -

मू. तत्राप्यशक्तः कश्चिच्चेन दृष्ट्या इह र्मसाधनं । स-
 हायं वा यथाशक्तिकुर्याद्द्वामार्गशोधनं ॥ ४८ ॥
 दो. ताहूते जो अशक्त नर करे धर्म गृह तौन । वे स-
 हायनिजबलसरिसमारगशोधनजौन ॥ ४८ ॥

टी. और जो मनुष्य इस परिक्रमा के करने में भी असम-
 र्थ हो वह धर्मशाला बनवा देवै और जो यह भी न हो स-
 कै तो परिक्रमा करने वाले को राह रच दे देवै अथवा रा-
 स्ता दुस्त कर देवै ॥ ४८ ॥

۴۸ - اور جس کسی سے یہ پرگرام بھی ادا نہ ہو سکے تو وہ دھرم شالا بنوادے
 یا کسی دوسرے پرگرام کرنے والے کو راہ خرچ دے دے یا وہاں
 کاراستہ درست کرادپوے -

मू. परिक्रमावतां पुण्यं सोप्यवा प्रोत्सु सं-
शयः ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥

दी. परिक्रमाजोकरत है सो फल पुण्य समेत । तेनर
ता सुसमान सब विनु संशय करलेत ॥ ४६ ॥

टी. जो मनुष्य ऐसा करता है उसको भी परिक्रमा करने
वाले के समान पुण्य होता है इसमें संदेह नहीं है ॥ ४६ ॥
५१) इसी क्रिया को (मिथिली) राह खर्च देने वाले या राहें ठीक करवा देने
वाले को) भी प्रोत्साहित करने का प्रयत्न होता है। इसमें कुछ शक नहीं है।

इति श्री बृहद्विष्णु पुरा- णोपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ३

सो. भयोपञ्चदशध्यायबृहद्विष्णुपुराणके देव-
सुवन कह गाय भाषा त्रय अध्याय करि ॥ ५ ॥

मू. पराशर उवाच ॥ कौशलेन्द्र सरः स्नायान्मा-
र्गमासे विशेषतः । मार्गैश्चैमण्डनं तीर्थपा-
दप्रक्षालनं सरः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

दी. पुनिपाराशर मुनि कहे कौशलेन्द्र सरतात । मण्ड-
नपगधोवन सहित मार्गमास अज्ञान ॥ १ ॥

टी. फिर पराशर जी बोले कि हे मुनि दशरथं सरोवर और
मण्डन सरोवर और पगधोवन सरोवर का स्नान अगहन

مہینے میں विशेष فलदायक है ॥ २ ॥

بریدیشن پران کا سولہواں آدھیا

۱۔ برائشترجی کہتے ہیں کہ ہمن دشرتھ تالاب اورشدن تالاب اور پاو پرچھالن تالاب میں اگن مہینہ میں اسٹان کرنے سے بڑا بھل ہوتا ہے۔

م۔ رام لکھماں سیتا ناں سرانسی فلدانہی ۱ پو۔

پہنچھ سر: سنا یا تپو اہی ما یاں विशेषत: ۱ ۲

دو۔ رام لکھماں اچھ سہی سر فلد کو دا یہی نیدر

پوشنچھ سر نہا ڈی پورا ما سی विशेष ॥ ۲ ॥

دی۔ چور فلد کا دینے والا رام سरोवर چور لکھماں سरोवर چور سیتا سरोवर کا بھی سناں اچھ مہینے میں کرنا چاہیے چور پوش مہینے میں چھ سر سरोवर کا سناں کرے چور پوش کی پوریا ما سی کو اسکا سناں विशेष فلد ہے ॥ ۲ ॥

۲۔ اور رام ساگر اور لچھن تالاب اور سیتا تالاب کا اسٹان بھی اگن مہینہ میں کرنا چاہیے اور پوس مہینہ میں رچھ تالاب کا اسٹان بہت پش دینے والا ہے مخصوص پورن ماسی کے دن۔

م۔ پورندر سरोमाघपञ्चम्यांशोभनेशुभम् ۱ فا۔

لگن پوریا ما یا اچھ وھن کوا ڈی مہا فلد ۱ ۳

دو۔ پورندر سरोमाघकेपञ्चमिशोभनयोग ۱ فا۔

لگن سا کا اچھ نیدر نہا ی مہا فلد بوج ۱ ۳

دی۔ چور ماघ शुक्ल पञ्चमी शोभन नाम योग में पुरन्दरसर

में स्नान करे और फाल्गुन पूर्णिमा को अग्नि कुण्ड में स्नान करने से महा फल होता है ॥ ३॥

३३ - اور مالکھ شکل نخمی شو بھن بنوں میں پرندرتالاب میں اسنان کرے اور بھاگن مہینہ کی پور نماسی دن اگن کند میں اسنان کرنے سے بہت بھل ملتا ہے -

मू. चैत्रशुक्लनवम्याञ्चस्नायाद्वैरत्नसागरे। धौ-
तपापंतुवैशाखे तृतीयायां महाफलं ॥ ४ ॥

दो. चैत्रशुक्लनवमी स्नान रत्नसागरहिजा-
न । माघवतृतीया धौत अघमहाफ-
लद अस्नान ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

ती. और चैत्र शुक्ल नवमी को रत्नसागर में स्नान करे और वैशाख शुक्ल तृतीया को धुतपापा में स्नान करे तो महा फल प्राप्त हो ॥ ४ ॥

३४ - اور چیت سدی نوی کو رتن ساگر میں اسنان کرے اور بیساکھ سدی تیج کو دھوت پایا میں اسنان کرنے سے بہت بھل ہوتا ہے -

मू. ज्येष्ठशुक्लदशम्यान्तुगङ्गातीर्थं विशिष्यते ।

आषाढस्यान्तिमेस्नायादीर्घिकायां विशेषतः ॥ ५ ॥

दो. ज्येष्ठशुक्लदशमीतिथिदिगङ्गासागरन्हाता अ-
रुअषाढकी पूर्णिमा स्नयन दीर्घिका जात ॥ ५ ॥

ती. और ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को गङ्गासागर में स्नान करे और आषाढ की पूर्णिमासी को दीर्घिका में विशेष

करके स्नान करना चाहिये ॥ ५ ॥

۵ - اور بیٹھ سیدی دشمنی کو گنگا ساگر میں اسنان کرے اور اسٹھ کی پورناسی کو دیر گھنٹا میں خاص کر غسل کرنا چاہیے۔

सू. आवणो बलरामस्य तीर्थपुण्यमथांतिमे । भाद्र
महर्षिपञ्चमांस्नातव्यं भार्गवंसरः ॥ ६ ॥

दो. आवण जमवस्यास्य पन्नतीर्थपुण्यबलिराम
भाद्रौ ऋषिकैपञ्चमी भार्गवसरः अनुपामा ६ ।

टी. और आवण की जमावस्था को बलिराम सरोवर में
और भाद्रों शुक्ल पञ्चमी को भार्गव सरोवर में स्नान क-
रने का महा फल है ॥ ६ ॥

۶ - اور ساون کی اماوس کو بلرام تالاب میں اور بجا دون کی شکل چچی کو بجا کر
تالاب میں اسنان کرے۔

सू. आश्विनेऽमृतकुण्डस्य स्नानं सर्वघनाशनं ।
कार्तिके तु चतुर्दश्यां स्नातव्या वैष्विनी ॥ ७ ॥

दो. आश्विनि अमृतकुण्ड में स्नान सर्वघनाश ।
कार्तिक मास चतुर्दशी पयस्विनी शुभराश ॥ ७ ॥

टी. आश्विन मास में अमृत कुण्ड में स्नान करने से और
कार्तिक मास में पयस्विनी सरोवर में स्नान करने से सब
पाप नाश होजाते हैं ॥ ७ ॥

۷ - اور گنڈ اور عینہ میں لہرت گنڈ اور کانتک میں سے پستونی تالاب میں اسنان
کرنے سے سب پاپ چھوٹ جاتے ہیں۔

मू. एवं साम्बत्सरीयात्रा कालिकाले महाफला वि
शेषेण महाभाग नवम्यां रामजन्मनि ॥ ८ ॥

दो. याविधि वारह मास हू काल काल शुभदानि। या-
त्रामिथिला अधिक फल रामजन्म दिन जानि ८

टी. इस प्रकार वर्ष दिन तक पर्व पर्व में (जो ऊपर क-
ह जाये हैं) स्नान करने से महा फल होता है और वि-
शेष करके राम नवमी को और भी अधिक फल है ॥ ८ ॥

८ - اسطرح سے سال بھترک وقت وقت پر جبکا بیان پور ہو چکا ہے
جاتا اور اسنان کرنے سے بہت بہت پھل ملتا ہے خصوصاً رام نومی
میں اسنان کرنے سے اور بھی زیادہ پھل ہوتا ہے۔

मू. जानकी जन्मवारेपि विवाहा हेतयै वच। स
र्वेषां स्नानदानादि महापुण्यफलप्रदं ॥ ९ ॥

दो. बहुरिजानकी जन्म दिन अरु विवाह दिन जानि
सब सरसज्जनदातयुत महापुण्यफलदानि ९

टी. और श्री जानकी जी के जन्म के दिन जो वैशाख शु-
क्ल नवमी को होता है उस दिन सब सरोवरों का स्नान
और दान महा पुण्य और फल का देने वाला है ॥ ९ ॥

९ - اور شری جانکی جی کے جنم کے دن یعنی بیساکھ سدی نومی کے دن سب
تالابوں میں اسنان اور دان کرنے سے بہت پھل اور پھل ہوتا ہے۔

मू. कैलिकीं काथनि स्नात्वा येनै कनला तथा।।

दुर्गाविल्लके तिनिके तिनिके यमुना तथा ॥ १० ॥

دو. کوشیکیتی بے شاکھ مے کم لاما غ سنان ۱۔

گھن ویل و بئی دودھای مونا کاتیک مان ۱۲۰ ۱

دو. اور کوشیکی مے بے شاکھ اور کم لاما مے ماغ اور
دودھ و بئی اور ویل و بئی مے آگھن اور ی مونا مے کا
تیک مے سنان کرنا چاہیے ۱۲۰ ۱

۱۰۔ اور کوشکی مین بیساکھ اور کم لاما مین ماگھ اور دودھ و بئی اور بھوتی مین
اگھن اور جمنائ مین کاتیک مین مین مین اسنان کرنا چاہیے۔

م. بھوسی گے ریکا چے و ما شینے فلال ماما ۱۔

دو۔ جلا دیکا پو ایا جے بے بیا و بئی تھیا ۱۲۱ ۱

دو. بھوسی اگھن پونی گے ریکا آ شین ماسن ہای
ما دے مہا دین جلا دیکا جے بے بیا و بئی تھیا ۱۲۱ ۱

دو. اور بھوسی اور گے ریکا مے آ شین اور جلا دیکا
کا مے ما دے اور بیا و بئی مے جے بے ماس مے سنان کر
نے کا بھوت فلال ہوتا ہے ۱۲۱ ۱

۱۱۔ اور بھوسی اور گے ریکا مین کونار اور جلا و حکا مین بھادون اور بیا گھرتی
مین جے بے مین مین اسنان کرنے کا بہت بھل ہے۔

م. ویرجا آ و ا پو ایا م اڈنا فالا مین ماما ۱۔

دو۔ ا و بئی تھیا پو بے بے بے لکھ ماما شوما ۱۲۲ ۱

دو. ویرجا آ و ا اڈنا م اڈنا فالا مین مہا ۱۔
ماس دھ ا و بئی بے بے لکھ ماما جا دھ ۱۲۲ ۱ ۱۲۲ ۱

دو. ویرجا مے آ و ا اور م اڈنا مے فالا مین اور اڈنا

वती में पूष और लक्ष्मण में चैव महीने में स्नान करने से बड़ा पुण्य होता है ॥ १२ ॥

१२ - اور برجامین ساون اور سنڈنا میں پھاگن اور اچھاوتی میں پوس اور لچھنا میں چیت مینے میں اسنان کرنیکا بڑا پتن ہے -

मू. वाग्वतीफाल्गुनेशस्तागण्डकीचापिकार्तिके मलमासेविशेषेणगैरिकाफलदायिनी ॥ १३ ॥

दो. फागुनवागवतीस्नपननाशयणितुलमास। फलविशेषमलमासमेंस्नपनगैरिकाभासा ॥ १३ ॥

टी. और फाल्गुन में वाग्वती का स्नान और कार्तिक में गण्डकी का स्नान और मलमास में गैरिका का स्नान विशेष फल का देने वाला है ॥ १३ ॥

१३ - اور پھاگن مینے میں باگوती का اسنان اور कात् में گنڈकी का اور मलमास में गैरिका का اسنان बहुत पछल दाईक है -

मू. चन्द्रसूर्योपरागेषुसर्वानद्यःशुभावहाः। निःकामानांसकामानानियमोनात्रविद्यते ॥ १४ ॥

दो. चन्द्रसूर्यकेपर्वमेंसर्वनदीशुभहोय। कामाकामनियमनहींतहाँकहतकविकोय ॥ १४ ॥

टी. चन्द्रग्रहण और सूर्य ग्रहण में विशेष करके इन नदियों में स्नान करने से पुण्य होता है चाहे कोई कामना युक्त स्नान करे चाहे निष्काम ॥ १४ ॥

१४ - چندرگر من اور سورج گر من میں ان ندیوں میں اسنان کرنے سے

کین ضرور ہوتا ہے چاہے کوئی مراد پوری ہونے کی امید سے اسنان کری یا بلا مراد۔

م. سرانسی پوٹھاریا یچ مارگ شیبہ विशेषतः। चै-
चैवैस्तानतः पुणानवम्यां माधवे तथा ॥ १५ ॥

दो. पुष्करणी अरु सरजिते अगहन पुणाय विशेष। चै-
चनवमिवैशाख पुनि स्नपन पुणाय मयलेषा ॥ १५ ॥

टी. शरोवर और पुष्करणी अगहन महीने में विशेष पु-
णाय होकर फलदायक है इसी प्रकार चैत्र शुक्ल नवमी
और वैशाख शुक्ल नवमी में भी स्नान उन नदियों का फ-
लदायक होता है ॥ १५ ॥

۱۵۔ سب تالاب اور نیکر جگہ نام اوپر کہے گئے ہیں مخصوص آگن مینے مین پین
اور پھل کے دینے والے ہیں اور اس طرح چیت سدی نوئی اور بنیا کم سدی
نوئی کو بھی اسنان ان نڈیوں کا پھل دیک ہے۔

मू. विशेषेण महाभाग स्नान पंच पर्वसु। पुणाय
योगेषु सर्वेषु नात्र कार्या विचारणा ॥ १६ ॥

दो. पञ्च पर्व स्नान शुभ प्रति विशेष शृणुतात। पु-
णाय योग सब ताहि मे न हि विचार करवात ॥ १६ ॥

टी. हे महा भाग पांचों पर्व अर्थात् पूर्णिमा १ अमाव-
स्या २ षष्ठी ३ अष्टमी ४ चतुर्दशी ५ और सब पुणाय योग
में भी बिना विचार स्नान करना चाहिये ॥ १६ ॥

۱۶۔ اسے مہا بھاگ پانچو پربت مینی پورٹھاسی اماؤس چھٹھ اشٹمی اور
چتر دشی مین بھی بلا پس و پیش اسنان کرنا چاہیے۔

मू. नवरात्रद्वयेदेव्यः पूजनीयाः प्रयत्नतः । सर्वे
 शिवाधिवासाश्च फाल्गुने शाम्भवे तिथौ १७
 दो. नवरात्रायुतयत्नयुतपूजे देवी रास । व्रतसह
 फाल्गुनशिवतिथिहिं पूजे सबशिववास । १७ ।
 टी. और दोनों नवरात्रि में यत्न पूर्वक देवीजी की पूजा और
 र फाल्गुन कृष्णचतुर्दशी में शिवजी की पूजा करना चाहिये १७
 १८ - اور دونوں نوراत्र میں (یعنی چیت اور کٹوار میں) دیوی جی کی پوجا اور
 پھاگن کرشن چتر دشی میں نما دیوی جی کی پوجا کرنا چاہیے -

मू. एवं यात्राक्रमः प्रोक्तो मिथिलावासिनामुने ।
 नकालनियमस्तेषां ये प्राप्ताहूरदेशतः ॥ १८ ॥
 दो. यह प्रकार यात्रा कृत्यो मिथिलावासीन हेत । का
 लनियमताको नही जस दूर देश निकेत ॥ १८ ॥
 टी. इस प्रकार यह यात्रा मिथिला देश वासी लोगों के वास्ते
 मैंने बर्णन किया और जो लोग दूर देश में बसते हैं उन
 के वास्ते काल नियम नहीं है ॥ १८ ॥

१८ - یہ طریق جاत्रا کا مستحکم دیش میں رہنے والوں کے واسطے ہے
 اور جو لوگ دُور دراز ملکوں سے جاत्रا کرنے کے واسطے آتے ہیں انکے واسطے
 ان وقتوں کی قید و لحاظ جو اوپر بیان کیے گئے ہیں مقرر نہیں ہے -

मू. मिथिलावासमासाद्यजीवन्मुक्तो भवेत्तरः । दे-
 हान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते ॥ १९ ॥
 दो. मिथिलाजोनरवास कर होत सुजीवन मुक्त ।

دهتजेरघुपतिमिलैमोदकरैजनयुक्त ॥ १६ ॥

دی: میثیلا میں واس کر کے منوषی جیونمکت ہو جاتا ہے
 اور شہر تیاگ کرنے پر سہی رامچند جی کے پاس پہنچ
 کر ان کے بھکتوں کے ساتھ آناوند کرتا ہے ॥ ۱۶ ॥

۱۹ - متحلاً پری کے رہنے والے جیون مکت ہیں اور شہر تیاگ کرنے پر پری
 راجندر جی کے پاس پہنچ کر ان کے بھکتوں کے ساتھ رہ کر عیش کرتے ہیں۔

मू. स्नानदानतपोहोमोदेवतार्चनवन्दनम्। इष्टा
 पूर्त्तिकंसर्वमिथिलायामहाफल ॥ २० ॥

دی: स्नानदानतपोहोमञ्जरुञ्चनवन्दनदेव। इष्टा
 पूर्त्तिकहेतुसबमिथिलाञ्जतिफलसेव ॥ २० ॥

دی: میثیلا میں سناان اور دان اور جپ اور ہوم اور
 دےوتاؤں کا پوجن اور بندن اور دشتا پرتی اچھا
 مورتی پرتیستا اور جلا شہر کارا اچھا کھپ سہوہر
 دتیا دی بنوانے کا اچھانت فیل ہوتا ہے ॥ ۲۰ ॥

۲۰ - متحلاً پری میں آسان دان جب ہوم دیو تو تیا پوجن آست
 مورت استھاپن کنوان تلاب وغیرہ بنوانے کا بہت پھل ہوتا ہے۔

मू. विशेषेणप्रतिष्ठायाःफलंवक्तुंनशक्यते। नि-
 र्मायसौधशिररथेनसंस्थाप्यतेहरिः ॥ २१ ॥

دی: फलविशेषनहिकहिसकौपरतिष्ठाकरजेत। सौ-
 धशिररनिर्माणकरिहरिहियापिजेदेत ॥ २१ ॥

دی: प्रतिष्ठा का फल में विशेष पूर्वक नही कह सका है

जो कोई मिथिला में मन्दिर बनवाकर उसमें भगवान की प्रतिमा स्थापन करता है ॥ २१ ॥

۲۱- اور پرستھا کر نیکا پھل میں کمان تک کہوں کہ مستحکم پڑی میں مندر بنوا کر آسمین بھگوان کی مورت استھاپن کرنے سے -

मू. समुक्तसञ्चितैःपापैःप्रारब्धैश्चविशेषतः।जी-
वन्मुक्ततमोभूत्वाहरेःसायुज्यमाप्नुयात्॥२२॥

शे. जो प्रारब्ध विशेष सहसञ्चित पाप नशाय। जी-
वन्मुक्त सुहोय नर हरि सायुज्य हि पाय ॥ २२ ॥

टी. वह सम्पूर्ण सञ्चित पाप अर्थात् कितने जन्म के इक-
ठा हुए पाप और प्रारब्ध कृत पापों से छूट कर जीवन्मु-
क्त होकर भगवान् में मिलजाता है ॥ २२ ॥

۲۲- کتنے ہی جنم کا کیا ہوا پاپ ہو یا پر آر بندھ کا پاپ ہو سب پاپوں سے
چھوٹ کر جیون مکت پاکر ساکشات بھگوان میں ملجاتا ہے -

मू. योयोयांयांतनुंभक्तस्तत्तद्दृश्यदेवतं।संस्था-
प्यप्रतिमांपुण्यांतेषांलोकान्सगच्छति॥२३॥

शे. जो जो जातनुभक्त नर सो उदेश करि देव। प्रति-
मा स्थापन करि ल है ताके लोक न भवे ॥ २३ ॥

टी. जो मनुष्य जिस देवता की उपासना रखता है वह उ-
सी देवता का उदेश कर स्थापना करने से उसी देवता के
लोक में प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

۲۳- جو کوئی جس دیوتا کی ایا سنا کرتا ہو وہ اسی دیوتا کی استھاپنا کرے

ایسا کرنے سے وہ آدمی اسی دیوتا کے لوگ میں پہنچتا ہے۔

س. सर्वसाधनज्ञातेभ्यःप्रतिष्ठातुमहाफला।मि.
थिलायांविशेषेणधर्मसारमियंमता ॥२४॥

دو. सकलसाधनानेअधिकपरतिष्ठाफलमानु।मि.
थिलामाहिंविशेषकरिधर्मसारमतजानु २४

تر. सम्पूर्ण साधन से देवमूर्ति का स्थापन करना अधिक
फलदायक है और मिथिला में स्थापना करना विशेष क-
रके धर्मों का सार जानना चाहिये ॥२४॥

इति श्रीबृहद्विष्णुपुराणे षोडशोऽध्यायः ॥ १६॥४

दो. षोडशकेअध्याययहबृहद्विष्णुपुराण।देव-
सुवनभाषारच्योसुनतलहेसुखखान ॥ * ॥

۲۴ - دیوتا کی نورت کا استھاپن کرنا سب سادھن سے بڑھکر چل
دیک ہے خصوصاً متحلاً پڑی میں۔

س. मैत्रेय उवाच ॥ यएषमिथिलामध्येपि-
नाकःपरिदृश्यते । तस्यागमःप्रभावोयो
यद्यज्जानासिशंसमे ॥ १॥१॥१॥१॥१॥

دو. यहजोमिथिलामध्यधनुदेखियतनासुप्रभाव
अरुःआगमजानहुयथाकहहुमोहिमुनिगाव।१।

टी. फिर मैत्रेयजी ने पूँछा कि हे मुनि मिथिला में जो धनुष देखते हैं उसका आगमन और प्रभाव जो जो आप जानते हैं वह मुझसे बर्णन कीजिये ॥ १ ॥

بريد ليشن پيران کاسر سوان اوھيا کے

۱- پھر میرے جی کہنے لگے کہ ہے میں مہیلا پری میں جو دھنشن ہے اسکا پر بجاو اور اسکے آنے کا حال مفصل بیان کیجیے۔

मू. पाराशर उवाच ॥ सम्यक्पृष्टं त्वया ब्रह्म-
न्यदेतच्छांभवन्धनुः । तस्य प्रभावो ध-
र्मज्ञैर्विज्ञातो ब्रह्मलौकिकैः ॥ २ ॥ २ ॥

टी. पाराशर कह सुनहु मुनि यह जो शांभव चाप ।
जानत सब जग वेद विद पुण्य प्रभाव प्रताप ॥ २ ॥

टी. पाराशरजी कहते हैं कि हे मुनि यह जो श्री महादेव जी का धनुष मिथिला पुरी में है उसका वृत्तान्त जो तुमने पूँछा सो अच्छा प्रण किया इस धनुष का प्रभाव लोक धर्मी त्मा लोग और वेद के जानने वाले सब जानते हैं ॥ २ ॥

२- پراشر جی کہنے لگے کہ ہے میں ہادیو جی کا دھنشن جو مہیلا پری میں ہے اسکا حال جو آپ نے مجھے پوچھا وہ میں کہتا ہوں کہ اس دھنشن کا پر بجاو اور پرتاپ دھرماتا اور بید کے جاننے والے خوب جانتے ہیں۔

मू. पुरासुराणां क्षोभार्थं त्रिपुरं मयनिर्मितं । यत्र
स्थैर्दानवैर्देवा देवलोकात्पराजिताः ॥ ३ ॥

دو - پہلے سُر کو جہ لیلے تری پور اچھو مہ دے ت۔ تا
نیوا سدان بن تے پراجی ت سُر جے ت ॥ ۳ ॥

دی - پُور کال مے دے و تانوں کو پراجہ کرنے کے واسطے مہ نام دان بنے تین پوری نیمریا کیا چور اس پوری مے راکھ سوں ہی کو بساتا ان سمرپا راکھ سوں سے سب دے و تالوگ جب پراجی ت ہو گئے ॥ ۳ ॥

۳ - اگلے زمانہ میں مے نام داتوں نے دیوتوں کو مغلوب کر نیکی واسطے تین شہر راکھ سوں سے آباد کیے ان تینوں شہر کے راکھ سوں نے یکدل ہو کر سب دیوتوں کو شکست دی -

م - تدا بڑھنا جہا دے وے ویشو کرم پراچودیت : ۱
نیمریا یے دندھ نر تان شکرانہ وے دے ت ॥ ۴ ॥

دو - بڑھنا جلالہ دے و ت ب ویشو کرم ہیس م مایا سوں
سور کیکے ی ہ دھ نر تان دی ہو شیو کر جہا ی ۱ ۴ ۱

دی - تب اس تری پور راکھ سوں کے ناہ کرنے کے واسطے بڑھنا جی کی جہا سے ویشو کرم نے اس دھنور ت کو نیمریا کر کے مہا دے و جی کو دیا ॥ ۴ ॥

۴ - تب ان راکھ سوں کے ناہ کرنے واسطے برہما جی کے حکم سے بے کو کر مانے اس دھنور ت کو بنا کر مہا دیو جی کو دیا -

م - تے نہ و دھنور ت دے و ت دے و تری پور راکھ ۱ پون : پ
س بھو مہ گوان دے و ت سہ بکتی ت : ॥ ۵ ॥

دو - تہ دھنور ت کو پ دے و تری پور دے و تری پور کے ت ۱

पुनिप्रसन्नभगवानह्वैजनकभक्तिकेहेतु ५॥

गी. उसी धनुष से महादेवजी ने उन तीनों पुर को भस्म किया फिर देवरात अर्थात् जनकजीकीसेवा पर प्रसन्न हो कर भगवान् महादेवजी ने ॥ ५॥

५ - اسی دھنشن سے मादायोजी نے ان तीनों پر یعنی शहर को जला दिया पुर
मादायोजी की सेना पर मादायोजी को प्रसन्न होकर -

मू. न्यासभूतिमिरंतवस्थापितंहिपुरातनम्।

तदाप्रभृतितदंशैःपूजितंपरमंधनुः॥ ६॥

दी. न्यासभूतयेधनुषकोषापिदियोवहिर्गाह। ता
दिनसेतेहिबंशकेपूजतहैनरनाह ॥ ६ ॥

गी. उस धनुष को अपना दूसरा शरीर जानकर मिथिला पुरी में स्थापन कर दिया उस दिन से सब जनकबंशी लोग उस धनुष को महादेवजी का शरीर जानकर पूजा करने लगे ॥ ६॥

५ - اسی دھنشن کو اپنا ایک دوسرا شریر جان کر سखल میں استعین
कर दिया उस दिन से सब जनकबंशी लोग उस दहनश को मादायोजी का
शरीर जान कर पूजा करने लगे -

मू. परंपराक्रमात्प्राप्तंजनकस्यमहात्मनः। ते

नसंपूजितं ब्रह्मधनुस्सर्वाघनाशनम्॥ ७॥

दी. परंपराक्रमतेधनुषपायेजनकमहान। पू-
जहिंदिनप्रतिब्रह्मधनुःप्रघनाशकशुभसान्

टी. हे मुनि इस परंपरा क्रम से उस धनुष को जिसे विश्व-
कर्मा ने बनाया था जनकजी ने प्राप्त किया और उसका
पूजन करते थे वह धनुषसम्पूर्ण पापों के नाश करने में स
मर्थ है ॥ ७ ॥

६ - غرض اس طرح اس دھنش کو جو بستو کرما کا بنایا ہوا ہے
جنگ جی نے پایا اور وہ اسکی برابر پوجا کیا کرتے تھے یہ دھنش
سب پاؤں کا ناश کرنے والا ہے۔

मू. तस्यात्मजासमुत्पन्नाजानकीलोकविश्रुता
तस्याःस्वयम्बरमुत्सन्धनुरितदिनिश्चितं ॥ ८ ॥

टी. नामजानकीख्यातजगत्प्रतालह्योजवभूपती
हस्वयम्बरतासुप्रणखाडनधनुषन्नूप ॥ ८ ॥

टी. फिर जब महाराज श्री रघ्वज अर्थात् जनकजी के ज
ग विदित श्री जानकीजी नाम पुत्री उत्पन्न हुई तब उन
के स्वयम्बर में जनकजी ने यही प्रण किया कि जो कोई
इस धनुष को तोड़ेगा उसी को मैं यह कन्या दूंगा ॥ ८ ॥

७ - جب مہاراج شیردھوج یعنی جنگ جی کو جانکی جی لڑکی پیدا
ہوئیں تو جنگ جی نے اس لڑکی کے سویمیر میں یہی بات قرار دی
کہ جو کوئی اس دھنش کو توڑے گا اسکو میں یہ کنیا دوں گا۔

मू. कैश्चिन्नचालितं तच्च स्थानात् गुरुतरंधनुः ।
महादेवप्रभावेण स्वशक्त्या गौरवेण च ॥ ९ ॥

टी. गुरुतरधनुःस्थानतेयारिसक्यो को उ नाहिं

शिवप्रभावनिजशक्तिपुनिजतिगौरवतामाहिं

श्री. परन्तु कोई इस धनुष को उसके स्थान से टार भी न सका क्योंकि वह धनुष महादेवजी के प्रभाव से और ज्ञानी शक्ति करके भी अत्यन्त भारी था ॥६॥

१ - پر کوئی اس دھنیش کو جگہ سے بھی نہ ہلا سکا کیونکہ وہ دھنیش اول تو خود اپنی شکت سے اور دوسرے ماد یو جی کے پر بھاو سے بہت بھاری تھا

सू. कौशिकेनसहायातोरामोदशरथात्मजः। दि
दृश्यापिनाकस्ययज्ञवाटमुपागमत् ॥१०॥

श्री. कौशिकसहश्रीरामजूदशरथराजकुमार। दि
खनहितधनुयज्ञकोआयेनृपदरवार ॥१०॥

श्री. तहाँ पर विश्वामित्रजी के साथ श्रीदशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी आये ॥१०॥

१० - لیکن وہاں پر بیسوا میر کے ساتھ دھنیش جگہ دیکھنے کی خواہش سے دھنیش جی کے پتر شری رام چندر جی جو آئے -

सू. तेनचोत्यापिनंसज्यंविहृष्टंधनुसारवत्। म
ध्येभग्नंधनुर्भीममितिलोकेषुविश्रुतम् ॥११॥

श्री. तेउदावशिवधनुकठिनखैचतभैरवघोर। मध्य
भग्नकरिभीमधनुजानसकलजगशोर ॥११॥

श्री. और उन्होंने उस महा भयानक धनुष को उड़ाया और खींच कर बीच से तोड़ डाला जिसका शब्द तीनों लोक में फैल गया ॥११॥

۱۱۔ تو آنکھوں نے اس سے کہا بھائی! دھنیش کو اٹھا کر اور کھینچ کر سوجھ تو ردا
چاہئے اس کے کھینچنے اور ٹوٹنے کی آواز سے تینوں لوگ گونج اٹھے۔

س۔ तेदेन च्छां भवं दिव्य विश्व कर्म विनिर्मितं । द
धी च स्थि भवं चापं विख्यातं भुवन त्रये ॥ १२ ॥
دی۔ यह जो विश्व कर्मा रचित शिव धनुनि हुं पुरख्यात ।
अरु रधी चिके अस्थि से उत्पति दिव्य सुहात ॥ १२ ॥
دی۔ यह जो महादेवजी का धनुष रधीचिके अस्थि से उत्पन्न
तीनों लोक में विख्यात विश्वकर्मा के हाथ का
बनाया हुआ अत्यन्त दिव्य और ॥ १२ ॥

۱۲۔ چونکہ یہ دھنیش ماد یو جی کا اور راجا دیو جی کی بیٹی سے بسو کر
کا بنایا ہوا بہت خوشنما۔

س۔ श्रीरामस्य करस्य धनुखाडस्य दर्शनं । स
र्वाघो घहरं पुंसां सर्वक र्माङ्क मारज्जनम् १३
دی۔ रामचन्द्रकरपरशधनुखाडदर्शनजोकीन्ह । स
र्वाघो घविनिशिनरकर्मरखध्वैरीन्ह ॥ १३ ॥
دی۔ और श्री रामचन्द्रजी के हाथ का खुशा हुआ है इस
धनुष खाड का दर्शन सब पापों के नाश करने में समर्थ है ॥

۱۳۔ اور شری رام چندر جی کا ہاتھ لگایا ہوا ہے اسو جہ سے اس
دھنیش کھنڈ کا درشن سب طرح کے پاپوں کا ناسخ کر نوالا ہے۔

س۔ यथा रामेश्वरं लिङ्गं धनुषो दर्शनं तथा । अ
तिपात कजातानां शोधनं हितयं मतं ॥ १४ ॥

दो. रामेश्वरके लिङ्गजिमिधनुषदर्शतिमिजान

अतिपातकयुतजौननरशोधनकरमतिमान १४

टी. जिस किसी को महापाप नाश करने की इच्छा हो
वह रामेश्वर लिङ्ग का दर्शन करे नहीं तो धनुष खण्ड
का दर्शन करे ॥ १४ ॥

१४ - جو کوئی کسی طرح کا پاپ کئے ہوئے ہو وہ سیت بندر مشور کا दर्शन کرے
یا دھنیش کھنڈ کا दर्शन کرے تو اسکے سب پاپ چھوٹ جائیں -

मू. कलौयेनमहाभागकृतंयान्नादयंमुने । अम

रास्तंनमस्यन्तिजीवन्मुक्ततमोहिसः ॥ १५ ॥

दो. महाभागकलिमाहिजेगमनकरैरौउधाम । जी-

वन्मुक्तिहिपावतेहिसबसुरकरहिंप्रणाम ॥ १५ ॥

टी. और हे महाभाग जो मनुष्य कलियुग में रामेश्वर
लिङ्ग और धनुष का दर्शन करते हैं उन को सब देव
ता लोग प्रणाम करते हैं और वह जीवन्मुक्त होजाते-

हैं ॥ १५ ॥
१५ - اے مہا بھگ کالجگ میں سیت بندر مشور تک اور دھنیش کھنڈ کا
दर्शन جو کوئی کرتا ہے اسکو دیوتا لوگ پر نام کرتے ہیں اور وہ جیتے ہی मुक्त ہوजाते

मू. परलोकभयात्भीतास्तंनमस्यन्तियेनराः । तेपि

पापैर्विमुच्यन्तेप्रयातिशुभ्रगतिं ॥ १६ ॥

दो. उरतजोनरपरलोकभयताहि करेपरणाम । ते

पिसर्वत्रघनाशकरिलहशुभ्रगतिशुभ्रधाम १६

۱۳. اور جو مनुषیٰ مہا پاپوں کے کاراں پرلوق سے ڈر کر ان دونوں کو پرنام کرتے ہوں وہ بھی سب پاپوں سے کھڑ کر شوبگتی کو پراپن ہوتے ہوں ॥ ۱۳ ॥

۱۴۔ اور جو لوگ اپنے پاپوں کی وجہ سے پرلوق کا ڈرمان کران دونوں استقامتوں پر نام بھی کرتے ہیں تو سب پاپوں سے چھوٹ کر اچھی گت کو پہنچتے ہیں۔

س۔ مनुषیہ ہما سا اذیہن رامیشورنگتا: ۱ نیپا-
پیٹت مالو کے دے و تا کوشما جتا: ॥ ۱۴ ॥

دو۔ جو مनुषیٰ تان پاپ کے رامیشورنہ ہندے تی ۱ نی
ما جتا سور کوش کے پونی پاپیٹ وی شے تی ۱۴ ۱

جس کسی نے مनुषیٰ کا شریر پا کر رامیشورنہ
ہا دیو جی کا دشرن نہ کیا وہ مनुषیٰ اچتینن پاپی
ہے اور دے و نیندک کی گتی پاتا ہے ॥ ۱۴ ॥

۱۵۔ جس کسی نے گنگہ کا شریر پا کر سیت بندر امیشور کا دشرن نہ کیا
وہ برا پاپی ہے اور وہ دیو نندا کر نیوالے کی گت پاتا ہے۔

س۔ آلال سیا دھر دے شیا یے نیا نیا مہا مونی ۱ دھ-
پنڈے والو کالی ڈنگ سے توبندھ شیا رشی ت ۱ ۱۵ ॥

دو۔ آلال س اچت دھر دے شیا ڈر رامیشورنہ ہندے تی ۱ ن-
ہندے شت شیا لیک ڈنگ کے سے توبندھ شیا رشی ت ۱ ۱۵

۱۵۔ ہے مونی جس کسی نے آلال س کر کے اچتیا دھر
دے شیا س مکر سے توبندھ رامیشورنہ کا دشرن نہ کیا ۱ ۱۵ ۱

۱۰۔ اسے من آس کی وجہ سے یاد اور دراز خیال کر کے جس نے
سینت بند را میثور کا درشن کیا۔

سू. प्रयाश्चित्तं भवेत्तेषां घोरपापविशोधनं । मिथि-
लायां समागम्येदृष्टं यैः शाम्भवं धनुः ॥ १६ ॥

दो. प्रायश्चित्त यह ताहिको तौ न घोर जो पाप । शोध-
न मिथिला गमन करि देखै शंकस्वाप ॥ १६ ॥

श्री. उसके इस महा पाप का प्रायश्चित्त यह है कि मि-
थिला में जाकर धनुष का दर्शन करे इससे उसके स-
ब पाप नाश हो जायगे ॥ १६ ॥

१७- अस्के स पाप का प्रायश्चित्त भी है कि महेला में जाकर दहन्श का दर्शन
करे यिनी आकर नसे अस्के सब पाप चोठ जाते हैं -

सू. पापापनोदनं तेषां जायते तस्य दर्शनात् । तस्मा-
त्सर्वं प्रयत्नेन धनुर्यात्रां समाचरेत् ॥ २० ॥

दो. ताके दर्शन मात्र ते होत सकल अघनाश । ताते
यत्न समेत नरजात अवशिधनुषाश ॥ २० ॥

श्री. जोकि धनुष के दर्शन मात्र से सम्पूर्ण पाप नाश
हो जाने हैं इसलिये धनुष यात्रा अवश्य करना चाहिये २०
२०- जो नन्द दहन्श के दर्शन से सब पाप चोठ जाते हैं अस्के
दहन्श जात्रा करना ضرूर जाये -

सू. येन दृष्टं धनुः खाडं सर्वपापापनोदनं । श्रीरा-
मकरजसृष्टं साक्षाद्भुवनपावनम् ॥ २१ ॥

दो. सकल पापनाशक परमधनुषखण्डजिनरेखि ।

श्रीरघुवरकरपरशमहिपावनपरमविशेख । २१ ।

टी. जो मनुष्य धनुष खण्ड का दर्शन करते हैं वह तीनों लोक के पवित्र करने में समर्थ है ॥ २१ ॥

२१ - جو کوئی دھنشن کھنڈ کا दर्शन کرتا ہے اسکو تینوں لوک کے پوٹر (پاک) کر دینے کی سامرتہ ہو جاتی ہے -

मू. प्रत्यक्षज्ञापकश्रेष्ठधनुर्वीर्यप्रकाशनमाज्ञा

सृष्टिनिश्चलं दिव्यं स्यात्स्यत्यवनिमाडले । २२ ।

दो. श्रेष्ठप्रकरज्ञापकधनुषवीर्यप्रकाशनरूपाम्भू

माडलअगजगअचलस्यास्यतिदिव्यपनूप २२

टी. प्रत्यक्ष उत्तम उपदेश कारक और सम्पूर्ण ऐश्वर्य का प्रकाशक यह धनुष है और सृष्टि पर्थत इस पृथ्वी माडल में अचल होकर रहेगा ॥ २२ ॥

२२ - اور یہ دھنشن ظاہر ظاہر اتم آپریش کرنے والا اور سب شستونکا دین والا ہے اور جب تک یہ دنیا ہی تب تک یہ دھنشن قائم رہیگا -

मू. महावैशावसंस्कारैर्महायज्ञव्रतादिभिः । म-

हापुण्यातिरैकैश्चधनुषोदर्शनं भवेत् ॥ २३ ॥

दो. अतिवैशावसंस्कारपुनिमहाव्रतादिकयाम् ।

बहुतपुण्यकरिलहतनरधनुषरशवडभाग २३

टी. महा वैशाव संस्कार और बड़े बड़े यज्ञादिक बहुत से पुण्य करने से इस धनुष का दर्शन मिलता है ॥ २३ ॥

२३- जो कुली महाभित्तु और बड़ी बड़ी जाग और बरत और बड़े बड़े
होते होते हैं अस्किद वृक्ष का दर्शन मीर होता है -

मू. एतद्ब्रह्मस्य सर्वस्वसर्वब्रह्मर्षिसम्मतम् । पुरा
णज्ञैश्च निर्णीतं यद्दामाभिमुखो भवेत् ॥ २४ ॥
दो. यह रहस्य सर्वस्वसर्वब्रह्मर्षिसम्मतम् । पु-
राणज्ञनिर्णीतं यहि अभिमुखं घुबरमानु ॥ २४ ॥
श्री. यह रहस्य सब ब्रह्मर्षिलोगों की सम्मति है और पौ-
राणिकों से निर्णीत है इससे श्री रामचन्द्रजी अवश्य अ-
भिमुख अर्थात् सानुकूल होते हैं ॥ २४ ॥

२४- ये सत् ब्रह्मर्षि और पुराण ज्ञान्ते वालों की है कि वृक्ष
के दर्शन से श्री रामचन्द्रजी मरु मरु बान होते हैं -

दो. ब्रह्मर्षिपौराणिके भये सप्तदशोऽध्याय । देव
सुवनमिथिलाचरितदोहा उल्था गाय ॥ १० ॥

इति श्री ब्रह्मर्षिपु-
राणो सप्तदशोऽध्यायः ॥ १० ॥ ५

मू. नैत्रेय उवाच ॥ मिथिलानिमिबंशानं रा-
जधानीति मे श्रुतम् । सा कथं पुण्यतीर्थ-
पुण्यतेतद्ब्रह्मधुना ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

दो. मुनिपुंजा मिथिलापुरीनिमिकुलराजस्थानासौ
किमितीरथशुचिगनतकहहुमोहिमुनिमान १

۱۱. فیر مہترے جی نے پوچھا کہ یہ مونی میثیلا کو می-
می بنگھیوں کی راجدانی آپ نے ورنہ کیا ہے فیر
دس کو پوٹتہ تہہ میں بھی گینا ہے دس کا کارا و ت لایا ہے ॥ ۱ ॥

بریدیشن پیران کا اٹھارہواں اویہ

۱۔ پترے جی نے کہا کہ ہے من مہتلا کو تو آپ نے نم بنشیوں کی راجدانی
بیان کی ہے تو پھر اسکو میرتھوں میں پوٹتہ دینے والا جواب
کہتے ہیں اسکی کیا وجہ ہے -

۱۲. پراشہر اواچ ॥ ہرے رادھن لاکے یتر
یتر جنے: کرات۔ ت دے و تہہ وینے ی دشرنا
تو اے د نرانا م ॥ ۲ ॥ ۲ ॥ ۲ ॥ ۲ ॥

۱۳. جہ جہ رادھن وینا کو کسوی بکت سواما د
ر ش پو اے دان سن کو تاتے تہہ نام ॥ ۲ ॥

۱۴. پراشہر جی بولے کہ یہ مونی جہاں جہاں بکت سوامی
نے ہر کا آرا دھن کیا ہے تہاں تہاں کی بھومی منو-
بھیوں کو دشرن سے پوٹتہ دے تہہ ہے دس واسے اس سٹان کو
تہہ کہا ہے ॥ ۲ ॥

۱۵. پراشہر جی نے کہا کہ ہے من جہاں جہاں بکتوں نے ہر کا آرا
کیا ہے ان سٹانوں کے دشرن سے آدھو کو پوٹتہ ہوتا ہے -

۱۶. دینو میثیلا پوٹتہ سہ رادھن سہ رادھن
سہ پدھیا ن سہ سکارے ن سہ پدھیا سہ سہ لہے: ॥ ۳ ॥

दे. यह तो मिथिलापुण्यमयि स्वयंरूपिणी राम। न-
हिंदूच्छा संस्कारको नहिंदूच्छा सुरधाम ॥ ३ ॥

टी. और यह मिथिला तो आप ही पुण्या और श्रीराम-
स्वरूपिणी है इसको किसी दूसरे संस्कार या किसी देवा-
लय की कुछ इच्छा नहीं ॥ ३ ॥

३- اور یہ مہنگلا پُری تو بہر صورت پُنیہ اور شری رام سُرُوپنی ہی ہے اسکو
کسی دوسرے سنسکار یا دیہہ ستھان ہونکی ضرورت نہیں -

मू. परन्तु मुविभिः पूर्वैः काञ्चनाराण्यवासिभिः।
हरेराराधनं पुण्यं बहुधा तत्र वैरुतम् ॥ ४ ॥

दे. पुनि परन्तु पूर्वदि मुनिह काञ्चनवनके वासि।
हरिआराधनपुण्यमयकीन्ह तहां बहुधासि। ४।

टी. परन्तु पूर्वकालमें काञ्चन आरण्य के वासी मुनिलो-
गों ने यहाँ पर भगवान् का आराधन बहुत तरह से कि-
या था ॥ ४ ॥

४- سو اسے اسکے اگلے زمانہ میں بیان پر کا نچن بن کے رہنے والے
مُن لوگوں نے بہت طرح سے بھگوان کا آرا دهن کیا تھا -

मू. वैवस्वतमजोर्वंशे इक्ष्वाकोत्तनयोनिमिः। गौत-
मं याजकं ब्रह्मयज्ञमत्रैव चाकरोत् ॥ ५ ॥ ५ ॥

दे. वैवस्वतके वंशमें इक्ष्वाकुजनिमिजाम। निमि-
गौतमपुरुहितकरी कियो यज्ञतिहि ठाम ॥ ५ ॥

टी. वैवस्वत मनु के वंश में इक्ष्वाकु नाम राजा के पुत्र

نیمی نے گوتام جی کو پورے دھت کر کے یہاں بچھ کر دیا ۵
 ۵۔ یوستوت من کے بنش میں راجا اچھواک کے بیٹے راجا نم نے گوتم
 جی کو اپنا پڑوہت کر کے یہاں پر جگت کیا تھا۔

۴۔ वशिष्ठे न रुषाशप्तो वशिष्ठं चापिसोऽशपन् ।
 विदेहत्वंदयो रासीत्युराणेषु कथास्फुटा ॥ ६ ॥

۵۔ मुनिवशिष्ठदेशपते हि मुनिहिंशापदैभूप । यु
 गलभये विनुप्राणासोकथापुराणाऽनूप ॥ ६ ॥

۶۔ تب वशिष्ठ جی نے نیمی کو اور نیمی نے वशिष्ठ
 جی کو शाप दिया जिस से दोनों मृतक होगये यह
 कथा पुराणा में कथित है ॥ ६ ॥

۷۔ تب بشیٹھ جی نے راجا نم کو اور راجا نم نے بشیٹھ جی کو سزا دیا
 تھا کہ جسکی وجہ سے دونوں مر گئے تھے یہ کتھا پراں میں موجود ہے۔

۸۔ पुनर्निमिशरीरस्य मथनं मुनिभिः कृतं । मिथि
 सत्रसमुत्पन्नो मिथिलातेन सा भवत् ॥ ७ ॥

۹۔ निमिशरीरको मथनपुनिकीन्ह मुनिमते हि वाम
 मिथीनाम उत्पन्न भय उताते मिथिलानाम ॥ ७ ॥

۱۰۔ फिर मुनि लोगों ने निमिके उस मृतक शरीर को
 मथन किया तो मिथि नाम राजा उत्पन्न हुआ इस से
 इस देश का नाम मिथिला प्रसिद्ध हुआ ॥ ७ ॥

۱۱۔ العز من من لوكون نے راجا نم کی لاش کو مٹھن کیا جسکے متھنے سے
 متھ نام راجا پیدا ہوا اسلیے اس دیش کا نام متھلا ہوا۔

م. तदाप्रधृतितद्वंशैराजधानीनिरूपिता । राजा-
नश्चमहाभागा दर्शनेगृहमेधिनः ॥ ८ ॥
दो. तादिनतेमिथिबंशकोराजधानिविख्यात।वड़
भागीनृपपुण्यगृहकर्मलीनशुभव्रात॥ ८ ॥
टी. उस दिन से मिथि के बंश में राजधानी चली जाती
है इसमें बड़े बड़े भागवान् पुण्यात्मा राजालोग हुए और
गृहस्थ कर्म में लीन होते भये ॥ ८ ॥

۸- تب سے یہ میثیلا راجا ہتھ کے بنش کی راجدھانی ہوئی اور اس
میثیلا میں بڑے بڑے بھاگو ان راجا لوگ ہوئے اگرچہ وہ راجا لوگ
گرہستہ آشرم میں مصروف ہوتے گئے۔

मू. परन्तुमुनिभिस्तुल्यास्तपोयोगसमाधिषु।नि-
र्लेपामायिकैर्भोगैःपद्मपत्रमिवांभसा ॥ ९ ॥
दो. तपस्त्रययोगसमाधिमेंमुनिसमानसवज्ञानि।स-
कलभोगनिर्लेपमनकमलपातद्रवपानि॥ ९ ॥

टी. परन्तु सब कोई तपस्या और योग में मुनियों के
समान हुए और संसारी विषयों से निर्लेप रहते थे जैसे
कमल पत्र जल में रहकर उस से निर्लेप रहता है ॥ ९ ॥

۹- لیکن وہ سب راجا لوگ جوگ اور تپسیا میں منوں کے برابر
ہوئے جطرح کئل کا پتھر پانی میں رہتا ہے اور اثر اسکا اپنے میں آنے
نہیں دیتا اسطرح بے لوگ بھی باطن میں دنیا سے علیحدہ رہتے۔

मू. ज्ञानविज्ञानसारज्ञोभजनानन्दलक्षणाः ।

विशेषतोरजरत्नंजनकीनामनामतः ॥ १० ॥

دو. سارज्ञानविज्ञानवितचिन्हितभजनानन्द। भ
यविशेषराजारतनजनकनामसुखकन्द ॥ १० ॥

टी. उसी वंश में ज्ञान चिज्ञान का सार जानने वाले औ
र भजनानन्द के लक्षण संयुक्त राजाओं में रत्न राजा
श्रीरध्वज जनक हुए ॥ १० ॥

۱۰۔ غرضکہ اسی خاندان میں گیان کے جاننے والے بھجنانندی اور
راجاؤں میں رتن راجا شیر ڈھوج یعنی راجا جنگ ہوئے۔

मू. जानकीयत्रचोत्पन्नानिमिबंशप्रकाशिनी।

यस्यभक्तिप्रभावेणरामोदाशरथिःप्रभुः ॥ ११ ॥

دو. जहाँप्रकटसीताभईपरकाशिनिनिमिबंश। जा
केभक्तिप्रभावसेरामभानुकुलहंस ॥ ११ ॥

टी. निमि के वंश को प्रकाश करने वाली जानकी जी ज
हाँ प्रकट हुई और जिस राजा जनक के भक्ति के
प्रभाव से दशरथात्मज श्रीरामचन्द्रजी ने ॥ ११ ॥

۱۱۔ اور اسی قوم کے منش کی عزت دینے والی شری جانکی جی دمان پر
پرگٹ ہوئیں جن راجا جنگ کی بھکت کے پر بھاؤ سے شری رامچندر۔

मू. यामातृत्वंसमापन्नोलोकोत्तरफलप्रदः। त-
स्येयंनगरीपुण्यातेनयातामहाफला ॥ १२ ॥

दो. यामातानातालहेलोकश्रेष्ठफलदात। तामु
पुरीपुण्यापरमतेनमहाफलजात ॥ १२ ॥

श्री. लोकोत्तर अर्थात् स्वर्गादि लोक से ऊपर फल के देने वाले जामात अर्थात् दामाद हुए उन्हीं राजा जनक की यह नगरी अत्यन्त पुण्या है ॥ १२ ॥
 १२ - انکے داماد ہوئے اسی سے راجا جنک کی راجدھانی مٹھلا پوری بہت بہت پڑی کی دینے والی ہے -

मू. विख्याता जान की यस्मात् विशेषेण भवन्मुने ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥
 सो. पुनि विशेष जगख्यात भयो जान की जन्मते ।
 मैत्रेय मुनि वात बोलत भये ऋषिराजसो । १३ ।

श्री. और श्री जानकी जी के यहाँ पर जन्म होने से यह मिथिलापुरी विशेष तीनों लोक में प्रसिद्ध हुई ॥ १३ ॥
 १३ - اور شری جانکی جی کے یہاں پر رکھت ہوئے سے یہ مٹھلا پوری اور بھی تینوں لوک میں مشہور ہوئی -

मू. मैत्रेय उवाच ॥ कथं सीता समुत्पन्नात
 स्यात्संगलपद्मती । कस्य पुण्यातिरेकेण
 तदीयातनयाऽभवत् ॥ १४ ॥ १४ ॥ १४ ॥

श्री. सांगलपद्मति जनक के किमि प्रकटीत है सीया ।
 कौन पुण्य अति भूपके भई सुता कमनीय ॥ १४ ॥

श्री. मैत्रेय जी ने फिर पूछा कि हे मुनि जनक जी के हलके शिर चलाने से जानकी जी किस प्रकार प्रकट हुईं और कौन पुण्य जनक जी महाराज का ऐसा था कि

جس کر کے جانکی جی انکی کنیا ہرے ॥ ۱۴ ॥

۱۴۔ میترے جی نے پھر پوچھا کہ اسے من راجا جنگ کے بل چلانے
میں ہل کی لوگ سے جاگی جی کس طرح ظاہر ہوئیں اور کون سا پٹن راجا
جنگ نے کیا کہ جس سبب سے شہر سی جاگی انکے وہاں پیدا
ہو کر انکی لڑکی کہلائیں۔

سू. पराशर उवाच ॥ जनकानां कुलं ब्रह्मन्
महर्षिसमतेजसां । मर्यादया समुत्पन्नं
सर्वलोकेषु विश्रुतं ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

दो. सर्वजनक कुलमहा ऋषिसरिसतेजसीताताभ
सकलमर्यादमयसर्वलोकविरव्यात ॥ १५ ॥

टी. पराशरजी बोले कि हे ब्रह्मन् इस मिथिला पुरी में
जितने राजा हुवे वह सब ऋषियों के समान तेजस्वी और
बड़े मर्यादावान् तीनों लोक में विख्यात थे मानो
इनका कुल ऐसा ही था ॥ १५ ॥

१५۔ پاراشر جی نے کہا کہ اسے براہمن اس مختلا پڑی میں جتنے راجا ہوئے
وہ سب برکھنوں کے برابر تہجتوی اور بڑے نامور ہوئے۔

सू. ज्ञानविज्ञानसम्पन्नः प्राधिव्याधिविबर्जितः
द्वस्वलोमा विशेषेण लोके विख्यात पौरुषः ॥ १६ ॥

सो. युक्तज्ञानविज्ञानः प्राधिव्याधिवर्जितसदा लो
करव्यातबलवानभपेद्वस्वलोमा अधिक ॥ १६ ॥

टी. उसी कुल में ज्ञान और विज्ञान से सम्पन्न और

آادی व्याधि से वर्जित और विशेष करके तीनों लोक
में विख्यात प्रतापी राजा हस्वलोमानाम जनक हुए १६
۱۶۔ چنانچہ اُن راجاؤں میں گیان اور گیان کے حائے والے اور سب
عیون سے پاک تینوں لوک میں مشہور راجا ہریشولوما نام جنگ ہوئے۔

मू. तस्य पुत्रद्वयं चासीज्येष्ठशीरध्वजोत्तमः। तद्गु-
णैः समतां यातो द्वितीयस्तुकुशध्वजः ॥ १७ ॥

दो. युगलपुत्रताके भयेनेठ शिरध्वजनाम। ताके
लघुतासरिसगुणकूशध्वजप्रभिराम ॥ १७ ॥

ती. उन्हीं राजा हरस्वलोमा के दो पुत्र हुए बड़े काना-
म शीरध्वज और छोटे का नाम कुशध्वज ॥ १७ ॥
۱۷۔ اور ہریشولوما کے دو بیٹے پیدا ہوئے سنبھلے اُنکے بڑے بیٹے کا نام
شیردھوج اور چھوٹے بیٹے کا نام کوش دھوج ہوا۔

मू. सर्व्वे तद्वंशजाभूपाःख्याता जनकनामतः। ते
नासौ सर्व्वलोकेषु विख्यातो जनकामिधः ॥ १८ ॥

दो. ताके कुलमें भूपयत जनक सब हिके नाम। ता
ते तकलहु लोकमें ख्यात जनक पदगाम ॥ १८ ॥

ती. और उस वंश में जो लोग राजा होते थे वह सब
जनक कहलाते थे इसलिये जनक ही नाम तीनों लो-
क जानता है ॥ १८ ॥

۱۸۔ جتنے راجا لوگ اس خاندان میں ہوئے وہ سب جنگ کے
خطاب سے ملقب ہوئے اسوج سے شیردھوج بھی جنگ نام سے

تینوں لوگ میں مشہور ہیں -

س. پیتریو پرتے راجیے سٹھاپیتو جن کا بیڈھ: ائیے پٹھ:
شیر ڈھجوراجا گولاناماکرے مہان ۱۱ ۱۶ ۱۱

دو. پیتامور پرتے راجیے مہیجے ڈھ شیر ڈھجوراجا نام جن
کنا مگا دیل شیروراجا مہی گولانام ۱۱ ۱۶ ۱۱

دی. اپنے پیتا کے پرلوق ہو جانے پر وہی ائیے پٹھ
شیر ڈھجوراجیے گدی پر بیٹھ کر شیر جنک پد بی پا
کر ستمپور گولوں کے رتھن ڈھ ۱۱ ۱۶ ۱۱

۱۹ - یعنی وہی راجا شیر ڈھجوراجا اپنے باپ کے مرنے کے بعد تخت نشین
اور جنگ کے خطاب سے لقب ہو کر سب گولوں کے کھان ہوئے۔

س. ڈھرمیے پال پرتے راجیے مڈھرمیے ریتھجیے پرتے

شیر ڈھجوراجا پرتے راجیے مہیجے ڈھ شیر ڈھجوراجا نام جن

دو. ڈھرمیے پال پرتے راجیے مڈھرمیے ریتھجیے پرتے
کر پرتے راجیے مہیجے ڈھ شیر ڈھجوراجا نام جن

دی. وہ راجا شیر ڈھجوراجا جنک ڈھرمیے پرتے پرتے پرتے پرتے
پرتے پرتے شیر ڈھجوراجا کو ڈھجوراجا پرتے پرتے پرتے پرتے
پرتے پرتے راجیے مہیجے ڈھ شیر ڈھجوراجا نام جن
پرتے پرتے راجیے مہیجے ڈھ شیر ڈھجوراجا نام جن

۲۰ - اور انصاف کے ساتھ رعایا پروری کرتے تھے اسی
انصاف کے سبب سے کوئی انکا دشمن نہ تھا بے اندیشہ کسی
امر کے راج کرتے تھے۔

मू. स्वयंप्रादुरभूद्धर्माद् न स्वर्णखनिर्गिरौ । धन
धान्यवतीस्फीताभूमिः कामदुष्पावभौ ॥२१॥

दो. स्वयंधर्मतेप्रकटमे स्वर्णरत्नगिरिखान । सदा
भूमिधनधान्ययुतभद्रकामराजान ॥२१॥

टी. उनके धर्म के प्रभाव से रत्न और सुवर्ण की खान
पर्वतों में बहुतायत में हुई और अति धन धान्य से पृ
थ्वी कामधेनु के समान होगई ॥ २१ ॥

२१- और उनके धर्म के प्रभाव से जो अरात और सुने की कमान पहान
से खानें और सुने और सुने की कमान से खानें और सुने की कमान से खानें

मू. ईजेवहुविधैर्यज्ञैर्देवतातुष्टिकारकैः । ब्राह्मण
नतोषयामास दानसम्मानभक्तिभिः ॥२२॥

दो. पूजाबहुविधियज्ञकरिदेवतुष्टिके हेत । दान-
मानश्चरुभक्तिते द्विजहितोषिसुखदेत ॥२२॥

टी. और राजा शीरध्वजने देवताओं के संतुष्ट करने के
वास्ते यज्ञ और पूजन बहुत किया और ब्राह्मणों को भी
भक्ति युक्त दान मान से संतुष्ट किया ॥ २२ ॥

२२- और राजा शीरध्वजने देवताओं के संतुष्ट करने के
वास्ते यज्ञ और पूजन बहुत किया और ब्राह्मणों को भी
भक्ति युक्त दान मान से संतुष्ट किया ॥ २२ ॥

मू. तस्यशासतिधर्मेणराज्येनिहतकाण्डके । अ-
नावृष्टिःसमापन्नाययासंपीडिताः प्रजाः ॥२३॥

दो. करतराज्ययुतधर्मनृपनिःकाण्डकइककाल

अनारुष्टिभोजहिनेपीडितप्रजाविहाल ॥२३॥

टी. इस प्रकार मिथिलाएक राज्य करते हुए कितने दिनों के बाद एक समय अवर्षणा होगया जिसके कारण प्रजा लोग बहुत पीडित हुए ॥२३॥

२३-।।सुचरु बने सुख राज करते हुये कितने दिन गजर जाने के बाद एक मरुत चह पुरा मीनी पानी न बरसा के सब से रया या बत मांजर हुयी -

मू. महर्षिभिःसमादिष्टो मार्गेण मिथिलाधिपः। माधवेधवलेपसेनवम्यां यज्ञमारभत् ॥ २४ ॥

टी. महाऋषिनेसे मार्ग लहि मिथिलाधीश अदम्भ । माधवनवमी शुक्लतिथि की न्हो यज्ञारम्भ ॥२४॥

टी. तब राजा श्रीरध्वज ने ऋषियों की आज्ञा पाकर वैशाख सुदी नवमी तिथि को यज्ञ किया ॥ २४ ॥

२४-।।त राजाश्रीरध्वज ने ऋषियों के कहे से बिसाक सुदी नुमी को पानी बरसे के वासुते बग किया -

मू. स्वर्णलाङ्गलमादाय विचर्षमहीतलम् । तत्रपुत्रीसमुत्पन्ना तां तदा गृहमानयत् ॥ २५ ॥

टी. कंचन हलगहि भूमि पर जोतने लगे विदेह । तहें कन्या उत्पन्न भइ लै आयो निज गेह ॥ २५ ॥

टी. और सेने का हल लेकर जब पृथ्वी को जोतने लगे तो उसी स्थान में उसी सिरावरसे एक कन्या उत्पन्न हुई उसको अपनी कन्या समझ कर अपने घर ले आये ॥२५॥

۲۵۔ اور سونے کا پل لیکر جب زمین کو جو تین لگے تو اس پل کے لگنے سے زمین کے اندر سے ایک لڑکی ظاہر ہوئی اس لڑکی کو اپنی لڑکی قرار دے کر راجا شیردھوج اپنے گھر میں لے آئے۔

مू. जानकीतेनवैनाम्नाविरव्याताभुवनत्रये। क-
दाचिन्नारदीयोगीतत्रागत्यमहामुनिः॥२६॥

दो. तालियजानकिनामसेतीनभुवनमहिख्यात।
नारदयोगीमहामुनिकवहिकतहोअगत।२६।

टी. जोकि राजा जनक उस कन्या को लेखाये इस वास्ते वह कन्या जानकी नाम से तीनों लोक में विख्यात हुई फिर कुछ काल बीतने पर नारद योगी महामुनि वहाँ आये २६ - ॲॲॲ - چونکہ اس لڑکی کو راجا شیردھوج یعنی راجا جنگ لے آئے اس وجہ سے اس لڑکی کا نام تینوں لوک میں جانکی مشہور ہوا کچھ دنوں کے بعد نارد جوگی ہمامن وہاں پر آئے۔

मू. सीतेतिनाम्नाचाभाष्यरहस्यितदुपादि-
शत ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥

दो. सीताइतितिहनामकहिलाइइकान्तनरेश।
नारदमुनिसवयोगिबरभावीकरउपदेश।२७।

टी. और श्री जानकीजी का सीताजी नाम रख कर फिर राजा जनकजी को एकान्त में लेजा कर आगे की होने वाली सब बात कहने लगे ॥ २७॥

ॲॲ - اور جانکی جی کا نام سیتا جی رکھ کر راجا جنگ کو تنہائی میں لیجا کر

آگے کی ہونے والی سب باتیں اُسے کہدیں - یعنی -

م. ناراد اواچ ॥ इयं पुत्री महाभाग कु-
लोद्योत करीतव । सीतेति नाम्ना विख्या-
ता भविष्यति जगत्रये ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥

دو. हे नृपय हतव कन्यकाद्योत करी कुलमाहि । सी-
तासंज्ञाख्यात इति होइ लोकतिनियाहि ॥ २८ ॥

دی. कि हे महाराज तुम्हारे कुल की प्रकाश करने वाली य-
ह कन्या है सीता नाम करके यह कन्या तीनों लोक में
विरख्यात होगी ॥ २८ ॥

۲۸ - اسے کہا جاک یہ تمہاری لڑکی تمہارے خاندان کی روشن کرنے
والی اور سیتا نام سے تینوں لوک میں مشہور ہوگی -

म. अस्या भर्ता प्रभुः साक्षात्परमात्मा भविष्यति ।
एतदर्थं विशेषणकर्त्तव्यं यत्नमुत्तमं ॥ २९ ॥

दो. याके पति होइ है प्रकट परमात्मा सुरईश । यहि
नित है कर्त्तव्य अति उत्तम यत्न महेश ॥ २९ ॥

دی. और इस कन्या के स्वामी अर्थात् पति साक्षात् परमात्मा
पुरुष होंगे इस वास्ति आपको उत समय उत्तम यत्न कर
ना होगा ॥ २९ ॥

۲۹ - اور اس کتیا کے سوامی ساکشات پر ماتا پریش بھگوان ہونگے اسوا
آپکو اسوقت سے اُسکی تدبیر میں رہنا چاہیے یعنی -

म. स्वयम्भवे प्रकर्त्तव्यं धनुस्त्यापनं पाणं । नान्य-

श्चालयिताचापंपरमात्युरुषादृते ॥ ३० ॥

दो. स्वायम्बरतुमकरहृत्प प्रण उत्थापनचाप। प
रमेश्वरतजिअपरनहिंसकैरारिकरिदापा ॥ ३० ॥

टी. इसके स्वयम्बर में धनुष उठाने का प्रण करना
क्योंकि त्रिबाण परमेश्वर के और कोई इस धनुष को क
र भी न सकैगा ॥ ३० ॥

۳۰۔ ایک سو تیرمین دھنشن اٹھانے کا پرن یعنی عمد کرنا چاہیے کیونکہ
سوائے پریشور کے اور کوئی اس دھنشن کو نہ اٹھا سکے گا۔

मू. तस्यसम्बन्धतोरान्सर्वकामानवाप्स्यसि।
इयंत्वन्ननयाराजन्चतुर्वर्गप्रदायिनी ॥ ३१ ॥

दो. नृपतिनकेसम्बन्धसे पैहौस्वमनकाम। यह
जोतवननयाचतुरवर्गदायिनीनाम ॥ ३१ ॥

टी. हे राजन् उनसे सम्बन्ध होने से तुम्हारी सम्पूर्ण
कामना पूरी होगी और यह कन्या तुम्हारी अर्घ्य धर्म
काम मोक्ष चारों पदार्थ की देने वाली है ॥ ३१ ॥

۳۱۔ اسے راجا جو وقت آپ سے اور افسے رشتہ مندی ہو جائیگی اوست
آگلی سب دلی مرادین پوری ہو جائیگی اور یہ کتیا ارتھ اور دھرم اور کام
اور موکش چار و پدارتھوں کی دینے والی ہے۔

मू. आपन्नानांप्रपन्नानांसर्वापत्तिनिवारिणी ।
धनोसिद्धतकृत्योसिलोकवन्द्योसिमृपते ३२
दो. आपन्नानुप्रपन्नता के सब आपद हरणि ।

कृतकृत्योसितुधन्यलोकवन्द्यप्रसिभूपतुम ३२

टी. जो मनुष्य किसी विपत्ति में पड़कर इनकी शरण में जाता है उसकी सब विपत्ति ये नाश कर देती हैं हे राजन् तुम धन्य हो और कृतकृत्य हो क्योंकि ॥ ३२ ॥

۳۲- جو شخص کسی مصیبت میں پڑ کر انکی سرن میں آتا ہے اسکی سب مصیبتیں دور کر دیتی ہیں اسے راجا کرم بڑے بجا گمان اور دوتو مانا کے برابر ہو۔

मू. यत्त्वयातनयालब्धाहीश्रीकीर्त्यादिवंदिता ।

इत्युपादिश्यराजेन्द्रं ब्रह्मलोकं जगाम सः ॥ ३३ ॥

टी. हीश्रीकीर्ति आदिकरिवन्द्यसदालहिभूप । अ

सनारद उपदेश करिगिविधिलोक अनूप ॥ ३३ ॥

टी. यह कन्या जिसको आप ने पाया है ही लज्जा और श्री लक्ष्मी और कीर्ति इत्यादि कों से प्रशंसनीय है इतना कहकर नारदजी ब्रह्मलोक को चले गये ॥ ३३ ॥

۳۳- یہ کیا جبکہ آپ نے پایا ہے لیا اور لچھی اور کیرت میں شرم و دولت ونیکی وغیرہ صفوں سے موصوف ہے اتنا لکرتا راجی برہمن لوک کو چلے گئے۔

मू. त्वत्प्रीत्यावर्णितं सर्वं रहस्यं मिथिलोद्भवं ।

तच्छ्रावयेन्नित्यं श्रुत्वा वा हृदि धारयेत् ॥ ३४ ॥

टी. मिथिलोद्भवजे रहस्यं कहे उं प्रीति तन सर्व ।

सुनै सुनावै नित्यं जो धारै हृदय अगर्व ॥ ३४ ॥

टी. पराशरजी कहते हैं कि यह मिथिला इरी की रहस्य अर्थात् गोप्य कथा आप की प्रीति पर मैंने बर्तान किया

जो कोई इस कथा को सुनेगा अथवा सुनावेगा अथवा
हृदय में स्मरण रखेगा ॥ ३४ ॥

म ३५ - प्रार्थना करते हैं कि ये मच्छा प्रिय की किंत् कथा में ने त्तारी दली
मिथिली प्रियान की जो कुती अस कथा कुशिका या स्नाविका या सने दल में या
रकिका -

सू. तस्य तुष्टा भवेत् सीता साक्षाद्वाघववल्ल-
भा ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥

श्री. साक्षाद्वाघववल्लभा होत ताहि अनकूल। अध-
महीत पावन परम मंजुल मंगल मूल ॥ ३५ ॥

टी. उसके ऊपर श्री सीताजी साक्षात् रामजी की परम
प्रिया सदा अनकूल रहेंगी ॥ ३५ ॥

द्वितीया बृहदिष्णुपुरा- णे अष्टादशोऽध्यायः १८।६

३५ - अके ओ प्रथरी जानकी जी जो थरी राम चंद्रजी की भत पारी
मिथिली नुश रहिंकी -

सू. मैत्रेय उवाच ॥ विचित्रमिदमाख्यातं व-
लितं भवतामुने । वैशाखे जानकी जाता व्र-
तं तत्र कथं भवेत् ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. कह मैत्रेय विचित्र तु मवराणो दु कथा च्छरीश ।

ماधवसीताजन्मतिथिकिमिव्रतकरउपदेश।५

टी. मैत्रेयजी ने फिर प्रश्ना किया कि हे मुनि आप ने यह बहुत ही आश्चर्य कथा सुनाई है परन्तु अब यह भी कह सुनाइये कि वैशाख में जानकी नवमी व्रत किस तरह से किया जाता है ॥ १ ॥

پر بندیشن پر ان کا انیسوا^{۱۹}ں اڑھیامی

۱۔ میرے جی پھر بولے کہ اے من آپ نے بت تجب کی کتھا سنائی لیکن اب یہ بھی کہ سنائیے کہ ایسا کہ میں جانکی نو می برت کس طرح ہوتا ہے۔

मू. निर्णयस्तस्यकालस्यविधिश्चापिमुनीश्वरैः ।

यथानिर्णयतेशास्त्रसिद्धान्तस्यशंसमे ॥ २ ॥

टी. ताकेकालविधानयुतकहिमुनीश्वरनिजौन।य

थाशास्त्रसिद्धान्तकरनिर्णितकहुमोहितौन।३

टी. उसका नियम और विधान और काल जो मुनीश्वर लोगों ने कहा है और जिस प्रकार सिद्धान्त ग्रन्थों में वर्णित है वह सब मुझसे कहिये ॥ २ ॥

۲۔ اسکا نیم اور پدم اور کال یعنی وقت جو منیشور لوگوں نے کہا ہے اور جس طرح سیدھا نت گرنٹوں میں کہا گیا ہے وہ سب بیان کیجیے۔

मू. पराशरउवाच ॥ वैशाखस्यसितेपक्षेनव-

मीमघसंयुता । सैवमध्यान्हयोगेनशस्य

तेव्रतकर्मणि ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

शे. पाराशरजूकहतमेनौमिशुक्लवैशाख। मघान-
खतमध्यान्हयुतदिनप्रशस्तव्रतभाख॥ ३ ॥

टी. पाराशरजी बोले कि वैशाख शुक्ल नवमी तिथि मघा
नक्षत्र जिस दिन मध्यान्ह काल में हो उसी दिन व्रत प्रश-
स्त (अर्थात् उनम) है ॥ ३ ॥

३- प्राशरजी कहे लगे के बीस कम् सुदी नुमी तिथे ओर ग्हा न्छे चरि वन
दुपेर के वकत हो सुदन बरत करना चाहे -

सू. निऋक्षापितिथिर्ग्राह्या नवमीशब्दसंग्रहात्
तिथिक्षयेतिथेर्वद्वैशुद्धाविज्ञापिवामुने॥ ४ ॥

शे. मघारहितअथवासहितअथवातिथिक्षयवृद्ध।
नवमीतिथिपरसिद्धशुद्धअथवायुगतिथिविद्ध ४

टी. यदि मघा युक्त नवमी न होते सिर्फ नवमी ही हो तो कर-
ना चाहिये तिथिक्षय हो अथवा वृद्ध हो अथवा शुद्ध नवमी
हो अथवा दूसरी तिथि से संयुक्त नवमी हो ॥ ४ ॥

४- अगरे ग्हा न्छे चरि नुमी नुतु बिसा क्हा न्छे चरि नुमी नुतु बिसा क्हा न्छे चरि
करना चाहे तिथे की नुतु नुतु बिसा क्हा न्छे चरि नुमी नुतु बिसा क्हा न्छे चरि

सू. मध्यान्हव्यापिनीग्राह्याकर्मकालस्तुशस्यते
पैवशस्यतेतन्नैर्मध्याह्नेचेदिनद्वये ॥ ५ ॥

शे. मध्यव्यापिनीग्राह्यादिनकर्मकालशुभआहि।
द्वैदिनव्यापिनिमध्ययदिकरवपरेदिनमाहि ॥ ५ ॥

टी. मध्याह्न व्यापी अर्थात् दोपहर के नक्षत्र नवमी जिस

دین ہو وہ برت کال پر شست ہے اور جو دو دین مڈھا
ہو آپی ہو تو پر دین کرنا چاہیے ॥ ۵ ॥

۵۔ جسن دوپہر کے وقت نومی ہو اُس دن برت کرنا چاہیے اور اگر دو دن
دوپہر کے وقت نومی ہو تو دوسرے دن برت کرنا چاہیے۔

س۔ دین دہے پت دھا سوت راسا گڑھ تے پرا۔ دشا
میاں پاراں شست دشا مینے ول غہےت ॥ ۶ ॥

دو۔ دہے دین مڈھن آپی جبت بھرت برت پر وار۔ دشا
میاں پاراں شست ہے کر ون دشا میاں پار ॥ ۶ ॥

دی۔ اور جو پر دین آپی یا پورے دین مڈھا آپی
نی نہ ہو تو بھی پر دین برت کرے کیونکہ پاراں دشا مینے
پر شست ہے دشا مینے ل غہن نہ کرنا چاہیے ॥ ۶ ॥

۶۔ اگر دوسرے دن یا پہلے دن دوپہر کے وقت نومی ہو تو بھی دوسرے
دن برت کرنا چاہیے کیونکہ پاراں دس مینے کرنا لازم ہے۔

س۔ اُپواس کرامن نونو مڈھا دیو دا چرت۔ پو۔
ای ستریا بان گڑھ ستریا دھا واں شتریا نی جال یو ۱۷

دو۔ رام نونو نی آدیک ستریا اُپواس کرامن گڑ۔
ہی پو ای تیریا سہیت شتریا یو ت نی ج گہ ۱۷ ۱

دی۔ اور جس پر کار رام نونو مینے اُپواس ہوتا ہے
اُسی کرام سے پو ای ستریا بان لوگ اُپواس کرے اور
دھا یو ک اپنے گہ مینے ۱۷ ۱

۷۔ اور جسطح رام نومی مینے زارا رے مینے اُسطح اس مینے بھی گڑھ ستریا کو

शकत के साथे नरकार भर्त करना चाहे और अपने कर्म -

मू. निर्मायमाण्डपंश्रेष्ठतत्रपूजनमाचरेत् । सो-
वर्णीं राजतींचापिप्रतिमांकारयेन्नवां ॥ ८ ॥

दो. रचिकेमाण्डपश्रेष्ठतहंपूजहिमूर्त्तिप्रवीन । सो-
नाअथवारजतकैप्रतिमाकरैनवीन ॥ ८ ॥

टी. सुन्दर माण्डप निर्मान करके और उसमें सोना या
चाँदी की नवीन मूर्ति बनाकर स्थापित कर पूजन करे ॥ ८ ॥
१० - सुन्दर मंडप बनाकर सोने या चाँदी की मूर्ति बनाकर स्थापित
करके उसकी पूजा करे -

मू. पलैःषोडशभिःकार्यादशपंचभिरेववा । ताव
द्भिःकर्षकैर्वापितावन्माषैरथापिवा ॥ ९ ॥

दो. पलषोडशवापंचदशतासमकर्षप्रमाण । पु-
नितासमइकमाषकैप्रतिमाकरैमहान । ९ ॥

टी. और षोडश पल अथवा पञ्चदश पल की प्रतिमा
बनवावे अथवा एक कर्ष की अथवा एक माष की भीव
नवावे - पाँच गुंजा का एक माष होता है और सोलह
माष का एक कर्ष होता है और चार कर्ष का एक पल
होता है अर्थात् एक हजार चौबीस मासा अथवा नौसै
साठ मासा की प्रतिमा अथवा एक कर्ष की अथवा एक
माष की प्रतिमा बनावे ॥ ९ ॥

१ - और दो मूर्तियों में या सौ पल या सौ पल या एक कर्ष या एक माष की प्रतिमा

بایں گنتی کا ایک ماگھ اور مہول ماگھ کا ایک کرگھ اور چار کرگھ کا ایک
مل ہوتا ہے یعنی ایک ہزار چوبیس ماگھ یا توڑتے ساڑھ ماگھ کی یا ایک کرگھ
کی یا ایک ماگھ کی بھی صورت بنواوے۔

م. वित्तशाठ्यं न कुर्वीत सर्वधर्मक्रियादिषु । ज्ञा-
नमुद्रा धरं रामं वीरासनसमाश्रयम् ॥ १० ॥

دو. वित्तशाठ्यं न हि उचितं जहं धर्मक्रियादि कथं च
रामज्ञानमुद्रा सहित वीरासनयुततत्र ॥ १० ॥

تر. धर्म क्रियादिकों में वित्तशाठ्य न करै अर्थात् स्वर्ग
का श्रेष्ठ न करै श्री रामचन्द्रजी को ज्ञान मुद्रा संपुक्त वी-
रासन से ॥ १० ॥

۱۰۔ دھرم کے کاموں میں خرچ کا افسوس نہ کرے شری رامچندرجی
کو گیان مڈرا ملا ہوا پیراسن سے۔

म. दिव्यसिंहासनासीनं न्यसेदष्टदलाम्बुजे । श्री-
रामवामभागस्थां सीतां सर्वाङ्गशोभनां ॥ ११ ॥

دو. सिंहासन पर अष्टदल दिव्य कमल मधिराम ।
वामभाग शोभित शुभग सीता परम ललाम ११

تر. सुन्दर सिंहासन पर अष्टदल कमल के बीच में
श्री रामचन्द्रजी की प्रतिमा को स्थापित करे और उन
के वाम भाग में सर्वाङ्ग सुन्दरी श्री सीताजी को स्थापित करे
॥ - सुन्दर सिंहासन پر آٹھ دال کمال کے بیچ میں استھاپت کرے
اور ان کے بائیں طرف شری سینا جی کو استھاپت کرے۔

मू. नीलपद्मधरां देवीं कारयेत्साधकोत्तमः । लक्ष्मणं पश्चिमे भागे धृतं छत्रं चामरं ॥ १२ ॥

दे. देवी नीलोत्पलधरेण स्थापित करितत्र । लक्ष्मणं पश्चिम भागमें हें कर लिये चामर छत्र ॥ १२ ॥

टी. जो नील कमल लिये हुए हैं और पश्चिम तरफ हाथों में छत्र चामर लिये हुए लक्ष्मण जी की प्रतिमा को रक्वै ॥ १२ ॥

१२ - جو نیل کمل لیے ہوئے ہیں اور کچھ طرف ہاتھوں میں چھتر اور چمچور لیے ہوئے چھمراں جی کو استھاپت کرتی۔

मू. पार्श्वभरतश्चतुर्घ्नौ तालवृत्तकराम्बुजौ । आग्नेयंतथैवाग्रे एवं वै प्रतिमा क्रमात् ॥ १३ ॥

दे. पार्श्वभरतश्चतुर्घ्नौ तालवृत्तकरमाहिं आग्नेति न पुनिवायुसुत प्रतिमा क्रमसोयाहि ॥ १३ ॥

टी. और दोनों पार्श्वमें पंखा लिये हुए भरत और शत्रुहन जी की प्रतिमा और सामने हनुमान जी की प्रतिमा को स्थापित करै ॥ १३ ॥

१३ - اور دونوں نفل میں ٹکھالیے ہوئے بھرت اور شترہن جی کو اور سامنے ہنومان جی کو استھاپت کرے۔

मू. पूजास्याद्वेषावपीठे देदिकी परिसंस्थिते । प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रैश्चन्यसेत्प्राणान्प्रयत्नतः ॥ १४ ॥

दे. पूजैवैषावपीठमें वेदी ऊपर राखि । प्राणप्रतिष्ठा यत्नयुत करै मन्त्रविधिभाषि ॥ १४ ॥

टी. वेदी के ऊपर वैषाव पीठ से पूजा कर प्राण प्रतिष्ठा

مंत्र से यत्न पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करै ॥ १४ ॥

۱۴۔ بیدسی کے اوپر تیشو پیٹھ سے پوجا کر کے پران پر تیشٹھا کر کے تر سے پران پر تیشٹھا کر کے۔

मू. संस्कारान् विधिवत्कृत्वा देवमावाह्य पूजयेत्
आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् ॥ १५ ॥

श्री. विधिवत्सबसंस्कारकैश्चावाहनकारिसेवा
आसनविनयपदारघतथा आचमनदेव ॥ १५ ॥

श्री. संस्कार की विधि से संस्कार करके देवता का आ-
वाहन करके पूजन करै आसन और स्वागत और पाद्य
और अर्घ्य और आचमन इत्यादि प्रकार से ॥ १५ ॥

۱۵۔ سنسکار کی بدھ سے سنسکار کر کے دیوتا کا آبا سن کر کے آسن اور سواگت
اور پانو دھو کر اور ارگھ اور آچمن وغیرہ کر کے پوجن کرے۔

मू. मधुपर्काचमनं स्नानं वासोयज्ञोपवीतकं। गन्धं
पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च ॥ १६ ॥

श्री. मधुपर्काचमनस्नपनवासयज्ञउपवीत। ग-
न्धपुष्पस्रगधूपदिपअरुनैवेद्यसहीत ॥ १६ ॥

श्री. तब गन्ध और पुष्प और स्रग अर्थात् माला और
धूप और दीप और नैवेद्य ॥ १६ ॥

۱۶۔ بعد اسکے چدن اور چؤل مالا اور دھوپ اور دیپ اور نایبید۔

मू. ताम्बूलंचेतिरामस्य सीतायाश्चापि पूजने। य-
ज्ञस्योपचारे तु सीतायै भूषणं न्यसेत् ॥ १७ ॥

श्री. नागवेलिइतिरामकेपूजहिसियविधितेइ ।

यज्ञसूत्रके गाममुनिभूषणसीतहिंदेइ ॥ १७ ॥

टी. और ताम्बूल इत्यादि से श्री रामचन्द्रजी का पूजन करे इसी प्रकार जानकीजी को भी पूजे और बन्नोपवीत की जगह सीताजी को भूषण देवे ॥ १७ ॥

१७-।- اور پان وغیرہ سے پہلے شری رامچندرمی کا پوجن کرے اور اسپطرح
شری جاکنی جی کی بھی پوجا کرے اور فضیلت کی جگہ ستیامی کو گھسا پتاوے -

मू. सूत्रं चामरं दत्त्वालक्ष्मणं पूजयेत्ततः । गंधं
पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च ॥ १८ ॥ १८ ॥

टी. पुनिलक्ष्मणपूजनकरे सूत्रचर्चें संयुक्त । गंध
पुष्प अरु धूप दीप पुनि नैवेद्य सुउक्त ॥ १८ ॥

टी. और सूत्र चामर से भूषित करके फिर धूप दीप गन्ध पुष्प नैवेद्य इत्यादि पंचोपचार से लक्ष्मणजी का पूजन करे ॥ १८ ॥

१८-।- اور چھत्र اور چूड وغیرہ دینے کے بعد پंचोपचार سے लक्ष्मण जी की पूजा करे -

मू. पञ्चाङ्गमेतत्सर्वेषां पूजाया एष वै क्रमः । पू
जापुरुषसूक्त्या च राघवस्य प्रशस्यते ॥ १९ ॥

टी. पूजाक्रमपञ्चाङ्गयहिपूजे देवसमस्त । श्रीर
घुवरपूजापरमपुरुषसूक्ततें शस्त ॥ १९ ॥

टी. यह जो गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य इत्यादि पंचोपचार लक्ष्मणजी के पूजा में कहा है इसी क्रम से सब देवतों को पूजे और पुरुषसूक्त से अर्घ्यत वहस्त श्रीरघु

इत्यादि मन्त्र से श्री रामचन्द्रजी को पूजे ॥ १९ ॥

۱۹ - اور اس طرح سوکرت سے سب دیوتاؤں کا پوجن کرے اور شری رام چندر جی کا پوجن پُرش سوکرت سے یعنی سہسرتیئر کھا وغیرہ منتر سے کرے۔

मू. श्रीसूक्तयाजानकीपूजाकार्यसाधकतत्तमैः

अन्येषां नाममात्रेण चतुर्थी नमसा सह ॥ २० ॥

दो. श्रीसूक्तसेजानकिहिंपूजहिंसाधकलोग।अ

परनामकेमात्रमेंचतुर्थ्यन्तवमयोग ॥ २० ॥

टी. श्री सूक्त अर्थात् श्री श्वते लक्ष्मीश्वपत्ने त्यादि मन्त्र

से सीताजी का पूजन उत्तम साधक लोग करें और

अपरे देवताओं के नाम से चतुर्थ्यन्त करनम शब्द संयुक्त

पूजन करै ॥ २० ॥

۲۰ - اور شری سیتا جی کی پوجا شری سوکرت سے یعنی شری شری لکشمی شری وغیرہ منتر سے کرے اور دیگر دیوتاؤں کے نام میں چہرتیئر کھا کا لفظ لگا کر پوجن کرنی

मू. अथवा ब्रह्मगायत्र्या सर्वपूजनमिष्यते। एवं

होमोपिकर्त्तव्यस्तर्पणस्यैषवैक्रमः ॥ २१ ॥

दो. ब्रह्मगायत्रितेयवापूजेसबहिंसुजान। होम-

हुअस्तर्पणकरैयहिक्रमतेमतिमान ॥ २१ ॥

टी. अथवा ब्रह्मगायत्री से सब किसी का पूजन करै

और इसी प्रकार होम और तर्पण भी करै ॥ २१ ॥

۲۱ - یا برہم گایتری سے سب دیوتاؤں کا پوجن کرے اور اس طرح

ہوم اور تپن بھی کرے۔

मू. पुनःशंखेजलंग्राह्यंअर्घ्यंदद्यादिचक्षणाः।राम
भद्रमहेष्वासरघुवीरनृपोत्तम ॥२२॥२२॥

दो. शंखमाहिंजललेदुपुनिदेइअर्घ्यमतिधीर।राम
भद्रनृपवर्यकहिमहेष्वासरघुवीर ॥ २२ ॥

टी. फिर शंख में अर्घ्य के वास्ते जल लेकर कहै कि हे
राम भद्र हे नृपोत्तम हे महेष्वास ॥ २२ ॥

२२ - बाद اسکے شکم میں پانی ارگہ وغیرہ کے واسطے لیکر یہ کہے کہ ہے رام
بھدر اور ہے अत्तम राजा اور ہے नृपोत्तम -

मू. गृहाणार्घ्यंमयादत्तंरूपयारघुनन्दन।उत्प-
न्नासिमहाभागेस्वर्णालांगलपद्मतौ ॥२३॥

दो. गहहुअर्घममदत्तजेरूपासहितरघुनन्द।लां-
गलपद्मतेस्वर्णकेउत्पन्नासिअमन्द ॥२३॥

टी. हे रघुनाथ मेरे दिये हुए इस अर्घ्य को रूपा करके
गृहण करो इतना कह कर रामचन्द्रजी को अर्घ्य देवे
फिर अर्घ्य लेकर जानकीजी से कहै कि हे महाभागे
स्वर्ण के हल से तुम्हारी उत्पत्ति है ॥ २३ ॥

२३ - اور ہے ارگہ نندن میرے دیئے ہوئے اس ارگہ کو کرپا کر کے
قبول کرو یہ لکھن شری राजपुत्रजी को रूपा देवो बाद از ان ارگہ لیکر जानकी
जी से کہے کہ ہے महाभागोती सुनने के हल से तुम्हारी पیدایش ہے -

मू. गृहाणार्घ्यंमयादत्तंरूपयामिथिलेशजे।मि-
थिलाधीश्वरंपार्श्वेजनकंतत्रपूजयेत् ॥ २४ ॥

دو. کھپا یوکت میثیلےش جے رتن اُردھ م م لے ہ۔ بھ
ریشا اُردھ میثیلےش وارہی پوجے جن ک س نے ہ ॥ ۲۴ ॥

دی. ہے میثیلےش جے مےرے دیوے ہوے اس اُردھ کو کھپا
کر کے گڑھا کرے۔ اتنا کہہ کر اُردھ دے۔ اسی جگہ
ہے ایک پارک میں میثیلا دیوے مہاراج جن ک جی کا
بھی پوجن کرے ॥ ۲۴ ॥

۲۴۔ ہے متعلیش جی کی کتیا میرے دیوے ہوں اور گھ کو کر پارکی قبول کرو یہ کھریا کئی جی
کو ارگہ دے پھر اسی جگہ ایک نبل میں مسراج جنگ جی کی بھی پوجا کرے۔

م. پانچا ڈھئے پوجن کھتوا اُردھ تسمے نیوے دے تے ۱

ویدے ہا دی پ راجے ندر میثیلےش کھپا نیوے ۱ ۲۵

دو. اُردھ دے ہ پوجن کے پانچ پرکار نرے ش۔ نرے پ
دے ہ راجے ندر اُردھ کھپا اُردھ میثیلےش ۱ ۲۵ ॥

دی. فیر پانچ پچار پوجن کر کے اتنا کہہ کر اُردھ
دے کہ ہے ویدے ہا دی پ راجے ندر ہے میثیلےش کھپا نیوے ۲۵
۲۵۔ اور پتھو پتھو سے پوجن کر کے اور ارگہ لیکر یہ کہے کہ ہے جوگی راج
راجاؤن کے راجا متعلادھیش کر پانڈھان۔

م. گڑھا اُردھ م م دتت س رتھ سیدھ پ رے چھ مے ۱ ن
رتن گیت واڈا دیکھتوا تھو س ن یے ت ۱ ۲۶ ॥

دو. گھڑ اُردھ م م دتت جو س رتھ سیدھ مے دے ہ ۱ نرے پ
گیت واڈا دیکھتوا تھو س ن یے ت ۱ ۲۶ ॥

دی. مےرے دیوے ہوے اس اُردھ کو گڑھا کر کے س م پورے

सिद्धि मुमको दीजिये तत्पश्चात् नृत्य गीत वाद्यादि कर
के दिन को बितावै फिर प्रीति पूर्वक ॥ २६ ॥

२५ - میرے دیے ہوئے اس ارگھ کو قبول کر کے سب سیدھیان
بجھ کر دیجیے یہ لکھ ارگھ دی جا سکے تمام دن ناچ گان زمین بسر کرے پھر بھکت کے ساتھ

मू. तत्रापि महापूजां कृत्वा जागरमाचरेत् । पार-
णाहे द्विजान्सम्यक् भोजयित्वा तु भक्तितः ॥ २७ ॥
दो. बहुरात्रिपूजामहाकरै जागरणयुक्त । पारणा
दिन बहुभांतिसे द्विजहिं करवै मुक्त ॥ २७ ॥

टी. रात्रि में महा पूजा करके जागरण करे और पारणा
के दिन सम्यक् प्रकार से ब्राह्मण भोजन करावै ॥ २७ ॥
२६ - रातों में पूजा करके जागरण करे और पारणा के दिन सम्यक् प्रकार से ब्राह्मण भोजन करावै

मू. शुचये देवमक्ताय प्रतिमां तानिवेदयेत् । अ-
थ वायदिचेद्भक्तिः पूजायां नैष्ठिकी भवेत् ॥ २८ ॥
दो. देवभक्त शुचिहोदुजो प्रतिमाताको देइ । अथ
वायदिचेद्भक्तिमें पूजानिष्ठा लेइ ॥ २८ ॥ २८ ॥

टी. फिर उस प्रतिमा को जो मनुष्य रामभक्त और प-
वित्र होवै उसको दे देवै अथवा आप ही जो अर्द्धायुक्त
पूजन करने की निष्ठा रखता हो धारण करै ॥ २८ ॥

२८ - بعد از آن اس پر تما کو ایسے شخص کو دے دیوے جو کہ رام بھکت اور
پوتر ہو اور اگر اسکو پوجا کر نیکی شر دھا ہو تو آپ ہی اپنے پاس رکھے -

मू. तदा तां स्वगृहे स्थाप्य पूजयेत्प्रत्यहं सुधीः ।

آचार्य्यप्रदातव्यादक्षिणांकाञ्चनंभुवं॥२८॥

शे. तो आपन गृह या पिके पूजहि नित्य सुधीर । देहि
दक्षिणा याज कहिं काञ्चन भूमि सुधीरा ॥ २८ ॥

टी. तो अपने घर में उस प्रतिमा को स्थापन करके पू-
जन करे और उस आचार्य्य ब्राह्मण को जिसने व्रत में
पूजा कराया है उसको सम्यक् प्रकार से दक्षिणा देवे
सुवर्ण और उन्नम भूमि देवे ॥ २८ ॥

۲۹- تو اس پر تم کو اپنے گھر میں استھاپت کر کے پوجا کرے اور اس
آچارج براہمن کو جس نے برت میں پوجا کرایا ہے ہر طرح کی دچھنا اور سونا اور
عقدہ زمین دیوے -

मू. गाःसवत्सानववस्त्रंरत्नंधान्यंगृहादिकम्।अ-
थवाशक्तितोदेयंयथातुष्येद्विजोत्तमः॥३०॥

शे. गविसवत्सनववस्त्रगृहरत्नधान्यसुखसाज।श-
क्तिसरिससवदेइजेहिहोहितुष्टद्विजराज॥३०॥

टी. बच्चा युक्त गऊ और वस्त्र और रत्न और धान्य
और नवीन घर इत्यादि सब कुछ अपने विभव के अ-
नुसार देवे कि जिसमें ब्राह्मण तुष्ट होजाय ॥ ३० ॥

۳۰- اور بچہ اسہت گنو اور نیا کپڑا اور رتن اور دھانیہ اور مکان وغیرہ اپنی
اوقات کے موافق اس براہمن کو دیوے کہ جس میں وہ خوش ہو جائے -

मू. भूयसींदक्षणांदद्यात्स्वस्तिवाचनपूर्विकां।ए-
वमारधितारामःसीतयासहभक्तितः॥३१॥

दो. देइभूयसीदक्षिणास्वस्तिवचनसहउक्त। यह
आराधनभक्तितेरामजानकीयुक्त ॥ ३१ ॥

टी. तत्पश्चात् भूयसी दक्षिणा भी स्वस्ति वाचन पूर्व-
क देवै हे मुनि इस प्रकार की भक्ति और आराधन से
श्री रामचन्द्र और श्री जानकी जी ॥ ३१ ॥

३१- बाद اسکے بھوسی دچھنا یعنی جو بعد فراغت جگت کے براہمن کو دیا جاتا ہے
منگل چمن پڑھ کر دیا ہے من اسطرح کی بھکت اور آرادھن سے شری رام او جابگی

मू. ददातिपरमान्कामान्सुराणामपिदुर्लभान्
नानेनसदृशंपुण्यंनानेनसदृशंब्रतम् ॥ ३२ ॥

दो. देतकामनापरमसबजोदुर्लभयतदेव। यहि
समक्षपरनपुण्यजगनहिंसमानब्रतसेव ॥ ३२ ॥

टी. उस भक्त की बड़ी बड़ी मन कामना सब पूरी कर
देते हैं जो देवताओं को भी दुर्लभ है और हे मुनि इ-
स के समान पुण्य अथवा ब्रत कोई दूसरा नहीं है ॥ ३२ ॥

३२- اس بھکت کی بڑی بڑی من کا مانا پوری کر دیئے تہیں جو دیو تو کو بھی
دولہ ہے من اسکے برابر کوئی دوسرا من یا برت اور نہیں ہے -

मू. श्रीरामतोषकोपायंनानेनसदृशंकचित्। सु-
रापीवसहस्तेयीगुरुपत्नीप्रधर्षकाः ॥ ३३ ॥

दो. यहिसमानकच्छुअपरनहिंपरितोषैश्री राम।
द्विजघातीमदपीस्तेयीपरिधर्षकगुरुवाम ॥ ३३ ॥

टी. श्री रामचन्द्रजी को तोष करने का उपाय विचाय

इसके दूसरा कोई नहीं है और जिसने ब्रह्मघात अथवा सुरापान अथवा सुवर्ण की चोरी अथवा गुरु की स्त्री से गमन किया हो ॥ ३३ ॥

३३ - श्री रामचंद्रजी को خوش करने की तद्विषय सोचें इसके दूसरी एक भी नहीं है जो आदी ब्रह्म लक्ष्मी या श्राद्धी या प्लाउंड या क्रोड की अस्त्र से फल भ्रंश नोला हो -

मू. शुद्धतामाप्नुयः सर्वप्रयान्तिपरमांगतिम् ॥ ३४ ॥

दो. होत शुद्धते सर्व नर लहत परम गति धाम । देव सुवन उन विंशके कहि अध्याय ललाम ॥ ३४ ॥

टी. ऐसे मनुष्य भी शुद्ध होकर परम गति को पाते हैं ॥ ३४ ॥

३४ - वह भी इस ब्रह्म करने से प्रम गति पाता है -

इति श्री बृहद्विष्णुपुराणे

एकानविंशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

ध्यायः ॥ १८ ॥

मू. मैत्रेय उवाच ॥ मिथिलाधिपतेर्वेश्मदुर्गाणिपरिखास्तथा । अन्तःपुराणिसर्वाणि यथाकाराणि वर्णय ॥ १ ॥ १ ॥

दो. मिथिलापतिके वेश्मपुनिदुर्गखातपरिमान । अन्तःपुरयत सर्वतत जेहि विधिकरहु वखान १

ही. मैत्रेयजी फिर बोले कि हे मुनि मिथिलापति के दुर्ग जो हैं गढ़ और खाईं और उनके पुर के मकान बगैरा जिस तरह के जो हों उनको भी वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

بربريشن پيران کا بیسوان اڑھیا

۱- پیریشن جی کہنے لگے کہ ہے من مہاراج جنگ کا قلعہ اور خندق اور ان کے محلے اسے وغیرہ مکانات کا حال بھی بیان فرمائیے۔

मू. पराशर उवाच ॥ दुर्गजनकराजस्य प-
रिखात्रितयान्वितं । नैकशालसमुत्संधं
स्वर्णकुट्टिमसंयुतं ॥२॥२॥२॥२॥२॥२॥

दो. जनकराजके दुर्गपुनिरवातातिनहै उक्त। शाल
बहुतअतिऊंचसोस्वर्णकुट्टिमसेयुक्त ॥ २ ॥

श्री. पराशरजी बोले किराजा जनकजी को दुर्ग अर्थात्
किला तीन खाईं सहित हैं और अनेक शाल कहे इक
मंजिला नहीं कितने मंजिला के ऊंचे सीने के कुट्टिम अ-
र्थात् कितनी एक भूमि मणि जदित हैं ॥ २ ॥

२- मीराश्रीजी ने कहा कि राजा जनक का किला तीन खाँदों से घिरा हुआ है
और घेरने के लिये बहुत बल्लियाँ लगी हैं।

मू. बणिजामापणैर्युक्तं बीरवासविराजितं । नि-
मियंशप्रसूतानां गृहरत्नैश्च शोभितम् ॥ ३ ॥

दो. और बणिकपणयुक्तपुनिबीरवासविराज

निमिकुलभूपतिगृहरतनशोभितसकलसमाज ३

टी. और वणिकपण अर्थात् बजार संयुक्त और बीरलो
गों के रहने के स्थानों से अत्यन्त शोभित और कितने
निमि बंशी राजा लोगों के उत्तम उत्तम घरों से विराजमा-
न है ॥३॥

۳۴ - اور طرح طرح کی بازاریں بنی ہوئی ہیں اور بہادر آدمیوں کیواسطے
علیحدہ مکانات بنے ہوئے ہیں اور نرم بنشی راجا لوگوں کے مکانات عمدہ بنے ہوئی ہیں

मू. तन्मध्येराजराजस्य स्फटिकं मन्दिरं चरं । वामे
कुशध्वजा वा संगृह्यतेः समन्वितं ॥४॥ ४॥

दो. तासु मध्य नृप नृपतिके श्रेष्ठ फटिक मय धाम ।
वास कुशध्वज रत्न गृह शोभित तसु दिशि वाम । ४।

टी. उसके बीच में राज राजेश्वर महाराज जनकजी का
मन्दिर स्फटिक मय है और उसके बायें तरफ कुशध्व-
ज नाम जनक के भाई का मन्दिर रत्न मय है ॥ ४॥

۳۵ - ان مکانوں کے بیچ میں ہمارا راجا جنک کا مندرشل آفتاب کے روشن ہو اور اسکے
بائیں طرف کٹش و صوج نام جو کہ راجا جنک کے بھائی ہیں انکا مندر جو اہتر اسم مرقم ہے

मू. राजराजगृहोद्याने गजाश्वभुवनानि च । गोपु-
रं प्राग् भवद्वारं तदन्तर्वर्तिनी सभा ॥ ५ ॥

दो. राजभुवनके निकटमे गजहयभुवनसुहाय ।
पूर्वद्वारगोपुरति ही अन्तरसभालखाय ॥५॥

टी. और राज राजेश्वर महाराज के मन्दिर के पास ही में

अश्व और हाथियों के रहने के घर बने हैं और पूर्व
द्वार पर गोशाला है और उसके बीच में सभा है ॥ ५ ॥

५- और मराज के मंदिर के पास सप्टल और फिलिनां बना हुआ है और मूर्त्ति
द्रोण के सन्ने गोशाला बना है और उसके दरियान में सभा बनी है-

मू. शेशान्यां राजते ब्रह्मन् महारत्नौघसंकुलम् । वायु-
व्येतु गृहाराभं नैऋत्ये कोशसञ्चयम् ॥ ६ ॥

शे. हे मुनिदिशा दृशानपै सर्वरत्नगृहजान । वायु
कोण आरामगृह नैऋतिकोशवधान ॥ ६ ॥

शे. और श्री जनकजी के मन्दिर से दृशान कोण पर ब-
डे बड़े भारी मकान रत्नों के जिनमें तोशा खाना है बने है
और नैऋत्य कोण पर भण्डार खाना है ॥ ६ ॥

५- और मूर्त्ति जब भी के मकान के मूर्त्ति और मूर्त्ति कोश में बहुत मकान
बने हुये हैं किन्तु तोशा खाने है और मूर्त्ति कोश में बहुत मकान है-

मू. महानसंतथाग्नेये दक्षिणे देवतालयं । लक्ष्मी
निधिरिति ख्यातो जानक्यवरत्नो हियः ॥ ७ ॥

शे. अग्नि कोण पर पाक गृह देव भवन दिशियाम ।
छोटबन्धुसियके जगतरख्यात लक्ष्मिनिधिनाम ७

शे. और अग्नि कोण पर पाक गृह और दक्षिण दिशा
पर देवता के मन्दिर हैं और श्री जानकी जी के छोटे भाई
जिनका नाम लक्ष्मीनिधि करके विख्यात है ॥ ७ ॥

६- और मूर्त्ति कोश में मूर्त्ति का मकान है और मूर्त्ति कोश में मूर्त्ति का मकान है-

دیوتا کا مندر ہے اور شری جاکئی جی کے چھوٹے بھائی جگننام لچھی ندرہ مشہور ہے۔

م. تस्यालयं महाभागपश्चिमे समुद्राहतं । कुश
केतुगृहं रम्यं उत्तरे सुविराजितम् ॥ ८ ॥ ८ ॥

دو. महाभागतेहिके सदनपश्चिमदिशा कसानाशो
भितगृह कुशकेतुके उत्तरदिशि पैजान ॥ ८ ॥

سی. उनका मकान हे मुनि जनकजी के मन्दिर के प-
श्चिम ओर है और कुशकेतु का मन्दिर राज मन्दिर
के उत्तर तरफ है ॥ ८ ॥

۸۔ انکا مکان مہاراجا جنک کے مندر سے دیکھ کر طرف سے اور گت
کا مندر راج مندر کے اتر طرف ہے۔

م. पूर्वे रङ्गवलीविद्यादिति वै मन्दिरक्रमः । म-
ध्ये राजालयं श्रेष्ठं तन्मध्ये स्वर्णमाण्डपम् ६

दो. नृत्यभवनदिशि पूर्व है याक्रम भवजसुहात ।
जनकभवनके मध्यमें कञ्चन माण्डपरव्याता ६ ।

سی. और पूर्व तरफ नृत्यशाला है इसी क्रम से वहाँ
के सब मन्दिर हैं और महाराज का मन्दिर इन सब के म-
ध्य में है और उसके मध्य में एक माण्डप बहुत उत्त-
म स्वर्ण मय है ॥ ६ ॥

۹۔ اور پورے طرف نواح اور گانے کا مکان ہے اس طرح وہاں کے سب مکانات
بہت آراستہ و پیراستہ ہیں اور مابین ان کے مابین جی کا مکان ہے اور اسکے
پچھلے میں ایک مندر سونے کا (طلائی) بہت عمدہ بنا ہوا ہے۔

मू. सुवर्णमाण्डपं दृष्ट्वा सर्वकालेषु मानवाः । सा
युज्यफलमाप्नोति रामसन्निध्यमेव च ॥ १० ॥

दो. कञ्चनमाण्डपकोलखतसर्वकालनरजौन । सा
युज्यहुफलकोलहतारामसमीपीतौ न ॥ १० ॥

टी. उस माण्डप का दर्शन जो कोई मनुष्य किसी कालमें
करता है वह सायुज्य फल को प्राप्त होकर श्री रामचन्द्रजी
के समीप में बास पाता है ॥ १० ॥

१०- جو لوگ اُس مندر کا दर्शन کیسوقت کرتے ہیں وہ مقصد دلی پا کر
شری رام چندر جی کے پاس باس کرتے ہیں۔

मू. महापातकिनो लोके पापिष्ठायेन राधमाः । प-
शवः पक्षिणः प्रेता ये चान्ये पापयो नयः ॥ ११ ॥

दो. अतिपापी जे अधमनर महापातकी रव्यात ।
पशुपक्षीप्रेतादिजगपापयोनिजे जात ॥ ११ ॥

टी. इस लोक में जो महा पातकी और बड़े बड़े अध-
म अधम मनुष्य हैं और पशु और पक्षी और प्रेत इ-
त्यादि अपर जीव जो पाप योनि से उत्पन्न हैं ॥ ११ ॥

११- جو لوگ اس دنیا میں بڑے پاپی اور بڑے اذم ہیں اور پش لو
پنجھی اور پریت وغیرہ اور علاوہ انکے جو پاپ جون میں پیدا ہیں۔

मू. कथञ्चित्तत्र चेज्जातास्तेपियांति परां गतिं । किं
पुनर्यान्तियेभक्त्या जानन्तस्तत्फलं मुने ॥ १२ ॥

दो. कौनिहुविधितितजातजेपरमगतिहिसो पाइ।

भक्ति सहित जो जान मुजित सफल कहीन जाइ १२

री. वह किसी प्रकार जाकर एक बेर भी जो उस म-
एडप को देखें तो परम गति को प्राप्त होते हैं और जो
कोई अद्भुत से उसका फल जानकर वहाँ जाता है उस
का फल कहाँ तक कहें ॥ १२ ॥

۱۲- وہ اگر کسی طرح سے وہاں جا کر مندر کا दर्शन کریں تو پریم گت کو پاتے
ہیں اور جو کوئی وہاں کا پھل جا کر بھکت سے جاتا ہی اسکا پھل بیان نہیں ہو سکتا

मू. एवमेव विधानेन राजते राजमन्दिरं । राजा-
लयवरिष्ठस्य ऐशान्यां कल्पपादपम् ॥ १३ ॥

दी. यह प्रकार शोभित परमभूपति भवन अनूप । दि-
शिद्धाननूपसदनके कल्पवृक्षसुखरूप ॥ १३ ॥

री. इस प्रकार से शोभित जो महाराज का मन्दिर है
उसके ईशान कोण पर कल्प वृक्ष है ॥ १३ ॥

۱۳- اس طرح کا مندر جو مہاراج کا ہے اس کے مشرقی و شمالی گوشہ پر کल्प پرچھوڑی

मू. एवमादिप्रकारेण दिव्यसम्पत्ति शोभितं । दुर्गं
दुर्गतमं दिव्यं विख्यातं भुवनत्रये ॥ १४ ॥ १४ ॥

दी. एवमादिसुप्रकारसे सम्पत्ति दिव्यसुहात । दुर्गं
दुर्गतमं दिव्यं प्रतितीनलोकमहं ख्यात ॥ १४ ॥

री. इस प्रकार नाना सम्पत्ति से शोभित जनक महाराज
न का किला शोभा युक्त अत्यन्त कठिन तीनों लोक में
विख्यात है ॥ १४ ॥

१५ - اس طرح کا ہمارا جج جناب جی کا قلم بہت عمدہ و لائق تینوں لوگوں میں مشہور ہے۔

मू. समारभ्यमहाभागपूर्वहरिहरालयं । त-
थामैत्रेयनिर्दिष्टपश्चिमेवाजलेश्वरम् ॥ १५ ॥

श्लो. पूरवहरिहरसदनतेसमारभ्यः प्रतिभाग । तथा
जलेश्वरलौसुनहुपश्चिमहृदः अनुराग ॥ १५ ॥

टी. हे मुनि पूर्व हरिहरालय से पश्चिम जलेश्वर तक ॥ १५ ॥

१५ - ہے من پورب طرف بشق مہادلو کے استخان سے پچھ طرف جلیستونگ -

मू. गिरिजालयमारभ्यावधैधनुषस्थितिः । इ-
तिदुर्गस्यमर्यादा मिथिलासामहापुरी ॥ १६ ॥

श्लो. गिरिजासदनसमारभ्यधनुषक्षेत्रलौजानाः
हृदक हे यहदुर्गकेमिथिलापुरीमहाना ॥ १६ ॥

टी. गिरिजा स्थान से उत्तर तरफ धनुष क्षेत्र तक यह गढ़
का प्रमाण मैंने कहा है इसके भीतर मिथिला पुरी है ॥ १६ ॥

१६ - اور گر جا استخان سے اتر طرف کے دھنیش چھتر تک اس قلم کا
احاطہ ہے اسی کے اندر مہتلا پوری ہے -

मू. तत्रान्तवाटिकाभिश्चवनारामैश्चशोभितं । दु-
र्गदुर्गतमंदिर्व्यविख्यातंमुवनत्रये ॥ १७ ॥

श्लो. तासुनिकटबहुवाटिकाशोभितवनःप्राराम ।
नदीसरोवरनिविधविधिजलःप्रफुल्लनुपाम १७

टी. और नगर के समीप में बाड़ी और फुलवाड़ी और ब-
ड़े बड़े शोभायमान नदी और जलाशय नाना प्रकार के और

सरोवर इत्यादि शोभित हैं ॥ १७ ॥

६।- और गानों के نزدیک ही बाغिचे और बग़लवाड़ी और बहुत बहुत عمدे دریا
اور तालاب اور چاه بختہ وغیرہ بنے ہوئے ہیں -

मू. शोभते तैरभूक्तिश्च धनधान्यसमाकुला उत्त
रेकाञ्च नारायणमहर्षिगणसेवितम् ॥ १८ ॥

दो. शोभितञ्जतिरहुतसदा धनधान्यादिसमेत ।
उत्तरदिशि काञ्चन विपिनसेव्यमहर्षिजेत १८

टी. नाना प्रकार के धन धान्यादिक से संयुक्त परम शो-
भित जो मिथिला पुरी है तिसके उत्तर दिशा में काञ्च-
न वन महर्षि लोगों से सेवित है ॥ १८ ॥

१८।- انواع و اقسام کی نعمتوں سے مالا مال نہایت پُر نضا جو مستعلا پُری ہی
آسکے اتر طرف کا پُچن بن ہے جس میں ہمارے کچھ لوگ رہتے ہیں -

मू. बहुपुष्पफलोपेतं द्वितीयमिव नन्दनं । सरोज
वनमाख्यातं सन्तान वनमेव च ॥ १९ ॥

दो. बहुतपुष्पफल युक्तजनुनन्दनवन है द्विजि । वन
सन्तान सुहावनीपुनसरोजवन कृजि ॥ १९ ॥

टी. बहुत पुष्प और फलों से संयुक्त मानो दूसरा नन्दन
वन है उसके भीतर सरोज वन और सन्तान वन ॥ १९ ॥

१९।- بہت طرح کے پھل اور پھولوں سے بھرپور گویا دوسرا نندن بن ہی اور اسکی اندر سرون
بن

मू. मन्दारवनमित्येवं सर्वं पुष्पितदुमम् । चम्प
कारायमाख्यातं केलिकौतुककोननं ॥ २० ॥

श्लो. काननपुनिमन्दारकेदुमपुषितनवपात। के
लिकौतुकारायपुनिचम्पकवनविरव्यात २०

टी. और मन्दारवन और केलिकौतुकाराय और चम्पक
वन जो सर्वत्र विख्यात है और उस वन में सब ऋतु-
ओं के फल और फूल सदा बने रहते हैं ॥ २० ॥

४० - اور مزار بن اور کیل کو تک بن اور چمپک بن جو مشہور عالم ہے اس میں
ہر فصل کے پھل اور پھول ہمیشہ موجود رہتے ہیں -

सू. कुमुदसुखदंप्रोक्तवसन्तारायमेवच। स्फा-
टिकप्रतिमञ्चैवतथानन्दविवर्द्धनं ॥ २१ ॥

श्लो. कुमुदविपिनजोसुखदप्रतिप्ररुवसंतवनलेष
प्रतिमाशुभजनुस्फटिककेदेतहर्षजनशेष २१

टी. और कुमुदवन और वसन्तवत जिसमें वृक्षादिक
स्फटिक की प्रतिमा समान हैं देखनेसे आनन्दबढ़ता है २१
४१ - اور کمد بن اور بسنت بن جس میں درخت وغیرہ اسپٹھک کی صورت
کی طرح ہیں اسکے دیکھنے سے نہایت خورمی و تازگی حاصل ہوتی ہے -

सू. शृङ्गारकाननञ्चैवउपमानतिरस्कृतं। सुग-
न्धिरससंयुक्तंसुगन्धिकुमुमाकरं ॥ २२ ॥

श्लो. शिस्कारउपमानकोकरतविपिनिशृङ्गार ।
सुन्दरसरससुगन्धियुतफूलेकुसमअपार। २२

टी. शृङ्गारवन जिसके समान दूसरा वन नहीं है वह सु-
न्दर सुगन्धरस सहित अच्छे फूलों से युक्त है ॥ २२ ॥

۲۲۔ سنگار بن جو کہ لاثانی ہے اس میں عمدہ عمدہ خوشبودار درسیلے پھول لگے ہوئے ہیں

سू. कदम्बकान्तिकल्लोललवंगवनमेवच। के-
तकीवनमित्येवकाञ्चनारण्यमध्यगं॥२३॥

दो. बनकदम्बकल्लोलपुनिअकलवंगवनआहिं
केतकिवनइत्यादियतमध्यस्वर्णवनमाहिं२३

टी. और कदम्ब कान्ति बन कल्लोल बन लवंगवन केतकी ब-
न इत्यादि ये सब बन काञ्चन बन के बीच में हैं ॥ २३ ॥

۲۳۔ اور کہ بن کانت بن کلال بن لوانگ بن کیشی بن وغیرہ کا بن بن کبج میں ہیں۔

सू. तत्रान्तेगिरयःपञ्चतेषांनामानिमेअणु। नी-
लाद्रिःपश्चिमेख्यातःस्वर्णाद्रिशोत्तरेमतः॥२४॥

दो. तासुप्रांतगिरिपञ्चहमकहहिसुनहुतसुनाम।
पश्चिमनीलाद्रिउदिचकञ्चनगिरिअनुपाम॥२४॥

टी. उस काञ्चनारण्य के प्रांत में पाँच पर्वत हैं उनके
नाम सुनिये कि पश्चिम नीलाद्रि और उत्तर स्वर्णाद्रि ॥ २४ ॥

۲۴۔ اور کا بن بن کے کنارے پر پانچ پہاڑ ہیں ان کے نام یہ ہیں۔ کہ کچھ
طرف نیل گر اور اتر طرف سون گر۔

सू. कौतुकाद्रिस्तथायाम्येपूर्वभागेमधुअवः। स-
ञ्जीवनगिरिमध्येख्यातालोकत्रयसुने॥२५॥

दो. कौतुकाद्रिदक्षिणादिशिहिपूर्वमधुअवतानु। सं-
जीवनगिरिमध्यमुनिख्यातलोकत्रयमानु॥२५॥

टी. दक्षिण तरफ कौतुकाद्रि और पूर्व मधुअव और बीच

میں سنجیو ن گری جو تریلک میں ویریا ت ہے ॥ ۲۵ ॥

۲۵- اور دکھن طرف کو تک گر اور یورب طرف مدھ شر و اگر اور بیچ میں سنجیون گر واقع ہے یہ ہاڑ تینوں کوک میں مشہور ہیں۔

م۔ دurgatya chimito bhage yojan tritayannvita। yata
sthalan re dasya chalangal padhati: ॥ ۲۶ ॥

دو۔ گد تے پشچیم ماہا گ مے کھریو جن تری تری ی۔
جہ مین پ جن ک کے لانگال پدھ تری تری ॥ ۲۶ ॥

دی۔ جنک ماہارا ج کے کھلا سے پشچیم اور بارہ کو۔
ش پر یات سٹان ہے جہاں پر لانگال پدھ تری اتریا تھل
کے شرا ور سے ॥ ۲۶ ॥

۲۶ ماہا جہ جنک کے قلعہ سے پشچیم طرف بارہ کو س کے فاصلہ پر جنگ
کا سٹان ہے جہاں پر تل کے ذریعہ سے۔

م۔ samutyanmahabhagatitara ghavallama। t
vishesh phal loka ke sarv kam pradaya kam। ۲۷

دو۔ ماہا ماہا گت یجن جہ رام بھما سہی ی۔ سارو
کا م پد لک مہرہ فال بھیشک م نہی ی ۲۷

دی۔ ہے ماہا ماہا اتری رام بھد جی کی پریا اتری سہتا جی
پر کدھ ڈی اتری اتری سٹان کے دھرن کرنے کا بڈا فال ہے
اور سٹھری کامنا لک میں پاپ ہوتی ہے ॥ ۲۷ ॥

۲۷ شری سہتا جی جو کہ شری رام چند جی کی بہت پیاری ہیں پر گھٹ ہوتی
تھیں اس سٹان کے دھرن کرنے سے بہت پھل اور بھرا دین حاصل ہوتی ہیں۔

سू. मिथिलासर्वतःपुण्यासर्वकाराणशोभिता।त

स्यानिवासिनांपुण्यंमयावक्तुंनशक्यते।२५

दो. मिथिलापुण्यासर्वतेकाराणसर्वसुहात।तित

वासिन्हकेपुण्ययतहमसेकहानजात॥२६॥

टी. मिथिलापुरी सब तरह से पुण्या है और सब कारणासे

शोभित है यहाँ के रहने वाले लोगों का पुण्य हम से ब

रण नहीं हो सक्ता है ॥ २६ ॥

۲۸ - مہیلا پُری ہر طرح سے پوٹتر سہی اور سب صورتوں سے شو بجا

وان ہے بیان کے رہنے والوں کا پوٹتر مجھ سے بیان نہیں ہو سکتا -

सू. सद्योविनाशयेत्पापंमिथिलेतिप्रकीर्तनात् ।

धन्यास्तेयेप्रयत्नेननिवसन्तिमहामुने॥२६॥

दो. शीघ्रहिनाशतपापकोलेतहिंमिथिलानाम ।

हेमुनिधन्यसुयत्नयुतकरहिंवासतेहिंमाम।२६।

टी. हे मुनि (मिथिला) इस तीन अक्षर के उच्चारण क

रने से उसी समय सम्पूर्ण पाप नाश हो जाते हैं और जो

कोई यत्न पूर्वक वहाँ निवास करता है वह अति धन्य है।२६।

۲۹ - مہیلا لفظ کے کہنے سے اسی وقت سب پاپ دور ہو جاتا

ہیں اور جو لوگ مہیلا پُری میں رہتے ہیں وہ بڑے خوش نصیب ہیں -

सू. विचरेन्मिथिलामध्येग्रामेग्रामेविचक्षणः।स

न्यस्तानांविधिरयंवीतरागवतामपि॥३०॥

दो. जेनिजकुलअरुमोहतजिग्रामग्रामतिरभुक्त।

अटनमध्यविधियहकरैबुधविरक्तिसंयुक्त।३०।

दी. जिन लोगों ने अपने कुल को त्याग करके मोह को छोड़ दिया है उन परिडतों को चाहिये कि सदा मिथिला में रहकर गाँव गाँव फिरा करै उनके वास्ते यह विधि है कि।३०।
 ३० - جن پنڈت لوگوں نے اپنے خاندان والوں کو اور دنیا کی سوا سوس کو ترک کر دیا ہے انکو چاہیے کہ ہمیشہ ميٹھلا پڑی میں رہ کر گائون گائون پھرا کرین انکے واسطے یہ تدبیر ہے کہ -

सू. कपिलेश्वरमारभ्यहरिणाक्षीजपावनीम्।पिप्य
लीबनमागम्यपुनःपुष्यहरंब्रजेत् ॥३१॥३१॥

दी. कपिलेश्वरआरम्भकरिहरिणाक्षीकोजाय।ज
पापिप्यलीबनगयेबहुरिपुष्यहरआय।३१।

गी. कपिलेश्वर से चलै हरिणाक्षी तीर्थ को जाकर वहाँ ज
पा तीर्थ होकर पिप्यलीबन होकर फिर पुष्यहर की यात्रा
करै ॥ ३१ ॥

३१ - پہلے کپلیشور سے چلین پھر ہریناکشی تیرتھ میں جا کر واپس سے جپا تیرتھ
ہو کر پھر پیپلی بن ہو کر پشپ ہر کی جا ترا کرین -

सू. रूपस्थानंपुनर्गत्वास्वर्णस्थानंततोब्रजेत् ।

विल्ववतीहरिनेत्रीगच्छेत्कूपेश्वरंपुनः ॥३२॥

दी. रूपस्थानहिजायकेचलैस्वर्णस्थान।विल्व

तीतबहरिनेत्रीतवकूपेश्वरजान ॥ ३२ ॥

दी. वहाँ से रूपस्थान जाकर फिर स्वर्ण स्थान जाय तब

دیلوہی ہو کر ہرینے کی یاچا کر رُوپے شہر کی یاچا کرے ۳۲
 ۳۲ - وہاں سے رُوپے استخان کو جا کر پھر سوزن استخان کو جاوے
 وہاں سے بلوچی ہو کر ہرینے کی جا کر لوہے کی جا کر کریں۔

م۔ میثیلے شہر سے رُوپے گتیا بن گرام ڈومالہ ۔ پونہ
 سیہے شہر گتیا ترہ بلی سپیپی لہی ॥ ۳۳ ॥

دو۔ میثیلے شہر سے رُوپے گتیا بن گرام ڈومالہ جاہی ۔
 سیہے شہر ترہ بلی تپونہ سپیپی لہی ماہی ۳۳

تہ۔ وہاں سے میثیلے شہر جا کر بن گرام فیر ڈومالہ
 جاوے وہاں سے سیہے شہر فیر ترہ بلی فیر پیپی لہی بن
 جو جاوے ॥ ۳۳ ॥

۳۳ - وہاں سے میثیلے شہر جا کر بن گرام پھر ڈومالہ پھر سوزن پھر تری
 پھر پٹی بن کو جاوے۔

م۔ سینھالیکا مٹھو گتیا پونہ تپنا لہی م ۔
 سینھالیکا گتیا تپنا لہی تپنا لہی ۳۴ ॥

دو۔ جاوے تپنا لہی سینھالیکا تپنا لہی شہر سے جاوے ۔ سینھ
 لیکا کو جاوے کے راج مہن ٹھراہی ۳۴ ॥

تہ۔ وہاں سے سینھالیکا جا کر فیر تپنا لہی شہر سے جا کر
 سینھالیکا جا کر وہاں سے راج مہن کی یاچا کرے ۳۴ ॥

۳۴ - وہاں سے سینھالیکا پھر تپنا لہی پھر سوزن پھر پٹی بن کو جاوے
 راج مہن کی جاوے کریں۔

م۔ سونہ کی مٹھو گتیا مٹھو گتیا مٹھو گتیا مٹھو گتیا مٹھو گتیا

मंगलवतीविरजापापहारिणीम् ॥ ३५ ॥

दो. जायमृत्स्वनीपुनिचलैविषहरकोमतिमान ।

मंगलारुमंगलवतीविरजाग्रहरजान ॥ ३५ ॥

श्री. वहाँ से मृत्स्वनी तब विषहर जाकर तब मंगला और
मंगलवती होकर विरजा पापहारिणी की यात्रा करे ॥ ३५ ॥

३५ - وہاں سے مِرتسوئی ہو کر کبھی سر جا کر سنگلا اور سنگل وتی ہو کر برج
جو پاپوں کی ہرنے والی ہے وہاں کی جا ترا کریں -

मू. बलबर्द्धकंभावेग्यांयामुनीजीवपुत्रिकाम् । ए
वंवैमिथिलोपान्तेवसनग्रामेष्वनन्यधीः ॥ ३६ ॥

दो. बलबर्द्धकमहियामुनीजीवपुत्रिकाजाय । या
विधिमिथिलापुरनिकटवसहिग्राममुनिराय ३६

श्री. फिर वहाँ से बलबर्द्धिनी फिर यामुनी होकर जीवपु
त्रिका को जाय हे मुनि मिथिलापुरी के समीप चारों ओ
र ये सब गाँव हैं जो हमने वर्णन किया है ॥ ३६ ॥

३६ - وہاں سے بل بروضی جا کر پھر جامنی ہو کر جو پیٹر کا جو جا میں ہے
یہ سب گائون جو میں نے کہے ہیں مہلا پری کے قریب قریب چاروں طرف آباد ہیں

मू. नयन्कालंरूपापात्रःविचरन्साधकोत्तमः । सं
न्यस्तानांविधिरयंमुनीनांवीतरागिणाम् ॥ ३७ ॥

दो. रूपापात्रसाधकपरमविचरतक्षेपहिकाल । य
हविधियोगीमुनिनहितजेविरक्तजगजाल ३७

श्री. यह यात्रा विधि मिथिला पुरी की संन्यासियों के

واستے چور جو موہ رہیت ویبب سے ویرکت منیلایا
ہیں انکے واسطے کھا ہے ڈس پکار بگوان کے کپا پا
و لوگ انم ساڈک سدا میثیلا پوری میں ویرتے ڈ
ا کالکسپ کرتے ہیں ॥ ۳۷ ॥

۳۷ - یہ مہتملا پری کی جاترا ان سنیاسیون اور من لوگون کے واسطے کی ہے
جو کہ دنیاوی ہوا و ہوس سے علیحدہ ہیں بھگوان کے کرپا پاتر (بھکت)
انم ساڈھک لوگون کو ہمیشہ مہتملا پری میں بود باش اختیار کر کے
خوشی و خرمی کے ساتھ زندگی بسر کرنا چاہیے۔

۳۷. نیب سے تپو رنج کتا وان پری تھوا ک۔

ویت ॥ ۳۷ ॥ ۳۷ ॥ ۳۷ ॥ ۳۷ ॥ ۳۷ ॥

۳۷. وان پری تھوا کو کونر کور کوری کر و اس۔

ھا و س اڈیا ی ی ہر دے و سون کتا تھاس ۳۷

۳۷. اڈیا وان پری تھوا کور ہو کوری بنا کر

نیب اس کور ॥ ۳۷ ॥

۳۸ - بان پرستہ ہو یا کولی ہو گئی بنا کر رہے۔

इति श्री बृहद्दिष्णु पुरा

एविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ८

۳۷. श्री میثیلا ماہاتم کو دہان و اڈیا ی

دے و سون بان کی یو کی کا یو کتا سہا ی

मू. पराशर उवाच ॥ दूदं समासतः प्रोक्तं
तव प्रीत्या मया धुना । माहात्म्यं मिथिला
याश्च कैश्चिद्वक्तुं न शक्यते ॥ १ ॥ १ ॥

दो. मिथिलाको माहात्म्यघतनहिंको उवर्णत वार।
मैतव प्रीतिविलोकि कच्छुभाषे उंमतिअनुसारथ।

टी. पराशरजी फिर बोले कि हे मुनि मिथिला का मा-
हात्म्य सम्पूर्ण कोई नहीं कह सक्ता है आप की प्रीति
विचार कर इस समय संक्षेप से हमने कहा है ॥१॥

بريديشن پيران کا اکیسواں اویہیاے

۱- پراشری کہتے ہیں کہ یہ مین مستحلاً کا ہاتھ اول سے آخر تک کوئی نہیں
کہہ سکتا ہے مین نے آپکی محبت پر خیال کر کے تھوڑا سا کہہ دیا۔

मू. रामतुष्टिकरीलोके सर्वकामसमृद्धिनी । मि-
थिलासर्वतःपुण्यासुराणामपि दुर्लभा ॥ २ ॥

दो. रामतुष्टिकरिलोकमहदेन वारिसबकाम। मि-
थिलापुण्यासर्वतः देवनदुर्लभठाम ॥ २ ॥

टी. सम्पूर्ण कामना की देने वाली चौर लोक में श्री राम
चन्द्रजी की तुष्टि करने वाली देवताओंको भी दुर्लभ यह
मिथिला सरा पुण्या है ॥२॥

۲- یہ مستحلاً پر مئی سب مرادوں کی ویسے والی اور شری راجپندرجی کو
خوش کرنی والی اور دیوتوں کو بھی دلچسپ ہے۔

मू. प्रयागे बहुवर्षाणिकाश्यां वा बहुवार्षिकं । नै
मिषे वा कुरुक्षेत्रे जन्मा वधिवसेन्नरः ॥ ३ ॥

दो. सम्बत्समितप्रयागजे काशीवर्षे अनेक । नै
मिषे वा कुरुक्षेत्रे नरवसे जन्मभरिटेक ॥ ३ ॥

टी. अनेक वर्ष प्रयाग में अथवा काशी में निवास करे
अथवा नैमिषारण्य अथवा कुरुक्षेत्र में जन्म पर्यन्त
निवास करे ॥ ३ ॥

३ - اگر بہت سال تک کاشی یا پراگ میں رہی یا نیم ساریہ یا کچھتیمین عمر بھر رہا۔

मू. अवन्त्यां विष्णुकाञ्चीञ्च नारायणाश्रमे
वेंकटाद्री महापीठे गङ्गासागरसङ्गमे ॥ ४ ॥

दो. विष्णुकाञ्चिअवन्तिकानरनायणाधाम । वें
कटादिमह पीठमें गङ्गासागरसङ्गम ॥ ४ ॥

टी. अथवा विष्णुकाञ्ची में अथवा अवन्ती में अथवा
वद्री नारायण में अथवा वेंकटाद्री महापीठ में अथवा
गंगा सागर के संगम में ॥ ४ ॥

४ - یا بشن کابچی میں یا اونتی میں یا بدری نارین میں یا بنگلادری ہا
پیٹھ میں یا گنگا ساگر کے سنگم میں۔

मू. मुक्तिक्षेत्रे हरिद्वारे ब्रह्मावर्त्तगयाशिरि । आ
जन्मनिवसेद्यस्तु परिक्रामेद्भुवन्तथा ॥ ५ ॥

दो. ब्रह्मावर्त्तगयाशिरहिं मुक्तिक्षेत्रे हरिद्वार । क
रहिं वासजे जन्मभरि महिपरिकर्माधार ॥ ५ ॥

शी. अथवा मुक्तिक्षेत्र में अथवा हरिद्वार में अथवा
ब्रह्मावर्त में अथवा गया में जो जन्म भर निवास क-
रै अथवा जो सब पृथ्वी की परिक्रमा करै ॥ ५ ॥

५- یا مکت چھتر یا ہر دواریا برہما ورت یا گیا جی میں عمر بھر قیام کرے
یا سب پر پھوسی کی پر گز ما کرے -

मू. गवांलक्षप्रदानाचशतग्रामप्रदायकः। सुव-
र्णमेरुदाताचरत्नाकरप्रदायकः ॥ ६ ॥

दो. गायलक्षविधिदानजेकरैग्रामशतदान। मे-
रुस्वर्णकेदेतजेरत्नाकरप्रदान ॥ ६ ॥

शी. और जो विधिपूर्वक लक्ष गो दान करै और जो सै-
कड़ों गाँव दान करै अथवा सोने के पहाड़ दान करै
और जो रत्न के खानि दान करै ॥ ६ ॥

५- یا بدہ کے موافق ایک لاکھ گاو دان کرے یا سیکڑوں گاون
دان کرے یا سونے کے پہاڑ یا رتن کے کھان دان کرے -
॥ ६ ॥

मू. याजकः सर्वयज्ञानां स्वाध्यायनिरतस्तथा
रुच्छ्रुतिकृच्छ्रकर्त्ता च प्राजापत्येन वर्त्तकः ॥ ७ ॥

दो. याजकजेसबयज्ञकेनिरतसदास्वाध्याय। क-
रैरुच्छ्रुतिकृच्छ्रपुनिप्राजापत्यसदाय ॥ ७ ॥

शी. और जो सब यज्ञ करता है और जो सदा स्वाध्या-
य (अर्थात् वेद पाठ) में प्रवृत्त रहता है और रुच्छ्र अति रुच्छ्र
अर्थात् अति कष्ट करके व्रतादिक करता है और जो

سدا پراجاپتت برت کرتا ہے ॥ ۱۷ ॥
 ۷۔ یا جو سب طرح کی جگ کرتا ہے یا جو ہمیشہ وید پڑھنے یا پڑھانے
 میں مصروف رہتا ہے یا جو تکلیفیں اٹھا کر کر پھر برت اور ات کر پھر برت
 یا جو پر اجا پتت برت ہمیشہ کرتا ہے۔

۸۔ پاراکا دی برتت یوکتا چاندرا یانا ویرتتک: ۱ نیر
 رگنی شتیلانی چ پچھ گبھی ن ورتتک: ۱ ۱۷ ॥

۹۔ پاراکا دی برتت یوکتا چاندرا یانا س ویرتتک: ۱ ۱۷ ۱
 رینیرگنی شتیلانی چ پچھ گبھی ن ورتتک: ۱ ۱۷ ۱

۱۰۔ چور جو پاراکا برتت اچھا تھت اک بار بونن کرتا
 ہے چور جو سدا اچھنی سوا مین رت رھتا ہے جسے اچھ
 گنی ہوی کھتے ہین چور جو چاندرا یانا برت کرتا ہے
 چور جو نیرگنی اچھا تھت کبھی اچھنی کو نھیں بھتا ہے
 چور جو تیلانی اچھا تھت سدا تیل بونن کرتا ہے
 چور جو نیتھ پچھ گبھی سے سنان کرتا ہے ۱ ۱۷ ۱

۱۱۔ یا جو پر اک برت (ایک بار بونن) کرتا ہے یا جو چاندرا یانا برت کرتا ہے یا جو اگن کی سیوا
 میں ہمیشہ مصروف رہتا ہے جسے اگن ہوتری کہتے ہین یا جو کبھی اگن کو
 نہیں چھوتتا ہے یا جو ہمیشہ حل بھون کرتا ہے یا جو بیج گبھی (یعنی
 گھو کا دوہ اور گھو کا دہی اور گھو کا گھی اور گھو کا گوبر اور گھو کا موتر) سے اسنان کرتا ہے

۱۲۔ پناہاری جلاہاری نیراہار ستھے وچ ۱ ۱۷ ۱
 شایت روائی شی غی پچھ اچھنی سوا ک: ۱ ۱۷ ۱
 ۱۳۔ پناہاری جلاہاری نیراہار ستھے وچ ۱ ۱۷ ۱

ग्रीष्मकालपंचाग्नियुतगुहाशयनतरुवासिद

टी. और जो मनुष्य पत्र खाकर अथवा सदा जल ही पी कर रहते हैं अथवा निराहार ही रहते हैं और जो कन्दरा में शयन करते हैं और जो सदा वृक्ष के तले रहते हैं और जो ग्रीष्म काल में पंचाग्नि तापते हैं ॥ ६ ॥

4- या जो कुयी पत्थान चबाकर या चूरा पानी पी कर रहता है या जो नरार रहता है या जो कन्दरा (नैनी पहाड़ी कुहो) में रहता है या जो ग्रामों में पंचाग्नि तापता है -

मू. वर्षासुस्थंडिलावासीशिशिरसलिलेशयः। ३-

ईवाहुरशय्यश्चस्थाणुः कापालिकस्तथा १०-

टी. विनुछायावर्षारहेशिशिरमाहिंजलसोय। ३-

ईवाहुरशय्यारहितस्थाणुकपाली होय। १०।

टी. और जो वर्षा ऋतु में बिना छाया के रहते हैं और जो जडि में जल शयन करते हैं और जो ऊर्ध्ववाहु रहते हैं और जो अशय्या रहते हैं और जो सदा एक ही स्थान पर रहते हैं और जो कपाली अर्थात् बिना बख के रहते हैं ॥ १० ॥

10- या जो बरसात में मीदान में रहता है या जो मूसम सर्दी में पानी में रहता है या जो अपने हाथों अथवा पैरों में रहता है या जो बिना बिस्तर के खाली जमीन पर सुता है - या जो एक ही स्थान पर हमेशा रहता है या जो हमेशा नगानिनी बिस्तर के रहता है -

سू. ब्रह्मसत्रानुवर्त्तन्तत्त्वज्ञानैकचिन्तकः। यो-
गेष्वभिरतश्चैवदेवतार्चनतत्परः ॥ ११ ॥

दो. ब्रह्मयज्ञमेतत्तद्विन्दकतत्त्वज्ञान। योग
माहिरतसर्वदादेवार्चनसविधान ॥ ११ ॥

टी. और जो ब्रह्मयज्ञ में रत रहते हैं और जो तत्त्वज्ञान
के चिन्तक हैं और जो सदा योग में रत रहते हैं और जो
देवता पूजन में तत्पर रहते हैं ॥ ११ ॥

۱۱- یا جو ہمیشہ برہم جات میں مصروف رہتا ہے یا جو تو گویاں کے فوض
میں رہتا ہے یا جو ہمیشہ جوگ اٹھیاں یا دیوتا پوجن میں مصروف رہتا ہے۔

सू. पुरश्चर्यारतश्चैवहविष्याभीजितेन्द्रियः। नि-
रिवलैःसाधनैःस्वीयैर्बहुजन्मसमाज्जितैः ॥ १२ ॥

दो. पुरश्चर्यारतश्चशनहविपुनिजितेन्द्रितनखीन
साधनसकलप्रसूयबहुजन्मनिप्रजितपीन १२

टी. और जो पुरश्चरण में रत रहते हैं और जो सदा ह-
विष्यान् भोजन करते हैं और जो जितेन्द्री होकर रहते
हैं और जो अपना सम्पूर्ण साधन बहुत जन्म तक करते हैं ॥ १२ ॥

۱۲- یا جو پُرشچرن میں مصروف رہتا ہے یا جو ہمیشہ ہمیشہ (یعنی پاک چیز)
بھوجن کرتا ہے یا جو دنیاوی ہوا و ہوس سے علیحدہ یعنی اپنے حواس
پر ضابطہ و قیاد ہے یا جسے اپنی سب ساؤھنا کئی جنموں تک پوری کئی ہے۔

सू. महापुण्यातिरेकैश्चजन्मलब्धाचभारते।

मिथिलायानिवासस्यनराःसंयांतियोग्यताम् १३

दो. महापुण्य जति एक नर भरत भूमि में आय। मि

थिला वास करत सहज सर्व किये फल पाय १

श्री. और जो कोई जति पुण्य किये हुए हैं वे लोग भरत
खाण्ड में जन्म पाकर जो एक बार मिथिला पुरी में वास
करें तो जितने साधन ऊपर कह आये हैं उनके अनु-
सार फल पाते हैं ॥ १३ ॥

१३- یا جنے بہت پُنج کیے ہیں۔ جو لوگ بھرت کھنڈ میں پیدا ہو کر ایک تہہ بھی
میتھلا پُری میں رہنا اختیار کریں گے تو جتنے ساधन اوپر کہے گئے ہیں ان کے سرتوں میں

मू. यद्वर्द्धश्रावयेन्नित्यं श्रुत्वा च हृदि धारयेत्। सी

तारामौ हृदि न्यस्य सरामं प्राप्नुयाद्भुवं ॥ १४ ॥

दो. जो यह सुन हि सुना बही धारहि जो हिय माहि। ब

सहिं राम सियता सु उर राम प्राप्नुवताहि ॥ १४ ॥

श्री. और जो लोग इस मिथिला माहात्म्य को सुनते या

सुनाते या अपने हृदय में धारण करते हैं उनके हृद-

य में श्री रामचन्द्रजी निवास करते हैं और वह मनु-

ष्य अवश्य रामचन्द्रजी में प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

१४- اور جو کوئی اس میتھلا ماہاتم کی کتھا سنتا یا سنا تا ہے یا اپنے دل میں

اسکو نقش کر لیتا ہے اسکے سینہ میں شری رام چندر جی قیام کرتے ہیں

اور وہ اسی بیشک شری رام چندر جی کو پاتا ہے۔

मू. प्रीयन्ते पितरस्तस्य प्रीयन्ते तस्य देवताः।

देवानां मान्यतां लब्ध्वा सर्वान् कामान्

۱۲۴ ॥ ۱۲۵ ॥ ۱۲۶ ॥ ۱۲۷ ॥
 دو۔ تپتہوتتا کے پیتر دے تپتہوتتہ سوجتہ ۔ لہے
 مان سب کچھ مار مے سب کچھ کامنا لیت ۱۲۴ ॥
 سی۔ چہرہ اس مٹھ کے دے تپتہوتتہ چہرہ پیتر سب کچھ
 تپتہوتتہ ہوتے ہن چہرہ دے تپتہوتتہ مے اس مٹھ کا ما
 نہ ہوتا ہے چہرہ اسکی سب کامنا پوری ہوتی ہن ۱۲۵ ॥

इति श्री बृहद्विष्णु पु
 राणे पराशर मैत्रेय स
 म्वादे मिथिला माहा
 त्मे एक विंशोऽध्यायः
 ॥ २१ ॥ ६

समाप्तोज्यं ग्रन्थः ॥

۱۵۔ اور اس آدمی کے دیوتا اور پیتر وغیرہ سب خوش رہتے ہن اور
 دیوتوں مین اس آدمی کی عزت اور تعظیم زیادہ ہوتی ہے اور اسکی تمام
 مرادین حاصل ہوتی ہن۔

श्लोक

कुजे कार्तिके कृष्ण हेरम्ब तिथ्यां समे-
 ऽष्टाग्निखेटेन्दुभिर्युज्य कार्षीत् । सुदी
 कामिमां भाषया देव नन्दो नृपस्यान्वये
 नीतिनैपुण्यनीतः ॥१॥ १॥ १॥ १॥

दोहा

वसुगुणनिधिप्रशि युक्तसमगणप-
 तितिथिकुजवार । देवनन्दभाषाकि
 यो तत्त्वयुक्तसविचार ॥१॥ १॥ १॥ १॥

टी. समाप्तिग्रन्थकी सम्बत् १९३८ कार्तिक वदी चतुर्थी
 मंगल के दिन हुई ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

ترجمہ اس گزشتہ کا سبب ۱۹۳۸ء کا ایک بدی چوتھم منگل کے دن ختم ہوا

میتھلا ماہاत्म समाप्ति ہوا

تعلیم سوامی دیال

۱۹۶۴ء عیسوی



